श्री कालीवीर
कालीवीर चालीसा सहित

कुलदेवता

श्री कालीवीर

कालीवीर चालीसा सहित

डॉ० ओम गोस्वामी
अरविंद गोस्वामी

प्रकाशक
भूषण बुक डिपो
जैन बाजार, जम्मू एण्ड कश्मीर
फोन : 7006697501

Researched under the title
"ORAL HISTORY OF DUGGAR"
Language - HINDI
Author-OM GOSWAMI
ARVIND GOSWAMI
181-PAHARIAN STREET
Jammu Tawi-180001
(M) 94192-03453

KULDEVATA
SHRI KALIVEER

KALIVEER CHALISA SAHIT

A Study Based upon
Extensive Field Survey
Folk Ballads, Fokl Stories,
Folk Beliefs, Rituals & Customs
connected with
The Tutelary Deity of Millions
"SHRI KALIVEER"

सूचना - 1. पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं।
2. डुग्गर के देवी-देवताओं तथा संस्कृति विषयक अधिक जानकारी के लिए लेखक-द्वय से निस्संकोच संपर्क करें।
3. इस पुस्तक के विषय में अपने विचार और सुझाव ऊपर लिखे पते पर भेजें
4. आपके प्रश्नों और जिज्ञासाओं का स्वागत किया जाएगा।

Price : 80/- मूल्य : 80.00

© - : लेखक
प्रकाशक : भूषण बुक डिपो, जैन बाजार, जम्मू एण्ड कश्मीर
संस्करण : 2015
प्रतियां : एक हज़ार

कलियुग के उद्धारक
श्री कालीवीर जी महाराज

कुलदेव श्री कालीवीर :

कालीवीर जम्मू प्रांत के सुप्रसिद्ध लोक-देवता माने गये हैं। जम्मू के अतिरिक्त इनकी मान्यता का क्षेत्र बहुत व्यापक है। उत्तर भारत के हिमाचल, पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा तथा गुजरात राज्य में इनके असंख्य भक्त हैं। यह देवता अन्य कुलदेवों से इस लिहाज़ से विशेष हैं कि दूसरे कुलदेवों को जहां किसी खास बिरादरी या उपजाति की सीमित संख्या द्वारा माना जाता है, वहीं कालीवीर को हिन्दुओं के तमाम वर्णों, वर्गों, जातियों, उप-जातियों तथा शाखा-प्रशाखाओं द्वारा पूजा और अराधा जाता है। वस्तुतः कालीवीर भगवान् शेषनाग का अवतार है। त्रेतायुग में वे श्री राम के अनुज लक्ष्मण और द्वापर में श्री कृष्ण के अग्रज बलराम के रूप में प्रकट हुए। लोक-विश्वास के अनुसार कलियुग में वे 'कल्कि' के रूप में अवतरित हुए और जनमानस ने कल्कि के प्रथम वीर अवतरण को कालीवीर के नाम से जाना।

कालीवीर एक कर्मवीर योद्धा हैं। दुखियों का उद्धार करने हेतु वे भगवान् शिव की इच्छा से देवलोक से धरती पर आए। उनका वाहन घोड़ा है। उनके घोड़ों के तीन रंग प्रसिद्ध हैं। अवतरण की वेला में उनके वाहन का रंग श्वेत

है जो सत्वगुण का प्रतीक है। राजसी दौर अथवा मंत्रित्वकाल में उनके पास 'नीली' नामक घोड़ी थी। यह वर्ण रजोगुण को दर्शाता है। युद्धकाल में अथवा दुष्ट दलन अभियान में काले घोड़े की सवारी करते हुए वे काले वस्त्र, काले शस्त्र और काले जूते पहनते हैं। यह रंग तमोगुण का प्रतीक है। इन तीनों गुणों का अद्‌भुत संगम श्री कालीवीर में पाया जाता है। इसी अकूत गुण राशि के वशीभूत वे असंभव को संभव कर देते हैं। अपने भक्तों पर तुरंत रीझ कर उन्हें वरदान देते हैं। संत स्वभाव के लोगों के प्रति उनकी दया और कृपा बनी रहती है। अपनी अनदेखी होने पर वे कोप करते हैं, किन्तु प्रसन्न होने पर तुरंत मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं।

कालीवीर के भक्तों पर यदि कोई जाने-अनजाने में जादू-टोना या भूत-प्रेत अथवा डायन-चुड़ैल का अभिचार करता है तो ऐसे गलत कर्म के एवज़ में उनका चलाया गया जादू उन्हीं पर गिरता है–ऐसा जन-मानस का प्रबल विश्वास है। इस प्रकार अपने भक्तों की रक्षा श्री कालीवीर ढाल बन कर करते हैं। लोगों का उन पर अटल विश्वास है। इसीलिए कालीवीर जी को हथेली पर सरसों जमाने वाला देवता अथवा असंभव को संभव करने वाला चमत्कारी देव कहा गया है। कलियुग के सागर में वे ही श्रद्धालु जनों का बेड़ा पार लगाएंगे– जनमानस का प्रबल विश्वास है।

श्री कालीवीर और राजा मंडलीक :

श्री कालीवीर के नाम के साथ राजा मंडलीक का नाम भी लिया जाता है। जीवन के गूढ़ रहस्यों, नियमों तथा सिद्धांतों से पर्दा हटाने के लिए कालीवीर जी मंत्री की भूमिका में राजा मंडलीक को परामर्श देते दिखाई पड़ते हैं। श्री कालीवीर भगवान् श्री कृष्ण की भांति कर्म और फल की व्याख्या करते हुए अनेक विपत्तियों में उनकी सहायता करते हैं। जैसे श्री कृष्ण ने कौन्तेय अर्जुन का सारथि बनकर उनका मार्ग दर्शन किया और उन्हें युद्ध में विजयी बनाया, उसी प्रकार से श्री कालीवीर पग-पग पर राजा मंडलीक की शंकाओं और दुर्बलताओं का निराकरण करते हैं। स्वयं सर्वशक्तिवान और सर्वगुण सम्पन्न होते हुए भी वे राजा मंडलीक के माध्यम से मानव के जीवन पथ को प्रशस्त करते दिखलाई पड़ते हैं।

श्री कालीवीर के अन्य नाम :

कुल देवता को जम्मू प्रान्त में 'बावा' भी कहा जाता है। इसलिए कहीं इन्हें बावा कालीवीर तो कहीं 'कालवीर', 'कालूवीर' अथवा 'कौल वीर' तो बहुत से स्थानों पर इनकी प्रसिद्धि 'केलूवीर' या 'कैलूवीर' के रूप में भी है। पहाड़ों में गद्दी समुदाय के लोग इन्हें 'केलंग वीर' के नाम से पूजते हैं। किन्तु, कालीवीर का पुराण प्रसिद्ध नाम 'कल्कि वीर' सर्वज्ञात ही है।

श्री कालीवीर के प्रसिद्ध स्थल :

वैसे तो श्री कालीवीर अपने वचन के अनुरूप भक्तों पर भीर पड़ने पर स्वयं प्रत्येक गांव या जनपद में प्रकट होकर उनकी सहायता करते हैं। इसीलिए उनके स्थानों एवं गद्दियों की संख्या अनन्त है। जम्मू प्रान्त में कुछ प्रसिद्ध और प्राचीन स्थान यों हैं : गांव 'त्रोन' (तहसील डोडा) भलेसा, चिन्ता (तहसील भद्रवाह), फडैल (बुल्हालता), मच्छीभौन गुफा (तहसील सुन्दरबनी), टेढ़ा जंडेयाला (स्यालकोट-अब पाकिस्तान), जसरोटा (तहसील हीरानगर), परगवाल (तहसील अखनूर), सुराड़ी (तहसील बिलावर), जगटी (तहसील जम्मू) तथा कटरा, रियासी, उधमपुर, रामनगर, सांबा, कठुआ आदि।

पूजा विधि :

श्री कालीवीर ऐसे देवता हैं जिनकी पूजा घर की चारदीवारी में हो सकती है। किन्तु, पूजा का स्थान अलग और पवित्र होना चाहिए। कमरा अन्धेरा नहीं हो। हवा और प्राकृतिक प्रकाश का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। श्री कालीवीर के स्थान में चमड़े और दुर्गंध वाली वस्तुओं का प्रवेश निषिद्ध है। पूजा-स्थल की नित्य सफाई होनी चाहिए। क्योंकि देवता सफाई पसंद होते हैं। इसलिए, उनके स्थान को सुन्दर रखना चाहिए। देवता सुगंध में वास करते हैं। इसलिए झुंडों को शुद्ध जल से स्नान करा कर गूगल अथवा वनस्पति धूप देना चाहिए। फूल तथा फूलमालाएं भी

अर्पित करनी चाहिएं। गुट्टा, मोतिया एवं चमेली के फूल इन्हें विशेष प्रिय हैं। श्री कालीवीर वृक्षों, फूलों तथा फलों को विशेष पसंद करते हैं। इसलिए, इनके नाम से बनी, बगीचा तथा फुलवाड़ी का निर्माण भी किया जा सकता है। श्री कालीवीर जी की पूजा में माता कालिका, माता म'ल्ल, माता काशला, माता बाशला तथा गुरु गोरखनाथ और अपने कुल की देवियों, सतियों तथा शहीदों आदि का नाम स्मरण पुण्यकारक होता है। देव निमित्त किये जाने वाले यज्ञ तथा प्रीति-भोज में से प्रथम मंडले इन्हीं के नाम से निकाले जाते हैं। यदि कोई अन्य देवी-देवता पूजा-स्थल में स्थापित है तो उनके मंडले भी अवश्यमेव निकाले जाते हैं।

पूजा में धूप, दीप, जोत के अतिरिक्त प्रसाद में मीठा-रूट्ट, खीर, हलवा, रितुफल तथा मिठाई चढ़ाई जाती है। रुट्ट योद्धाओं तथा नव-नाथों का प्रिय खाद्य है। रुट्ट को श्रद्धा सहित गेहूँ के आटे में गुड़, सौंफ, घी तथा सूखे मेवे डाल कर बनाया जाना चाहिए। रविवार और वीरवार कालीवीर की पूजा के वार माने गये हैं। प्रातः पूजा के उपरान्त चरणामृत ग्रहण करके जो व्यक्ति घर से विशेष काम के लिए निकलता है, वह महाराज कालीवीर के आशीर्वाद का पात्र बनता है। कुलदेव का स्मरण करते समय मन को निर्विकार रखें। अपने कष्ट और चिन्ताएं भूल कर शुद्ध मन से उनका स्मरण करें।

चूंकि, कुल–आराध्य श्री कालीवीर इष्ट देव हैं, इसलिए उनके स्थान पर महिला वर्ग का नंगे सिर अथवा अशुद्ध अवस्था

में आना मना है। उनकी प्रसन्नता पाने के लिए महिलाएं उन्हें बड़े बावा जी, कुलदेव जी तथा महाराज जी भी कहती हैं। किन्तु, यह बात स्पष्ट है कि उनका नाम (श्री कालीवीर) न लेने की धारणा सही नहीं है। कारण कि जैसे हम भगवान् ब्रह्मा, विष्णु, महेश का नाम लेते हैं तथा गणेश, हनुमान, श्री राम और श्री कृष्ण का नामोच्चार भी करते हैं– इसमें किसी प्रकार का दोष नहीं देखा गया। इसी भान्ति कालीवीर जो कि भगवान् शेषनाग का अवतार हैं, बारंबार उनका नाम लेने से पाप कटते हैं और कर्म–सिद्धि तथा मुक्ति की प्राप्ति सरल होती है। उनके नाम की माला जपने से अकल्पनीय लाभ पहुंचने की कथाएं जन-जन में प्रचलित हैं।

जो भक्तजन निरंतर उनकी मानसिक पूजा करते हैं और महामन्त्र ''ओऽम् श्री कालीवीराय नमः'' का जाप करते हैं उनकी तमाम शुद्ध भावनाएं पूर्ण होती हैं। देव कृपा के लिए सत्य एवं निष्ठापूर्वक निःस्वार्थ पूजा करनी चाहिए। मेरा जो कुछ है सब तेरा है, इसलिए तेरा तुझ को अर्पित– इस भाव से की गई पूजा-अर्चना उत्तम मानी गई है। जब सब कुछ इष्ट तत्व का है तो भक्तजनों की रक्षा, उनके विकास तथा मनोसिद्ध का दायित्व देवता का हुआ। विनीत तथा साफ हृदय के भक्तों पर श्री कालीवीर की अनुकम्पा रहती ही है।

और क्या करें ?

- **श्री कालीवीर के चिन्हों की स्थापना वाला स्थान ज़मीन से ऊँचा होना चाहिए !**

※ चौकियों पर रखे 'झुंडों' के नीचे तथा ऊपर चढ़ाये जाने वाले कपड़े का रंग लाल, काला और सब्ज़ नहीं होना चाहिए। इन्हें प्याज़ी (गुलाबी) या पीले रंग के वस्त्र चढ़ाए जाते हैं।

※ स्त्री वर्ग 'झुंडों' को स्नान न कराए। न ही इनके अस्त्र-शस्त्र या चिन्हों का स्पर्श करें ।

※ पूजा स्थल का निर्माण इस प्रकार से करें कि किसी व्यक्ति की छाया वासक-स्थल, झुंडों अथवा अन्य निशानियों पर नहीं पड़े।

※ प्रसाद झुंडों पर न रखें। किसी वस्तु को चख कर चढ़ाना वर्जित है।

※ मूतक (मरणाशोच) तथा सूतक (जन्माशोच) के दिनों में कुलदेव की पूजा न करें।

※ पूजा-अर्चना से पूर्व प्रातः कुलदेव श्री कालीवीर जी की निशानियों जैसे झुंडे, छड़ी आदि की हत्थी या मुष्टि पर तिलक लगाएं।

※ घर में श्री कालीवीर के चित्र, पुस्तक अथवा चिन्हों को चारपाई पर न रखें। च्त्रि आदि फट जाने पर अथवा मूर्ति के खंडित होने पर इन्हें 'नदी जल में प्रवाहित करें, कूड़ेदान में न फेंके।

※ घर में कुलदेव कालीवीर जी का चित्र, कलेंडर आदि लगाने में कोई दोष नहीं है। इनके चित्र के दर्शन मात्र से हृदय शुद्ध और निर्विकार हो जाता है। ईश–दर्शन में पुरुष और नारी सब का कल्याण निश्चित है।

※ देवी-देवताओं पर चढ़ाए गए पुष्प आदि प्रतिदिन बदलें। बासी फूलों को इकट्‌ठा करके नदी जल में प्रवाह दें।

विशेष दिन :-

कुलदेव की पूजा-अर्चना प्रतिदिन की जानी चाहिए। परंतु वर्ष में दो दिन विशेष माने गए हैं। ये हैं -"गुग्गा नवमी" और "शरद पूर्णिमा" जिसे जम्मू में 'झिड़ी आली पुन्नेआ' कहा जाता है। प्रत्येक बिरादरी वर्ष में दो बार अपनी-अपनी मेल भी कर सकती है। कालीवीर स्थल पर 'खारके' और 'जातरें' देने का अनुष्ठान भी किया जाता है।

श्री कालीवीर का बासक बाँधने की संक्षिप्त विधि*

जैसे-जैसे गाँवों और शहरों में समृद्धि आ रही है वैसे-वैसे लोग अपने देवी-देवताओं के प्रति सचेत होते जा रहे हैं। कालीवीर जी के पुराने थानों के अलावा कुलदेव के नये-नये थान भी स्थापित किए जा रहे है। नये थानों की स्थापना के पीछे मुख्य कारण यह हैं -

1. परिवारों के फूलने-बढ़ने से बहुत से लोग अपने गाँवों, कसबों एवं शहरों से अलग-अलग जगहों पर जाकर बस गए हैं। नये स्थान पर कुलदेव के देव स्थान की आवश्यकता से नये-नये थान बनते हैं।
2. जो परिवार अपने कुलदेव के प्रति अपने कर्त्तव्य को भुला चुके हैं, उनकी पकड़ होने पर वे देवता की शरण

---

* *श्री कालीवीर और अन्य लोक-देवों का वासक बांधने की सम्पूर्ण विधि के लिए देखें पुस्तक—"डुग्गर के लोक देवता।"*

ढूढ़ते हैं। पकड़ का अर्थ है सांसारिक जीवन में ऐसी दैविक बाधाएं जो कष्ट देती हैं।

3. कई लोगों द्वारा अपनी मान्यता कराने के उद्देश्य से भी कालीवीर उनके परिवारों में अपने चमत्कार दिखला कर उनके द्वारा पुजते हैं।

कुलदेव कालीवीर का नया थान बनाने के लिए विशेष नियमों का पालन किया जाता हैं, जिन्हें मर्यादा कहा जाता है।

मुख्य मर्यादाएं —

1. बास/बासक रविवार/ऐतवार को रखना चाहिए।
2. यह दिन खिला हुआ होना चाहिए - अर्थात् बादल छाए हुए न हों।
3. पंचक/परसोन न हों।
4. देवता का वास पीछे वाले कमरे या 'अंदरोठी में नहीं बाँधा जाता। देवता का वास अक्सर पहले सामने कमरे अर्थात् पसार में बाँधने की परंपरा है। इसका यह कारण बतलाया जाता है कि चूंकि देवता लोग आते-जाते रहते हैं, इसलिए अंदरोठी में वास रहने से उन्हें रुकावट आती है। इसके अलावा यदि अंदरोठी में वास हो तो उसे शयन कक्ष के तौर पर प्रयोग में नहीं लाया जाता। क्योंकि ऐसा करने पर कई बारी वहाँ सोने वाला व्यक्ति चारपाई से नीचे गिरता है।
5. वास का मुहूर्त्त पंडित से लिया जाता है।

6. वास ऐसी जगह इस ढंग से बाँधा जाना चाहिए जिससे पूजा करने वालों की परछाइयां वास-स्थल पर न पड़ें।
7. वास वाले कमरे में खुली जगह होनी चाहिए ताकि स्त्री-पुरुष अलग-अलग बैठ सकें।

वास के लिए वांछित सामग्री —

1. मालती के फूल
2. बासमती (धान/मुंजी)
3. पाँच अन्य अनाज जैसे-जौ, काले माश, मक्की दे दाने, कनक।
4. धातु-चाँदी/ताँबा के टुक्क।
5. कूजा मिट्टी का तथा ढक्कन।
6. पंच अमृत—दूध, दही, शहद, शक्कर, तुलसी दल।
7. पाँच गव्य—दूध, दही, घी, गोबर, गूत्र का मिश्रण

वास के प्रकार—

1. दीवार में
2. धरा में
3. लकड़ी का लटकन—इसे चनैह्नी इलाके में थढ़ा भी कहा जाता है। इसे किसी ऊंची जगह या ताकचे में रखा जा सकता है। इसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाने की सुविधा रहती है।

जगह का चयन— सब से पहले "नल्ली" लगवाई जाती है। किसी सिद्ध या सूध व्यक्ति के हाथ में सोंटा पकड़ा

कर चेल्ला उसके हाथ के धूप की सुगंध देता है, जिससे सोंटा पकड़े व्यक्ति चलना शुरु कर देता है। चलते-चलते वह ऐसी जगह आकर रुक जाता है जहाँ देवता बसना चाहता है। चेल्ला या दोआला जान लेता है कि यह जगह ठीक है। यह स्थान अकसर पसार कहे जाते बरामदे में होती है।

इस तरह चुनी गई जगह गोबर का चौक डाला जाता है। यदि लकड़ी का थढ़ा हो तो इस चौके वाली जगह पर रखा जाता है, अन्यथा इसे ताकचे में रखते हैं।

जिस जगह वास बाँधना होता है वहाँ कूजा दबाने के लिए गड्ढा खोदा जाता है। तब चेला वास का मंत्र पढ़ते हुए कूजे में सामग्री की वस्तुएं डालकर इसे ढक्कन लगाकर बंद करता है, फिर इसे धरती में या दीवार में स्थापित करता है। अधिकतर लोग देवता का वास दीवार में रखवाते हैं। कारण कि ज़मीन में वासक दबा होने पर किसी रजस्वला स्त्री की परछाईं पड़ने का डर रहता है या कई बार बच्चों द्वारा इसे गंदा कर देने का अंदेशा होता है। यदि दीवार में वास बांधा गया हो तो परछाईं और अशौच का भय कम हो जाता है।

इस समय बड़े खुले पात्र (त्रांबड़ी) में सांकलें, झुंडे, फूल-माला, पुष्प रखे होते हैं। चेला सब से पहले वास को धूप की सुगंध देता है और चौकी की दशा में उने लग़ता है। उसके एक हाथ में झुंडा/सांकल या कूंढी पकड़ी रहती है। भार की दशा में वह बोलता चलता है– "देवता खुश है। वह यहाँ रहना चाहता है। इसका वास हो गया है। अब यह आप की रक्षा करेगा।"

वास बाँधने वाले दिन एक ब्राह्मण या 5 कन्याओं को जिमाया-पूजा जाता है। इस अवसर के लिए मीठा भोज बनाया जाता है। कुछ लोग इस दिन प्रीतिभोज भी करते हैं।

श्री कालीवीर की गगैह्ल- इस समय पर के तमाम लोग एकत्र होकर देवता के सामने प्रण करते हैं कि हम चार-चार वर्षों के अंतराल में आपके नाम की "गगैह्ल" निकाला करेंगे। गगैह्ल देवता के चिन्हों-यथा साँकलों, झुडों, कूंढी आदि की शोभा-यात्रा है जिसमें उस वंश, कुल या बिरादरी के अधिकाधिक लोग शामिल होते हैं। यह शोभा-यात्रा गाँव-गाँव में घूमती है, विशेषतया उन घरों में अवश्य ही जाती है जहाँ देवताओं की मंडलियां (पंज वीरियां) स्थापित हों। उन घरों से गुड़ चढ़ाया जाता है। कुछ लोग भी इन घरों से शोभा यात्रा में शामिल हो जाते हैं। जिस घर या गाँव में देव-स्थान न हो वहाँ देवता जाना पसंद नहीं करता। गगैह्ल यात्रा के दौरान रास्ते में पड़ने वाले जल स्रोतों पर देवता की साँकलों, झुंडों, कूंढी आदि को श्नान कराया जाता है। गगैह्ल के दौरान देवता को ज़मीन पर नहीं रखा जाता। देवता को जगह-जगह की सैर करवा कर घर लौट कर नीचे उतारते हैं। तब त्रांबड़ी में रखकर पाँचगव्य से नहलाते हैं। घर लौटने पर देवता के उसके निश्चित स्थान पर नहीं विराजते बल्कि धरा पर या त्रांबड़ी में रखा जाता है। पाँचगव्य श्नान के पश्चात् देवता को गंगाजल का स्नान देकर अपने स्थान पर प्रतिष्ठित किया जाता है।

रोट बनाकर इसे कच्चा धागा लपेट कर चेला (दोआला) देवता के आगे रखता है। गारड़ी कारक-गाथा गाता है। इस समय दुबारा चेले को भार पड़ता है और वह चौकी करता है। इस समय चेले के साथ और भी लोग भार की दशा में नाचते हैं। श्रद्धालु लोग अपने मन की जिज्ञासाएं भी वुझाते हैं। प्रश्नों के उत्तर भी चेला देता है। सायंकाल को यज्ञ (प्रीतिभोज) किया जाता है। लोगों का विश्वास है कि एक बार गुगैह्ल आयोजित कर देने पर देवता चार वर्ष तक घर एवं परिवार की रक्षा करेगा।
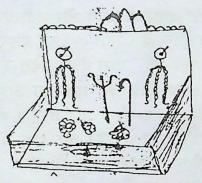
लकड़ी का थढ़ा (लटकन)

राजा कालीवीर की मंडी—

डोगरा महाराजा धार्मिक वृत्ति के राजा थे। जम्मू नरेश राजा रंजीतदेव तथा उनके पूर्ववर्ती राजाओं की तमाम धार्मिक निष्ठाओं का परिपालन महाराजा गुलाबसिंह और उनके वंशजों द्वारा किया गया। डोगरा राजाओं ने

विनम्रतावश अपने महलों के वृहद समूह को राजा कालीवीर का गढ़ मानकर इसे दरबारगढ़ नाम दिया। इसी वास्ते इसे "राजा कालीवीर दी मंडी" कहा जाता था। आम लोगों ने इसे "राजे दी मंडी" नाम दिया। यह राजा कोई और नहीं कुलदेवता कालीवीर ही हैं। डोगरी भाषा में मंडी का एक अर्थ देवता का दरबार भी है।

जम्मू में उर्दू-फारसी पढ़े हुए ऐमनाबादी कर्मचारियों की आमद के उपरांत "राजे दी मंडी" को "मंडी मुबारक" नाम मिला। वस्तुतः जिस मंडी में देवता कालीवीर को श्रद्धालुओं द्वारा बधाइयां चढ़ाने और मुबारक देने के धार्मिक समारोह आए दिन होते रहते थे—उसे बाहर से आए लोगों द्वारा "मंडी मुबारक" नाम देना उचित ही था।

महाराजा प्रताप सिंह को भूल का अहसास—

महाराजा प्रताप सिंह धार्मिक रूप से अति सहिष्णु और पूजा-पाठी राजा थे। इन तक एक अन्य लोक-देवता "राजा मंडलीक" के चेला सौल सिंह चिब की रिसाई बनी तो इन्होंने राज—महलों में इस देवता की पूजा भी प्रारंभ कर दी। कहा जाता है कि कालीवीर स्थल की देख-रेख का काम किसी पुजारी के सपुर्द कर दिया गया। महाराजा द्वारा मंडलीक की अधिक पूछ किए जाने और अपनी अनदेखी से खफा होकर कालीवीर ने चलित्री रूप दिखलाया।

महाराजा प्रताप सिंह के अधिकारों को अंग्रेजों द्वारा सीमित कर दिया गया। प्रशासन का व्यावहारिक अधिकार

बावा जित्तमल जी की प्राण रक्षा हेतु
प्रकट हुए श्री कालीवीर
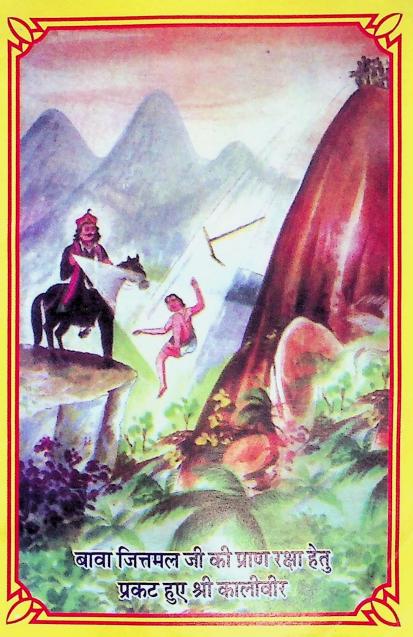
महाराजा के छोटे भाइयों राजा अमर सिंह और राजा राम सिंह के हाथों में चला आया जो कि राजा कालीवीर के उपासक थे। महाराजा प्रताप सिंह पर झूठे आरोप लगे। उन्हें रुसवाई सहन करनी पड़ी।

श्री कालीवीर की असीम शक्ति पर विश्वास रखने वालों का कहना है कि कालीवीर जी इतना और किसी बात से रुष्ट नहीं होते जितना अपने मानने वालों द्वारा खुद को भुला देने पर होते हैं। जिन परिवारों के पूर्वज सदियों पहले श्री कालीवीर की शरण में आंए थे उनमें से किसी द्वारा भुलाए जाने पर वे देर-सबेर उन्हें या उनके वंशजों को प्रताड़ित करते हैं। ऐसी दशा में रुष्ट कालीवीर को मनाना बेहद कठिन हो जाता है। उसी भूल का आभास होने पर महाराजा प्रताप सिंह अपने कुलदेव का क्रोध शांत करने के लिए कई वर्षों तक तवी नदी में स्थित राजा कालीवीर जी की डबर पर स्वयं उपस्थित होकर दूध-घी तथा भिगोकर कूटी गई बादाम गिरी मिली पोए हुए आटे की गोलियां डालते रहे। यथावसर बकरे की बलि भी दी जाती। अंततः महाराजा के इन अनुष्ठानों से पसीज कर देव कृपा हुयी। महाराजा को उनके प्रशासकीय अधिकारों की बहाली हुयी।

पहाड़ी राजाओं पर श्री कालीवीर का कोप–

कहा जाता है कि जिन पहाड़ी रियासतों में सदियों से कालीवीर पूजा चली आई थी, वहाँ इतिहास के किसी मोड़

---

1. यह डबर बावा भैड़ की डबर से नीचे की ओर "नरैण" गांव के निकट बावा सुरगल की डबर से भी नीचे की ओर स्थित थी।

पर उस वक्त के राज परिवारों द्वारा कालीवीर के स्थान पर राजा मंडलीक की अर्चना आरंभ किए जाने से वे तमाम परिवार राजा कालीवीर की कोप दृष्टि के शिकार हुए। उनकी रियासतों को महाराजा गुलाब सिंह द्वारा मसल दिया गया। सैन्य कार्यवाही करके उन्हें अपने राज्य में शामिल करके राज परिवारों को सत्ताच्युत कर दिया गया। बंदर्हालता, भड्डू, बसोह्ली आदि ऐसे ही राज्य थे।

डोगरा राजाओं के साम्राज्य विस्तार में श्री कालीवीर का आशीर्वाद–

महाराजा जम्मू ने पहाड़ी रियासतों को सैन्य बल द्वारा अपनी अधीनता में लाकर डोगरा कौम की शक्तियों का केंद्रीयकरण किया जिससे इस जाति को एक बार फिर इतिहास के पन्नों पर गौरवपूर्ण स्थान मिला। डोगरा कौम का सिर फख्र से ऊंचा हुआ। उन्होंने हिमालय के उस ओर सैन्य अभियान चलाकर बल और बुद्धि के क्षेत्र में डोगरा कौम की धाक पूरी दुनिया में मनवा ली। इतना ही नहीं जम्मू-कश्मीर राज्य की स्थापना करके रणनीति और कूटनीति के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त की। इस सफलता की प्राप्ति में तथा साम्राज्य गठित करने की अभिलाषा में राज-परिवार के कुलदेवता परम योद्धा राजा कालीवीर का आशीर्वाद प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूप से परिलक्षित होता है। अपनी तमाम सफलताओं का श्रेय डोगरा महाराजा ''मंडी मुबारक'' स्थित राजा कालीवीर को देते आए हैं।

यही कारण है कि "दरबार मूव" की प्रणाली आरंभ किए जाने पर जम्मू के राजमहलों से श्रीनगर स्थित राजमहलों तक प्रतिवर्ष कुलदेव कालीवीर को ले जाया जाता था। किंवदंती के अनुसार "दरबार मूव" की प्रथा का प्रचलन किसी चेला के मुख से प्रकट होने वाली इस देव-इच्छा के उपरांत किया गया कि मुझे छः महीने श्रीनगर की सैर करवाई जाए। देवता की इस इच्छा को आदेश मानकर प्रशासन की ऐसी प्रणाली अपनाई गई जो विश्व में अनूठी और अकेली थी। जहाँ डोगरा साम्राज्य की दो राजधानियां थी– सर्दियों की जम्मू और गर्मियों की श्रीनगर। यदि देवता द्वारा प्रति वर्ष कश्मीर यात्रा की जागृति (जगाऽ) न दिया गया होता तो निश्चय ही जम्मू नगर स्थायी राजधानी बना होता। किंतु, देवता भविष्य में देखते हैं। उनकी दृष्टि सदियों के पार देख सकती है। इसीलिए, राष्ट्र हित में बहुत कुछ ऐसा हुआ जो बाद में इतिहास को नया मोड़ देता चला गया।

राजा कालीवीर की श्रीनगर यात्रा—

डोगरा राज के दौरान "दरबार-मूव" के साथ एक दल के साथ कुलदेव श्री कालीवीर भी जम्मू से श्रीनगर और छः मास बाद वहाँ से वापस जम्मू लाए-लेजाए जाते। यह पूजा दल जिसमें चेला-पुजारी, राज परिवार का कोई सदस्य श्री कालीवीर की निशानियों को सजी-धजी पालकी में लेकर दरबार वाले कर्मचारियों के संग चलते थे।

जम्मू से श्रीनगर के लिए चलने से पूर्व महाराजा द्वारा कुलदेव की विशेष पूजा की जाती। तत्पश्चात् उनसे कहा जाता– "हे कुलदेवता जी, आप हमारे साथ कश्मीर की यात्रा के लिए पधारिए। हमारे संग चलिए। आप वहाँ रहते हुए हमारा मार्ग- दर्शन करिए। महाराज, कश्मीर पर भी आप का ही राज है। वह आपकी जन्म-स्थली है। हे राजाओं के राजा आप अपनी जन्म-भूमि के भ्रमण हेतु प्रस्थान कीजिए।"

इसके उपरांत उन्हें पालकी में बैठाकर ढोल-बाजे के साथ कश्मीर के लिए विदा किया जाता। सब से आगे दो घुड़सवार भेजे जाते जो राजा कालीवीर के आने की सूचना देते चलते। पालकी के आगे ऊंचे-ऊंचे झंडे उठाए श्रद्धालु तथा ढोल-वादक चलते। पीछे कंधे पर सांकल-झुंड उठाए पुजारी-चेले। किसी नें लोहे की कूंढी उठा रखी होती और किसी ने गदा। दो-तीन नर्तक पैरों में घुंघरू बांधे अपने नर्तन से समां बाँध देते।

जम्मू से श्रीनगर पहुँचने तक जहाँ-जहाँ पड़ाव पड़ते थे वहीं-वहीं रात को देवता की पूजा-अर्चना की जाती। यह पड़ाव स्थल निश्चित स्थानों पर बने हुए थे। सुना जाता है कि महाराजा रणवीर सिंह के दौर में इन पड़ावों पर कहीं-कहीं सरायें बनवाई गई थीं। कहीं-कहीं एकाध छोटे-से कमरे भी बनवाए गए थे, जिन में ब-मुश्किल खड़ा हुआ जा सकता था। यह पड़ाव स्थल देवता के आराम फरमाने के लिए थे। इन्हें ऐसी साफ-सुथरी जगह देखकर बनवाया जाता था जहाँ प्राकृतिक जल उपलब्ध हो। एक तरह से यह

स्थल भूमिगत कमरों की तरह थे। ऐसे कमरों के अवशेष पुराने जम्मू-श्रीनगर पैदल मार्ग पर अब भी मौजूद हैं।

कुलदेव श्री कालीवीर के चिह्नों को श्रीनगर के राजमहल में बने पूजाघर में बड़े एहतराम से रखा जाता था। तब छः महीनों बाद दरबार जम्मू वापस आने पर कुलदेवता को उसी श्रद्धा भाव व रीति से वापस लाया जाता था। पुराने पैदल मार्ग पर मंदिर जो पहले से निर्मित थे, उनको तो उपयोग में लाया जाता, परन्तु इन ऐसे स्थानों पर नये मंदिर नहीं बनवाए गए जो वर्ष भर सूने पड़े रहते थे और जहाँ आबादी भी न थी।

हन्नै-हन्नै राज के दौर में श्री कालीवीर यात्राएं—

जम्मू प्रांत जब छोटी-छोटी रियासतों में बंटा हुआ था– उन दिनों दूर-दूर स्थित देव-स्थानों के लिए देव-यात्राएं या सैरें आयोजित की जाती थीं। यह शोभा-यात्राएं दस-पन्द्रह दिन के लिए बाहर रहा करतीं। एक रियास्त से दूसरी रियास्त में आने- जाने पर इन यात्रियों पर रोक नहीं थी। कटरा वाण-गंगा के अतिरिक्त कहीं कोई कर नहीं देना पड़ता था। अलबत्ता, उस दौर में जिसे ''हन्नै-हन्नै'' राज कहा जाता था में स्थानीय सामंत कालीवीर यात्रा निकालने वालों को देवता के लिए बकरे आदि भेंट करते थे।

---

1. हन्नै का अर्थ है "काठी"। हन्नै–हन्नै राज का अर्थ है जिस किसी के पास काठीबंद घोड़ा था, वही राजा बना फिरता था। वह जो चाहे किसे से जर्बदस्ती छीन लें या मांग कर हड़प लें।

कालीवीर यात्राएं और मित्रता की कूटनीति—

एक विशेष बात जो ध्यान देने योग्य है, वह यह है कि सामंती काल में जम्मू नगर से जितने भी पुराने (पैदल/खच्चर) मार्ग अन्य नगरों, कस्बों या गाँवों को जाते थे - उन पर जहाँ कहीं रात्रि निवास की व्यवस्था सराए या मंदिर आदि के रूप में थी, वहीं-वहीं राजा कालीवीर जी की निशानियां —संगलें, झुंडे, कूंढी, पगड़ी आदि रख कर एक स्थान बनाया गया होता था।

फसल निकलने के उपरांत विभिन्न कालीवीर देवस्थलों से प्रतिवर्ष यात्राएं निकलती जो इन पड़ावों के रास्ते जम्मू के प्राचीन महलों में राजा कालीवीर स्थल तक उपासना (यात्रा) हेतु आती थीं। छोटी यात्राएं अपने ही क्षेत्र के दो-चार गांवों का भ्रमण करके अपने मूल देवस्थल तक लौट आतीं।

विभिन्न राजवाड़ों के देव–स्थलों से निकाली जाने वाली कालीवीर जी की शोभा–यात्राएं एक से दूसरी रियास्त में आया-जाया करतीं। इस का उद्देश्य देव-मिलन था, किन्तु इस सांस्कृतिक परंपरा से राजा लोग परस्पर कूटनीतिक मित्रता को बढ़ावा देते थे। जम्मू, जसरोटा, बसोह्ली, बदर्हालता, अखनूर, रियासी, चिनैह्नी आदि राजवाड़ों द्वारा आयोजित श्री कालीवीर सैर (यात्रा) की विशेष छटा दिखाई पड़ती थी, जिनमें आम व खास, धनी नागरिक, पुजारी, व्यापारी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि तमाम वर्णों और वर्गों के लोग सेवादारों के रूप में

सम्मिलित होते। नृत्य, गायन, पूजा, चौकी तथा बलि का आयोजन किया जाता। रात्रि पड़ाव के दौरान भूमि शय्या का प्रचलन था। यदि राज परिवार का कोई सदस्य यात्रा में शामिल होता तो वह भी आम लोगों की तरह भूमि पर सोता।

यात्रा कालीवीर के किसी मुख्य स्थल की हो या किसी ग्रांव के देवस्थल की, बाहर रात्रि पड़ाव पड़ने पर वीरदेव कालीवीर को बकरे की बलि देकर माँस-भात पकाने की परंपरा का पालन किया जाता। इसी का प्रसाद भी पाया जाता।

यात्राओं में अंतर्निहित एक अन्य प्रयोजन-

एक पुराने जानकार चेला के अनुसार राजवाड़ों द्वारा आयोजित बड़ी यात्राओं में राज्याधिकारी तथा सेना के विशेषज्ञ भी सम्मिलित रहते थे। इनका काम था स्वस्थ और हट्टे-कट्टे युवकों को राजा की सेना में भरती होने का निमंत्रण देना। इसी प्रयोजन से "राजे की मंडी" में आने वाली देहाती यात्राओं पर यह अधिकारी नज़र रखते थे। सेना के लिए एक-एक जवान ठोक बजा कर लिया जाता था। फुर्तीले और स्वस्थ युवकों को बिना हीलो-हुज्जत के सेवा मिल जाती थी।

श्री कालीवीर चालीसा

कालीवीर आह्वान

काली-पुत्र का नाम ध्याऊं,
कथा विमल महावीर सुनाऊं।

संकट से प्रभु दीन उबारो,
रिपु-दमन है नाम तिहारो।

विद्या, धन, सम्मान की इच्छा,
प्रभु आरोग्य की दे दो भिच्छा।

स्वर्ण कमल यह चरण तुम्हारे,
नेत्र जल से अरविंद पखारे।

दोहा— कलिमल की कालिख कटे, मांगूं मैं वरदान।
ऋद्धि-सिद्धि अंग-संग रहें, सेवक लीजिए जान॥

श्री कालीवीर चालीसा

श्री कुलपति कालीवीर प्यारे,
कलजुग के तुम अटल सहारे।

तेरो बिरद ऋषि-मुनि हैं गावें,
नाम तिहारा निसदिन ध्यावें।

संतों के तुम सदा सहाई,
ईश पिता और कालिका माई।

गले में तुम्हरे हीरा सोहे,
जो भक्तों के मन को मोहे।

शीश मुकट पगड़ी संग साजे,
द्वार दुदुंभी, नौबत बाजे।

हो अजानुभुज प्रभु कहलाते,
पत्थर फाड़ के जल निसराते।

भुजदंड तुम्हरे लोह के खंभे,
शक्ति दीन्ह तुम्हें मां जगदम्बे।

चरणन में जो स्नेह लगाई,
दुर्गम काज ताको सिद्ध हो जाई।

तेरो नाम की युक्ति करता,
आवागमन के भय को हरता।

जादू-टोना, मूठ भगावे,
तुरतहि सोए भाग्य जगावे।

तेरो नाम का गोला दागे,
भूत-पिशाच चीख कर भागे।

डाकनी मानत तुम्हरो डंका,
शाकनी भागे, नहीं कोई शंका।

बावन वीरों के तुम स्वामी,
अखिल जगत तुम्हरा अनुगामी।

अद्भुत तुम्हरी सेना आवे,
दुष्टों के जो प्राण सुखावे।

वीर तुम्हारे विकट हैं योद्धा,
शिवगण धारें प्रबल क्रोधा।

हाथ में अनुपम खड्ग सुहावे,
असुरों को जो मार मुकावे।

बदन भयंकर छाती चौड़ी,
अद्भुत नाहर संग है जोड़ी।

मंत्र मान्यो मंडलीक स्नेही,
जीतयो गज़नी पल भर में ही।

काल दैत्य को तुमने मारा,
दुष्ट दलन कियो बारम्बारा।

वासुकि आए तुम्हारी शरणा,
हृदय लगाए, दिखाई करुणा।

बीता द्वापर कलजुग आया,
चहुं ओर अंधियारा छाया।

दैत्य, असुर, दुराचारी, लोभी,
अत्याचारी संतन अति क्षोभी।

यज्ञ भंग ध्वनि त्राहि-त्राहि,
सदा मुनिजन संत कराहिं।

गंगाधर की टूटी समाधि,
चिंतित बैठी शक्ति अनादि।

ब्रह्मा, विष्णु, कैलाश पे आये,
शिव भोले को वचन सुनाये।

धरा दुःखी रोयें नर-नारी,
मिटी धर्म की रेखा सारी।

रक्तपात संहार की लीला,
सुरसा सम बढ़े असुर कबीला।

है सन्मति की सूखी धारा,
मृत्यु-लोक बना काली कारा।

शिव संग सोचें त्रिपुरारी,
विपदा दूर हो कैसे भारी।

अंतरिक्ष से आशुतोष उतारे,
एकार्णव में शेष अवतारे।

कह्यो काली नाम है धरना,
अवतरो वीर प्रकाश है करना।

मेटो अंधेरा धरा पे जाओ,
धर्म ध्वजा को तुम फहराओ।

महादेवी की अद्भुत माया,
किरणों का इक अश्व बनाया।

तुम सारथी यह तुम्हारा वाहन,
कलयुग का तुम करो विदारन।

जग का तुम अंधियारा मेटो,
जाल पाप का जाए समेटो।

भोले शिव तुम्हें दीन्ह आदेसा,
संतन के तुम हरो कलेसा।

धरती के संताप हटाइये,
दीनन के सब कष्ट मिटाइये।

जो कोई ताको किरपा चाहे,
पढ़े चालीसा जाप करावे।

जो नित कालीवीर ध्यावें,
समरथ, बल, सुबुद्धि पावे।

जयति-जयति जय देव तुम्हारी,
निश्चय करो तुम विजय हमारी।

दोहा– तूने ही तो सब दिया, और क्या रखूं आस।
मनसा, वाचा, कर्मणा, रहूँ मैं तेरा दास॥

बोल – कालीपुत्र कालीवीर की जय

○ ○ ○

कालीवीर कथा

कालीवीर जन्म

कालीवीर जी के जन्म के विषय में अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं। अधिकांश में उन्हें जन्मते ही असाधारण बालक के रूप में वर्णित किया गया है। दैवी व्यक्तित्व की विशेषता होती है कि वह छुटपन से ही अनेक प्रकार के चमत्कारिक कार्यों से साधारण जन का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने लगते हैं। उत्तरोत्तर उनका यश एवं कीर्ति फैलने लगती है और अन्ततः उन्हें अवतार का दर्जा दे दिया जाता है।

जन्म कथा-1:—डुग्गर की मौखिक परंपराओं के अनुसार कालीवीर का जन्म अयोध्या नरेश ईशर के घर हुआ। पहाड़ी क्षेत्र में इन्हें भैरव का पुत्र कहा जाता है, कारण कि "कालिका" को भैरव पत्नी माना जाता है। हिमाचल प्रदेश के किन्हीं क्षेत्रों में श्री कालीवीर को वटुक भैरव माना जाता है। भैरव और ईशर (ईश्वर) दोनों भगवान् शिव के नाम हैं। भद्रवाह में इन्हें ही 'ऐंशर' कहा जाता है।

जन्म कथा-2 :— महारानी कालिका के गर्भ से उत्पन्न होने का कारण इन्हें "काली" नाम दिया गया। जन्म से पूर्व इनके माता-पिता को राज ज्योतिषियों ने बतला रखा

---

1. *बिच दुइ नैरै मंडलीक जरमेआ, बिच अयुद्धेआ कालीवीर।*
2. *ईशर (ईश्वर) के पिता का नाम कंग या कंक कहा जाता है।*

था कि उनके यहाँ एक तेजस्वी बालक जन्म लेने वाला है
वह महा शूरवीर और बुद्धिमान होगा।

जन्म कथा-3 :– एक दंत-कथा के अनुसार "ईशर"
कोई राजा न होकर, शारदा क्षेत्र कश्मीर के एक प्रकां
पंडित थे। उनकी पत्नी ने जब कालीवीर को जन्म दिया
तब गंडमूल नक्षत्र थे। इस दोष को दूर करने के लि
कालीवीर को देवी कालिका के मंदिर में चढ़ाया गया। इ
मंदिर की पूजारिन तुलसू नामक ब्राह्मणी थी जो राज
मंडलीक की प्रोहितानी भी थी। मंदिर में चढ़ाकर उसर्क
माता ने बालक को कालिका की धरोहर मान कर तुलर
से वापस ले लिया। तुलसू ने कहा कि यह कालिका क
पुत्र कहा जाएगा और कालीवीर के नाम से इसकी प्रसिद्ध
होगी। आप लोग इसका पालन-पोषण करो। जब यह बड़ा
हो जाएगा में इसे राजा मंडलीक का मंत्री बनवाऊंगी
तदुपरांत, जब कालीवीर बड़े हुए तो तुलसू उन्हें गढ़ दुद्धन्हेरा
ले गई। वहाँ राजा मंडलीक और कालीवीर ने एक-दूसरे
की बुद्धि और बल का परीक्षण किया। कालीवीर के बुद्धि,
चातुर्य आदि गुणों से प्रभावित होकर राजा मंडलीक ने
उनके समक्ष अपना मंत्री बनने का प्रस्ताव रखा। स्वतंत्रचेता
कालीवीर बोले– "मैं तो राजाओं का राजा हूँ। आप मुझे
मंत्री बनने को कह रहे हो।"

राजा मंडलीक ने कहा– "मित्र! आप मेरे अनुचर नहीं
प्रत्युत् गुरु बनकर मेरा मार्ग–दर्शन करेंगे।"

जन्म कथा-4 :– एक अन्य दंत-कथा प्रचलित है कि जन्म के समय काली भी साधारण बच्चों की तरह गर्भ से सिर के बल प्रकट हुए, किंतु, जन्म लेते ही उनकी दोनों टांगें धरती पर आ लगीं जिससे पाँव के नीचे की धरती थोड़ा नीचे को धंस गई। यह लक्षण देखकर महलों में धूम मच गई कि जन्मते ही धरती पर पाँव जमाने वाला यह बालक अति विलक्षण और पराक्रमी है। इसलिए जन्मते ही उसे वीर की उपाधि दे दी गई और उन्हें कालीवीर कहा जाने लगा।

जन्म कथा-5 :– जन्म वाले दिन रविवार था और भाद्रपद मास[1] की पूर्णिमा थी।[2] यह भी लोक-प्रवाद है कि जिस दिन राजा मंडलीक का जन्म हुआ उसी दिन सायं काल को कालीवीर का जन्म हुआ। पूर्णिमा की रात्रि में कालीवीर के अवतीर्ण होते ही चहुँ ओर उनके अलौकिक व्यक्तित्व का प्रकाश फैल गया। पृथ्वी से अंधेरा भागने लगा।[3] इस अपराजेय योद्धा के पृथ्वी पर अवतरण से सारा संसार प्रकाशमान हो उठा।[4] कुछ कारकों में कालीवीर के जन्म के साथ ही जोरदार बिजली कड़कने और वर्षा होने का वर्णन किया गया है-

---

1.–2. "इष्ट पुन्नेआ, दिन भादरों; जरम काली ने लेआ।"

3. माता तेरी लोरियां दिंदी, झूटे करांदी दाई।

4. नगरी दे बिच खुशियां होइयां,
शैहर–बजारें बाजे बजदे,
मैहलें बज्जै बधाई।

"जरम कालीवीर दा होंदे दिक्खी,
प्रभु ने बरखा लाई।"

इस अद्‌भुत एवं भाग्यवान बालक को चंदन के पंघूड़े में मखमल की शय्या पर लिटा कर मैया कालिका लोरियां सुनाने लगी और दाई झूला झुलाने लगी।[1] नगर में खुशियां की गई। गली-बाज़ारों में बाजे बजाए गए।[2] महलों में राजकीय वादक मंगल ध्वनि बजाने लगे। इस वीर बालक के शुभ जन्म की खुशी में गुड़ और मिठाइयां बांटी गई।[3]

कालीवीर प्रतिदिन ऐसे बढ़ने लगे जैसे अमावस के उपरांत चंद्रमा की ज्योत्स्ना बढ़ती है। पांच दिनों का होने पर 'पंजाब डालने' की कुलरीति संपन्न की गई।[4] इक्कीस दिनों का होने पर "सूतरा" डालने की रस्म की गई। नगर की स्त्रियां आकर मंगल गीत गाने लगीं।[5]

---

1. *माता तेरी लोरियां दिंदी,*
   झूटे करांदी दाई।
2. *नगरी दे बिच खुशियां होइयां,*
   शैह्‌र–बजारें बाजे बजदे,
   मैह्‌लें बज्जै बधाई।
3. *माता तेरी गुड़ बंडदी ऐ,*
   दाई बंडै मठेयाई।
4. *अज्ज बडेरा, कल बडेरा,*
   दिन–दिन जोत सुआई।
   पंजें दिनें दा होआ कालीवीर,
   लेआ पंजाबें पाई।
5. *औंदियां नारां, बौह्‌न पसारै,*
   दिनें मंगल गाई।

तब "गुढ़ती" देने की रस्म की गई। भैंस के दूध में चीनी और मिसरी मिला कर कालीवीर को चटाई गई।[1] एक वर्ष का होने पर यह बालक गेंद से कई प्रकार की खेलें खेलने लगा।[2] दो वर्ष की आयु में वह महलों में अपनी मनोहारी खेलें दिखाने लगा।[3] तीन वर्षों का होने पर बालक कालीवीर गलियों में जाकर खेल-कूद करने लगा।[4] चार वर्ष की आयु में यह तेजस्वी बालक सुंदर नगरों की सैर के लिए जाने लगा।[5]

बचपन :- इस विलक्षण बालक को बचपन से ही बागों में घूमने, नगरों का सैर-सपाटा करने की अच्छी आदत बन जाती है। जन्म से ब्राह्मण होकर भी स्वभाव से क्षत्रिय होने के कारण कालीवीर बचपन से ही घुड़ सवारी का प्रशिक्षण पाने लगते हैं। अस्त्र-शस्त्र चलाने की विद्या में भी वे पारंगत हो जाते हैं। यह बाल-योद्धा कई बार घोड़े को दौड़ाते हुए दूर

---

1. चिट्टी खंड ते दुद्ध भांह्जा,
विच मिशरी रलाई।
खेढदेआ-खढांदेआ वीरा,
गढौतां देयै तुगी दाई।

2. इक ब'रे दा होआ कालिया,
खि'न्नुएं खेढ रचाई।

3. द'ऊं ब'रें दा होआ कालिया,
मैह्लें खेढ रचाई।

4. त्र'ऊं ब'रें दा होआ कालिया,
गलिएं खेढै जाई।

5. च'ऊं ब'रें दा होआ कालिया,
शैह्र सुहामें आई।

दिशाओं में चला जाता है। एक बार सायंकाल को जब देर तक यह बालक घर वापस नहीं लोटता तो चिंतित माता कालिका उसे ढूंढने के लिए निकल पड़ती है और उन-उन स्थानों पर उसके विषय में पूछती है जहाँ वह अक्सर आया-जाया करता है। कश्मीर चूंकि सुंदर बागों का प्रदेश है और कालीवीर का मन इन सुरम्य बागों में रमा रहता है, इसलिए माता कालिका कालीवीर के प्रिय एक बाग की मालिन से पूछती है कि उसने कहीं उसके काली को तो नहीं देखा।[1]

प्रत्युत्तर में मालिन कहती है कि उसने कालीवीर को पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण दिशाओं में घोड़ा दौड़ाते हुए देखा था।[2]

वह आगे बतलाती है कि कालीवीर अपने घोड़े को इतने वेग से दौड़ा रहा था कि आकाश में धूल ही धूल उठ रही थी। कालीवीर को लिए उसका काला घोड़ा बादलों से बातें कर रहा था। उसके घुंघरु छन-छन की ध्वनि कर रहे थे।[3] वह वेगवान घोड़ा दांतों से किड़-किड़ की ध्वनि निकाल रहा था, उसके मुख के बाल (मूछें) हवा में फहरा रही थीं। अपने प्रबल वेग से वह मानो अपने शरीर पर गद्दी थामने वाली तनियों को तोड़े दे रहा था।[4]

---

1. *बागें दिए बगमाननी, तोह् काली निं लब्भेआ जंदा।*
2. *उत्तर दक्खन, पूरब–पच्छम, दिक्खेआ हा घोड़ा दडांदा।*
3. *काले घोडे पर मारी थबाकी, अंबर गर्दी छाई।*
   काले डिग्गलें गल्लां करदा, घुंगरुएं छन–छन लाई।
4. *कड़–कड़ दंदें, फर–फर मुच्छें, तड़–तड़ तनियां तरड़ाई।*

यौवनावस्थाः- बालावस्था से यौवन में प्रवेश करके कालीवीर संसार का कल्याण करने की भावना से अपना मोहक रूप प्रकट करते हैं। इस का तात्पर्य यह है कि विश्व कल्याण के जिस उद्देश्य से उन्होंने जन्म लिया है, उस रहस्य को सर्वत्र प्रसारित किया जाए। इस के निमित्त वे सत्य युग से चली आ रही बारह जातियों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। सर्व प्रथम वे नाग-लोक की नाग सुंदरियों और स्वर्ग लोक की अप्सराओं को अपने आकर्षण क्षेत्र में लेते हैं। तत्पश्चात् वे विभिन्न स्थानों पर खतरानी, ब्राह्मणी, तेलिन, झीरी, धोबिन और बंगालिन स्त्रियों पर कृपा करके उन पर अपना स्वरूप प्रकट करते हैं।[1] मोहक स्वरूप के प्रकटीकरण द्वारा उनका अभिप्राय भौतिक कष्टों से दुःख पा रहे लोगों का उद्धार करना है। बाण-गंगा के निर्मल जल की भांति उनका सर्व कल्याणकारी रूप भगतों को बड़ा प्यारा लगता है।[2] उनकी मोहक छवि सिर पर पांचरंग पगड़ी से शोभा पा रही है और माथे पर हीरा लटक रहा है।[3]

कालीवीर के विषय में कहा जाता है कि भगवान शिव ने कालिका को वरदान दे रखा था कि आपके नाहर सिंह आदि अन्य पुत्र युद्ध लोलुप और क्रोधी होंगे, किंतु, कालीवीर बिगड़ी बातों को बनाने वाले होंगे।

---

1. *मोही लेई, मोही लेई, मोही लेइयां हूरां-परियां।*
   जो काली दे चरणें पेइयां, डुबदे-डुबदे तरियां।
2. *"कालीवीरा, गगन-गनीरा, बाल-गंगा देआ नीरा।"*
3. *"सिर लैहरिया पंज-रंग चीरा, मत्थै लड़कै तेरे हीरा।"*

राजा मंडलीक द्वारा कालीवीर की बुद्धि परीक्षा :-

राजा मंडलीक और कालीवीर दोनों छुटपन से ही घनिष्ट मित्र थे। एक बार वे दोनों घूमते-घामते एक वन में चले आए।

मंडलीक ने कहा- "मित्र, तुम भी राजा के पुत्र हो और मैं भी। किंतु, लोग तुम्हें शक्तिमान और बुद्धिवीर भी कहते हैं। मैं और तुम, दोनों इस घने वन में ऐसे स्थान पर पहुँच गए हैं जहाँ न आगे जाने की दिशा है और न पीछे लोटने का मार्ग। कहीं आस-पास ही सिंह भी दहाड़ रहा है। ऐसे में हम वापस कैसे जाएं-यह प्रश्न है।"

कालीवीर ने उत्तर दिया- "ऐसा समय और स्थान ही राज पुत्र के धैर्य एवं बुद्धि की परीक्षा का समय होता है। सर्व प्रथम हमें अपनी रक्षा के लिए अपने अपने खड्ग निकाल लेने चाहिएं ताकि सिंह आदि हिंस्र जंतु का आक्रमण होने पर उससे निपटा जा सके। फिर हमें घोड़ों को मोड़कर इन्हें वापस चलने के लिए एड़ लगानी चाहिए। यह स्वयं उस रास्ते पर चल पड़ेंगे जिधर से यह आए थे। प्रकृति ने गाय, घोड़े, कुत्ते आदि प्राणियों को यह सामर्थ्य दे रखी है कि वे जिधर से आते हैं उस रास्ते को प्रायः भूलते नहीं हैं। इसलिए उसी रास्ते से वापस घर को लौट आते हैं।"

तब दोनों वीरों ने घोड़ों की लगामें मोड़ीं और उनके घोड़े तेज़ी से दौड़ते हुए घने वन से बाहर निकल आए। राजा मंडलीक ने पूछा- "मित्र, क्या बात है कि लौटती बार

यह दोनों अश्व हमारे प्रयत्न या निर्देश के बिना ही बहुत तेजी और सावधानी से वन की सीमा को लांघ आए?''

कालीवीर बोले- ''जैसे मनुष्य, सिंह आदि हिंसक जंतुओं से भय खाता है वैसे ही यह घोड़ा आदि प्राणी भी सिंह से अपने प्राणों का भय अनुभव करते हैं। अपने प्राणों के अतिरिक्त इसे अपने स्वामी की सुरक्षा की चिंता भी रहती है – इसी कारण से यह घोड़े तीव्र गति से, किंतु, सावधानीपूर्वक हम दोनों को यहाँ तक ले आए हैं।''

राजा मंडलीक बोले- ''तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि हमारे प्राणों की रक्षा घोड़े की सहज बुद्धि के कारण हुई है, जबकि मुझे आपकी बुद्धि और बल की परीक्षा अभीष्ट है।''

कालीवीर हंसते हुए बोले- ''किसी ने पहली बार मेरी परीक्षा की इच्छा व्यक्त की है। इसलिए मैं सहर्ष तैयार हूँ।''

राजा मंडलीक ने कालीवीर की बुद्धि की परीक्षा के प्रयोजन से कहा- ''इस सामने के पेड़ को मूल से काटना है, किंतु, इसके लिए खड्ग का प्रयोग नहीं करना है।''

कालीवीर प्रश्न सुनकर हंसे और उन्होंने एक पत्थर उठाकर चट्टान पर दे मारा। यह दो टुकड़ों में बंट गया। इसका एक तेज़धार वाला टुकड़ा उठाकर कालीवीर ने वृक्ष के मूल पर प्रबल आघात किए, जिससे वृक्ष तिनके के समान टूट कर गिर गया।

तब राजा मंडलीक ने कालीवीर की परीक्षा की अगली कड़ी प्रस्तुत की। उनसे कहा कि वे पास की सरिता को गहरे पाट वाले स्थान से पार करें। कालीवीर ने नदी के किनारे उगे बांस को झुका कर लंबी कुदान भरी और सरिता के उस पार चले गए। वापस आने के लिए उन्होंने वहाँ पड़ी सूखी बल्लियों को सरिता के आर-पार रखा और इन पर पांव जमा कर लौट आए।

मंडलीक ने एक ऊंचे पेड़ की ओर इंगित करके कहा- "इस पेड़ से बिना इस पर चढ़े कुछ फल उतार दो। शर्त यह है कि वृक्ष को पत्थर नहीं मारना है।"

कालीवीर ने एक सिरे से टेढ़ी एक लंबी छड़ी से पेड़ की फलदार डालों को झिंझोड़ा, जिस से कुछ फल नीचे गिर पड़े।

परीक्षा के अगले चरण में राजा मंडलीक ने एक पत्थर सामने रख कर कहा- "इसके बराबर का पत्थर ला दो। वह पत्थर वज़न में इससे न कम हो न ज़्यादा।"

इस प्रश्न के समाधान के लिए कालीवीर ने तराज़ू का निर्माण किया। दो पलड़े बराबर बना कर, उन दोनों को तीन-तीन छड़ियां लगाईं। इन्हें एक बेल से बांध कर एक गोल छड़ी के सिरों से बांध दिया। इस तराज़ू को उठाने के लिए छड़ी के मध्य में एक चोटी बांध दी। तब तराज़ू के पलड़ों को सम करके राजा मंडलीक का दिया पत्थर एक पलड़े में रखा और दूसरे पलड़े में नदी किनारे से विभिन्न

पत्थर रख कर, उसके बराबर तौल का पत्थर ढूंढने लगा। जब उस पत्थर के बराबर का पत्थर मिल गया तो तराजू को चोटी से उठाकर राजा मंडलीक को प्रमाण दे दिया कि देख लो दोनों पाषाण वजन में एक बराबर हैं।[1]

तब मंडलीक ने कालीवीर की बुद्धि की परख के लिए एक और उपाय सोचा। उन्होंने कालीवीर द्वारा निर्मित तराजू से नौ (9) बट्टी (दो सेरी बाट) अनाज तौल कर कहा इसे तीन बराबर भागों में बांट दो। अबकी बार शर्त यह है कि इस कार्य में तराजू का प्रयोग नहीं करना है।''

तब कालीवीर ने लकड़ी का एक ऐसा पात्र तैयार किया जिसके द्वारा अनाज की तीन बराबर ढेरियां लगा दीं। बाद में इस पात्र को ''पाई'' कहा जाने लगा। इससे पूर्व लोग विभिन्न आकार की अ-मानक टोकरियों से अनाज-दाना मिना करते थे।

राजा मंडलीक ने कालीवीर को एक फट्टा देकर कहा इसके बराबर नाप का एक और फट्टा ला दो। किंतु शर्त यह है कि इस फट्टे को दूसरे फट्टे से नापना नहीं है।

कालीवीर ने दिए गए फट्टे को हाथ से नापा। इसकी लंबाई नौ हाथ, एक ग्रिड्ठ, एक चप्पा और तीन अंगुल थी। तब कालीवीर ने इतनी ही लंबाई तक नाप कर दूसरे फट्टे का फालतू हिस्सा आरी से काट दिया।

---

1. लोक-विश्वास है कि इससे पूर्व तराजू का प्रचलन नहीं था। लोग तराजू न होने के कारण अनुमान द्वारा लेन-देन किया करते थे।

राजा मंडलीक ने दोनों फट्टों को इकट्ठे रखकर देखा उनकी लंबाई बराबर थी।

कहा जाता है कि तब से बढ़ई लोग लंबाई-चौड़ाई के लिए लकड़ी को हाथ, ग्रिट्ठ, चप्पे, कोकू और अंगुली के माप से काम करने लगे। कालीवीर पर आस्था रखने वाले अधिकांश बढ़ई कालीवीर को अपने व्यवसाय एवं शिल्प का सहायी देवता मानते हैं। वे उन्हें विश्वकर्मा के बराबर पूजनीय मानते हैं।

कालीवीर की तीव्र बुद्धि से चमत्कृत राजा मंडलीक ने अब की बार एक असंभव-सी शर्त उनके सामने रख दी। कहा कि मखमल की ओढनी में देविका नदी से जल ला दो।"

इस असंभव प्रश्न को सुनकर कालीवीर ने तुरंत उत्तर दिया- "इस के लिए मेरी भी एक शर्त है। पहले आप छाननी में जल भर कर ले आओ। तब मैं मखमल के कपड़े में पानी लाउंगा।"

मंडलीक उनकी शर्त सुनकर निरुत्तरित्त हो गए। तब उन्होंने कालीवीर के आगे प्रस्ताव रखा- "मित्र! मैं वर्षों से ऐसे अमात्य की तलाश में हूँ जो राज-काज, रणनीति एवं राज–व्यवस्था के संचालन का भार संभाल सके। आपकी योग्यता के वशीभूत मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप यह दायित्व संभालें।"

कालीवीर को चुप देख कर राजा मंडलीक बोले- "मैं जानता हूँ आप के समक्ष मैं तो नाम का राजा हूँ, जबकि बुद्धि और बल के राजा आप हैं। आपकी परीक्षा लेने के

पीछे मेरा ध्येय अमात्य पद के लिए आपकी परख करना था। यदि आपको कोई असमंजस हो तो निःसंकोच कहें।''

कालीवीर बोले- ''मित्र, मेरा संकोच इस बात को लेकर है कि मैं अपने भ्राता नाहर सिंह का भी मंत्री हूँ। दो स्थानों पर मैं यह कार्य कैसे कर पाऊंगा?''

राजा मंडलीक बोले- ''आपका बुद्धिबल सूर्य का वह प्रकाश है जो हर स्थान को प्रकाशित करता है। इस प्रकाश की पूरे देश को आवश्यकता है। मेरा आपसे निवेदन है कि जिस राज्य को आपके मार्ग-दर्शन की आवश्यकता हो आप वहाँ पहुँच कर उनकी समस्याओं का समाधान दे आएं। आपके जैसा भ्रमणशील अमात्य पूरे धर्म-क्षेत्र का कल्याण करेगा।''

कालीवीर बोले- ''आपके इस सुझाव को मानना समय की मांग है। मुझे आप का अमात्य बनना स्वीकार है। आपको जब कभी आवश्यकता पड़े आप अयोध्या या कश्मीर जहाँ कहीं मैं होऊं, वहाँ संदेश भेज कर बुला सकते हैं।''

राजा मंडलीक को कालीवीर का उपदेश :—

जब राजा मंडलीक कालीवीर की वीरता और बुद्धि से प्रभावित हो गए तो उन्होंने कहा आप मेरा मार्ग-दर्शन करने की पूरी योग्यता रखते हैं। इसलिए मैं राज-काज़ संबंधी कार्यों में आपका परामर्श सदा लेता रहूँगा। इसलिए इस समय अमात्य के रूप में आप मुझे पहली सीख दीजिए।''

तब कालीवीर बोले- ''राजकाज चलाते समय राजा को सदा मीठी बात कहनी चाहिए, कड़वी नहीं। यदि राजा के

मन में मिठास होगी तो उसकी प्रजा भी उसका अनुपालन करेगी। राजा को मालुम होना चाहिए कि कब क्रोध और कब दंड से कार्य बनेगा। किंतु, यदि तुम्हारे द्वार पर तुम्हारे सात जन्मों का वैरी भी आ जाए सहायता या शरण मांगने के लिए तो उससे भी मीठी भाषा में बात करनी चाहिए।"

राजा ने पूछा- "ऐसा करने का लाभ क्या है?"

कालीवीर बोले-"आप स्वयं ही इस का लाभ या हानि खोजिए। आपके इस प्रश्न का उत्तर आपसे ही पूछने के लिए मैं आपको एक माह का समय देता हूँ।"

राजा मंडलीक ने एक माह इधर-उधर बहुत सिर घुमाया, मगर वे कालीवीर के उपदेश का तल नहीं ढूंढ सके।

एक माह के उपरांत कालीवीर आए और बोले- "मैं उस प्रश्न का उत्तर पूछने आया हूँ जो आपने मुझसे पूछा था।"

राजा मंडलीक बोले- "अकल के बहुत घोड़े दौड़ाने पर भी उस बात का रहस्य मैं नहीं जान पाया हूँ, आप कृपा करके मुझे उस बात का मर्म समझा दें।"

कालीवीर बोले-"अभ्यागत से मीठा बोलने की बात मैंने आपसे इसलिए कही थी ताकि प्रत्युत्तर में हमें कड़वाहट न मिले। यदि आप किसी की बढ़ाई करेंगे तो बदले में आपको भी प्रशंसा मिलेगी। पुराने वैर-विरोध को भूल जाना श्रेयस्कर होता है।"

उपदेश वाले इस प्रसंग से यों प्रतीत होता है कि उस दौर में भारत के विभिन्न क्षेत्रों के शासक एक दूसरे से लड़ते रहते

थे। इस बात का लाभ उठाकर विदेशी आक्रमणकारी उन पर प्रभावी हो रहे थे। हिंदू राजाओं में परस्पर एकता पैदा करने के लिए कालीवीर ने राजा मंडलीक के अतिरिक्त अन्य राजाओं को भी यह उपदेश दिया होगा—इसकी संभावना है।

कालीवीर द्वारा भक्तों की प्राण रक्षा :—

भक्तों का विश्वास है कि अन्य देवी-देवता जहां बहुत सेवा तथा पूजा-अर्चना के उपरांत कृपा करते हैं वहीं श्री कालीवीर अपना नाम पुकारते ही सहायता के लिए दौड़े आते हैं। भक्त लोग उन्हें तुरंत फल देने वाले देवता के रूप में पूजते हैं। यह भी कहा जाता है कि विधि ने विधान रच रखा है कि कलियुग में कालीवीर ही सहाई होंगे। अपने मानने वालों की मंझधार में फंसी नौका को वे ही पार लगाएंगे।

बावा जित्तो की रक्षा :-

ऐसे एक नहीं सैंकड़ों उदाहरण हैं जब कालीवीर संकट में पड़े अपने भक्तों की सुरक्षा के लिए सामने आए हैं और उनके मार्ग को निष्कंटक किया है। डोगरा क्षेत्र के प्रसिद्ध अमर किसान बावा जित्तो को लाखों लोग लोक-देवता के रूप में स्वीकार करते हैं। बावा जित्तो अपनी जीवन-लीला के दौरान प्रतिदिन राजा मंडलीक की आराधना करते रहे हैं। किंतु, जब बावा जित्तो के प्राणों पर आन पड़ी तो उन्हें भी कालीवीर ने बचा लिया, उनके प्राणों की रक्षा की।

कथा यों है कि एक दिन जब बावा जित्तो को डायन अभिचार के कारण मूर्छित बुआ कौड़ी गिरी पड़ी मिलती है

तो वे अपने इष्ट देव राजा मंडलीक के थान पर उसे लाक
अपने पूज्य-देव के आगे, कन्या के बाबत फरियाद क
हैं। वे तो स्वयं राजा मंडलीक के चेल्ले थे। पौन के दौर
आवाज़ आती है कि चाची जोजां ने डायन अभिचार कि
है, इसी से फूल-सी कन्या कौड़ी मूर्छित हो गई है। क
को फांडा करके वे भला-चंगा कर देते हैं। किंतु, अप
नाम उजागर हो जाने के कारण जोजां घायल नागिन
तरह तड़प उठी और अपने सात पुत्रों द्वारा जित्तो
मरवाने की योजना बनाने लगी।

इस प्रकार एक शाम, वे सातों भाई बावा जित्तो
पहाड़ी की चोटी से नीचे लुढ़का कर मार डालने का प्रय
करते हैं। जित्तो सायंकाल खेतों में हल चलाकर वापस ल
रहे थे कि पहाड़ी पर उनकी प्रतीक्षा में बैठे मौसेरे भाइयों
जित्तो से कहा कि डडल के उस ओर एक गाय फंस गई
उसे वचाने में सहायता करें। हल-पंजाली एक ओर रख
बावा जित्तो गाय के बचाव के लिए आगे बढ़े और डडल
नीचे देखने लगे। जभी सात मौसेरे भाइयों ने उन्हें पहाड़
कगार से नीचे की ओर धक्का दे दिया। अदृश्य-पटल पर
समय राजा मंडलीक अपने मित्र एवं अमात्य कालीवीर
संग शतरंज खेल रहे थे। वे एकाएक अपने भक्त बावा जि
की प्राण रक्षा के लिए चिंतित हो उठे। इसलिए राजा मंडल
ने द्रुतगामी तथा सदा-सहाई वीर कालीवीर से कहा कि
जित्तो को बचा लीजिए। कारक के बोल यों हैं:—

"अग्गें-अग्गें जितमल घलदा, पिच्छै सत्तै भाई,
उप्पर डडलै जाई खड़ोते, बाये गी धिक्का कराई।
बोलै राजा बचन करै,कालीबीरै गी गल्ल सुनाई,
अ'ऊं तुगी आखां कालीबीरा, जित्तो गी लैआं बचाई।"

राजा मंडलीक की इच्छा का पालन करते हुए कालीवीर "बावा जित्तो" को पकड़ कर बचा लेते हैं। कहा जाता है उन्होंने बावा जित्तो को यों ग्रहण किया जैसे पौधे से गिरे पुष्प को हाथों में ले रहे हों। बावा जित्तो को कोई खरोंच तक नहीं आई।

"औंदा दिक्खेआ बावा जित्तो, भुआ पौन दिंदा नाईं।"

बावा जित्तो के प्राणों की रक्षा करके कालीवीर उन्हें राजा मंडलीक के थान पर ले आते हैं। यहाँ बावा जित्तो को अपने इष्ट देव राजा मंडलीक का आदेश प्राप्त होता है :-

"बोलै राजा बचन करै, बाये गी गल्ल सुनाई,
आऊं तुगी आखां सुन ब्रैह्मणा ग्हार र'मेआं नाईं।"

बावा जित्तो को कालीवीर द्वारा विगत जन्म का स्मरण कराना :-

बावा जित्तो ने महता वीर सिंह से जो जमीन एक चौथाई लगान के करार पर ली थी, उस पर भरपूर फसल हुई। जिसके चर्चे दूर-दूर तक होने लगे। एकादशी का शुभ दिन देख कर बावा जित्तो ने फसल बांटने का दिन निश्चित करवाया था। जित्तो जिन्होंने एकादशी का व्रत रखा हुआ था जागीरदार महता के कहने पर स्नान करके व्रत का उपारण करने गये हुए थे। पीछे उनके जन्मों की वैरन चाची

जोजां खेतों में महता के पास वृद्धा बन कर गई और अप
ब्राह्मण होने की दुहाई देकर पाई भर अनाज मांगा। मह
ने हुक्म दिया कि बुढ़िया को एक पाई अनाज दे दि
जाए। यह देखकर वह बोली, मेरा एक पाई से कुछ न
बनेगा, आप मुझे एक पंड गेहूं दे दो। गेहूं लेकर व
जित्तमल को चिढ़ाने के लिए जल स्रोत पर पहुंची। चा
जोजां ने उसे ताना मारा-"अरे! जित्तो, तू यहां नहा र
है उधर तेरे खेत में गंगा बह रही है।"[1]

अपने खेतों में लगे अनाज के ढेर से गेहूं की पाई ला
की बात जान कर जितमल के तन–बदन में आग लग गई
उन्होंने उससे गेहूं की पोटली छीन ली। मन में विचार उ
कि जिससे तंग आकर मैंने अपनी जन्म-भूमि ग्हार गांव छोड़
था, वह चाची जोजां यहां भी बिन बुलाए आ पहुंची है। म
में दूसरी बात यह उभरी कि उसकी अनुपस्थिति में गेहूं लुटा
जाने का अर्थ है कि महता वीर सिंह धर्म से फिर गया है
बावा जित्तो को अपना जन्म-स्थल गांव ग्हार छोड़ने से पहल
कही हुई बुआ कौड़ी की यह बात अवश्य स्मरण आई होगी-

"झिक्के देसै दे हाकम डाह्डे, लालच लांदे जानी,
लालच लांदे, दगा कमांदे, मूंह् पर कढ्दे गालीं।"

बावा जित्तो ने किसी अनहोनी की आशंका को तुरं
भांप लिया, इसी लिए वह तुरंत पंजोड़ गांव में प्यूह्ली पंडि

लेइयै कनक चली चाची जोजां कोल जित्तो दै आई।
छप्पाडिये की न्हौना ब्रैह्मणा तेरै गंग खलाड़ै आई॥
– डोगरी लोकगीत : भाग – 2

के घर में पहुंचे। उससे कहा कि ज्योतिष शास्त्र देखकर बताइये कि मुझे खलिहान में जाना चाहिए या नहीं। पंडित ने शुभ घड़ी देख कर उन्हें उपाय बतलाया कि वहां जाने से पूर्व जोगन को मनाना होगा। इसके निमित्त सैंथेई रंग का मुर्गा और लोहित रंग की बकरी की मनौती मांग कर खलिहान में जाइये। बावा जित्तो को यह उपाय बड़ा अटपटा लगा। वह बोले–''अपनी एक जिंदगी को बचाने के लिए, मैं इन दो निर्दोष जीवों की हत्या नहीं करूंगा।''

झक सफेद धोती–कुरता पहने, गले में मूंगों की माला डाले बावा जित्तमल पंजोड़ गांव में ज्यूनी लोहारिन के घर पहुंचे। यहां ज्यूनी ने उन्हें ताना दिया कि यदि कंढी क्षेत्र का कोई ब्राह्मण होता तो अपनी मेहनत की कमाई, गेहूं की फसल लुटने न देता। वह जागीरदार वीरसिंह के विरुद्ध अखाड़ा लगा कर दिखाता। पहाड़ी लोग आराम परस्त होते हैं, वे जोखिम भरे काम नहीं कर पाते–लोहारिन के ताने में यही भाव था।

बावा जित्तो ने छत से टंगा कटारा खेंचा। इसे म्यान से बाहर निकाल कर अपने गले से लगाया और कटारे को विनीत भाव से संबोधित करके कहा–तू मेरा धर्म का भाई हुआ। यदि तेरी आवश्यकता बने तो तुरंत मेरे प्राण हर लेना। मेरी रूह को तड़पाना नहीं।[1]

---

1. छत्ता त्रूही लेआ कटारा लैंदा लक्क फसाई,
पगड़ी कटारा गले कन्ने लांदा, हर–हर नाम ध्याई।
तूं धरमा दा भाई कटारेआ, ज्यूड़ा नां तरसाईं,
गल्ल सुनी ज्यूनी लुहारियै, मूंह गेआ कलमाई।
(डोगरी लो. गी. भाग 2, पृ. 60)

ज्यूनी को यह समझते देर न लगी कि बावा जितमल का स्वाभिमान जाग चुका है। जिसे वह पहाड़ी ब्राह्मण होने का ताना देती रही थी वह सिर-धड़ की बाज़ी लगाने का निश्चय कर चुका है। उसमें आत्म-बलिदान का भाव जाग्रत हो चुका है। इस सत्य का आभास होते ही ज्यूनी का चेहरा कुम्हला गया। वह उनके पैरों में गिर पड़ी तथा अपने कटु वचनों के लिए क्षमा मांगने लगी। उसने एक पाई भर गेहूं तथा कपड़े का टोटा उनके सामने रखा और कहा–"हे ब्राह्मण देवता! मैंने हंसी-ठिठोली में यह बात आप से कही थी। मेरे कहे का बुरा मत मानना क्योंकि देवर और भौजाई में छेड़ाछाड़ी चलती ही है। आप मेरे पति के धर्म-मित्र हैं, इसी कारण मैंने आपसे यह बातें कहीं। बावा जित्तो ने गेहूँ का दान स्वीकार कर लिया, किन्तु, कपड़े को दूर फेंकते हुए कहा– "यदि खलिहान से जीवित वापिस आया तो इसकी दोहर बना देना और यदि वहीं मर गया तो मेरे शव पर डाल देना।"

पंजोड़ गांव से खलिहान की ओर प्रस्थान करते समय बावा जित्तो ने अपने इष्टदेव का स्मरण किया। तब वे पलाश के पेड़ों के झुरमुट के पास से गुज़र रहे थे। सहसा उनके समक्ष पेड़ के नीचे एक सूर्य-सा चमक उठा। आंखें चौंधिया गईं। देखा, सामने काले घोड़े पर सवार वही दिव्य महावीर खड़े हैं जिन्होंने ग्हार गांव में पहाड़ से गिराए जाने पर उनकी रक्षा की थी।

अयोध्या में वासुकी नाग को अभय
वरदान देते हुए श्री कालीवीर
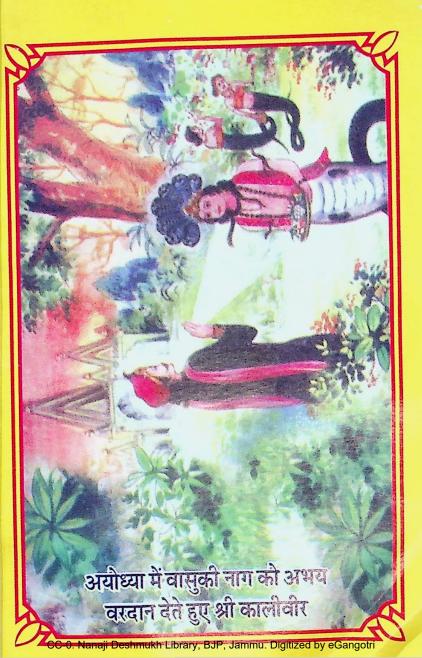
स्वतः बावा जित्तो के हाथ श्रद्धा से जुड़ गए। उन्होंने कहा– "आप के दर्शन पाकर मैं धन्य हुआ। श्री कालीवीर मेरा प्रणाम स्वीकार करें।"

कालीवीर बोले – "ब्राह्मण देवता, आप भी मेरा प्रणाम स्वीकार करें। आपने अपने इष्टदेव को स्मरण किया तो उन्होंने मुझे आपके पास भेज दिया।"

बावा जित्तो - "मुझ से ऐसी क्या भूल हुई है कि मेरे इष्टदेव राजा मंडलीक स्वयं कभी प्रकट नहीं हुए। क्या मेरी आस्था या आराधना में कोई कमी है?"

कालीवीर-"आपकी आस्था की सुगंध स्वर्ग-लोक तक पहुंच रही है। आपके इष्टदेव राजा हैं, वे जिस भगत पर खुश होते हैं, उसी के पास मुझे भेजते हैं। जब-जब आपने उनका स्मरण किया है, तुरंत उन्होंने आपके कष्टों को हरने का उपक्रम किया है।"

बावा जित्तो - "आप ने सत्य कहा। सारी दुनिया उनकी टेर लगा रही है, वे स्वयं कहां-कहां जाएंगे, जबकि उनके पास आप सरीखे मित्र और मंत्री मौजूद हैं।"

कालीवीर–"आप उनकी कृपा के पूर्ण अधिकारी हैं। आपके स्मरण न करने पर भी, वे आपको स्मरण करते रहते हैं।"

बावा जित्तो- "यदि ऐसा है प्रभु, तो जन्म से लेकर आज तक क्यों मेरे कदम-कदम पर कठिनाइयों के झंझावात झूलते रहे हैं?"

कालीवीर - "पृथ्वी पर मानव बन कर जन्म
एक बहुत बड़ा वरदान है। बड़े-बड़े देवता पृथ्वी पर आ
लिए तरसते हैं। स्वर्ग का एक-सार जीवन जिसमें खु
ही खुशियां भरी हुई है– उन्हें रसहीन प्रतीत होता है।
जितमल जी, मानव जीवन में आने वाले जोखिम ही पृ
पर जीवन की शोभा हैं। इसी से देवतागण भी पृथ्वी
ओर आकर्षित होते हैं।"

बावा जित्तो - "प्रभु! जब से मेरा जन्म हुआ, मुझ
कठिनाइयों के पहाड़ गिरने लगे। माता-पिता बचपन
अकेला छोड़ गए। मैं अकेले ठोकरें खाता रहा। चाची जे
और उसके बेटों के अत्याचार सहे। गांव वालों की स्व
और दब्बू स्वभाव-वृत्ति रूपी चक्की में पिसता रहा।
फूल-सी कोमल बिटिया को लेकर यहां परदेस में अ
पड़ा। यहां भी सुख का एक पल न मिला और प्रभु
अन्याय आज मेरे साथ होने जा रहा है–आप मेरे
खलिहान में चलकर देख लीजिए। ......मैं देवता नहीं
मैं कब तक अत्याचारों को चुप रह कर सहन करूं।"

कालीवीर – "ब्रह्मदेव, आप देवता ही हैं। आप ने
से धरती पर आने का वरदान मांगा था। आप
अत्याचारों की बात कह रहे हैं, उन्हें पूरा समाज सहता
रहा है। आप इसी अत्याचार का अंत करने के लिए अवत
हुए हैं। आपने आज तक जितने कष्ट सहे हैं, वे आपको
बनाने के लिए नियति ने रचे थे। घड़ा आग में पक कर

पक्का बनता है। आपको अत्याचार का अंत करने के लिए सब से महान दांव अभी खेलना है।''

बावा जित्तो - ''मैं तैयार हूं। प्रभु ! विधि मुझ से चाहती क्या है?''

कालीवीर - ''हे ब्रह्मदेव! यह समय जब कि आप अत्याचार के विरुद्ध आत्मघात का निश्चय मन में कर चुके हैं तो इस समय आपकी तमाम सांसारिक इच्छाएं लुप्त हो चुकी हैं। आपके हृदय की कसक का बवंडर ब्रह्मलोक तक पहुंच रहा है। देव-लोक में समस्त देवगण पृथ्वी पर घटने वाले घटनाक्रम की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। किंतु, यदि आप साधारण सांसारिक प्राणी की भांति व्यवहार करते हैं तो यह आपके पृथ्वी अवतरण के उद्देश्य के विपरीत होगा।''

बावा जित्तो - ''प्रभु, कृपा कर के बतलाएं कि क्या मेरा मानवोचित व्यवहार अनुचित है?''

कालीवीर - ''आप मानव अवश्य हैं ब्रह्मदेव! किंतु, असाधारण मानव हैं आप। यदि आप साधारण मानव होते तो मैं आपके संग खलिहान में चलकर दुष्ट जागीरदार और उसके कारिंदों का पल भर में संहार कर देता। किंतु, आप तो साक्षात् भगवान् परशुराम जी का अवतार हैं। परीक्षा की इस घड़ी में मुझ से कहा गया है आपको आपके विगत जीवन का स्मरण कराऊं। त्रेता युग में श्रीराम की वीरता, सौम्यता और धर्म–निष्ठा पर रीझ कर जब आपने शस्त्रों का परित्याग करते हुए श्रीराम की बढ़ाई की थी, उस

समय आपके मुख से उनकी विरद सुनकर त्रिदेव ब्रह्मा विष्णु, महेश ने प्रकट होकर आपसे वर मांगने को कहा था। आपने उनसे वर मांगा था कि कलियुग में धरती पर पुनः जब शासक वर्ग के अत्याचार असहनीय हो उठें, आपको मानव रूप में धरती पर प्रेषित किया जाए।''

आपकी इच्छा को स्वीकार करते हुए त्रिदेव ने तथास्तु कहा था। किंतु, साथ ही यह शर्त भी रखी थी कि कलियुग के कालखंड में भगवान् परशुराम के मानव अवतार बावा जितमल किसी शस्त्र के बजाए सहनशीलता, धैर्य-त्याग और आत्म-बलिदान द्वारा अत्याचार का निवारण करेंगे। यह तमाम शर्तें बहुत कठिन थीं, किंतु आपने उन्हें मुस्कुराते हुए स्वीकार किया था। शत्रु पर शस्त्र प्रयोग न करने की प्रतिज्ञा तो आप त्रेता युग में ले चुके थे। और आज कुछ देर पहले जब विधि ने प्यूह्ली पंडित के मुख से कहलवाया कि अपने प्राणों की रक्षा के लिए आप जोगिन के नाम पर एक सैंथई मुर्गे और लोहित रंग की बकरी का बलिदान दो तो आपने यह कह कर इन्कार कर दिया कि अपनी अकेली जिंदगी की रक्षा के लिए मैं इन दो निर्दोष प्राणियों की हत्या नहीं कर सकता—आपके वचन सुनकर स्वर्ग में देवता गण गद्गद् होकर ''धन्य-धन्य बावा जितमल! धन्य-धन्य भगवान् परशुराम'', कह उठे थे।''

बावा जित्तो- ''मैं त्रिदेव द्वारा निर्धारित शर्तों पर अत्याचार के विरुद्ध लड़ने को तैयार हूं, किंतु, मुझे फूल-सी बालिका बूआ कौड़ी की चिंता है। उस का क्या होगा।''

कालीवीर हंसे–"हे ब्रह्मदेव जितमल जी! बूआ कौड़ी साक्षात् वैष्णो माता का अवतार हैं। आपने दुर्गा भवानी की पूजा-अर्चना करके उनसे अपने आंगन में खेलने का वर मांगा था। वे तो दिव्य ज्योति हैं– जो समस्त जगत को धारण करती हैं। उनके प्रति आपकी सांसारिक मोह-ममता अर्थ की परिधि से परे है।"

बावा जितमल के चेहरे पर अलौकिक आभा दमक उठी। वे बोले– "हे शेषनाग अवतार! मैं आभारी हूं कि आपने मुझे मेरा विगत जन्म स्मरण कराया। मैं अपनी उस धृष्टता क लिए क्षमा चाहता हूं जिसमें मैंने अपने इष्टदेव राजा मंडलीक के स्वयं प्रकट न होने की शिकायत की है।"

कालीवीर - "हे ब्रह्मदेव जितमल जी! जो हो रहा है वह सब विधि की लीला है जो होगा वह पूर्व निश्चित है। इसलिए कर्म की राह पर सुख-दुःख का हिसाब करना मात्र अज्ञान है। आप सदा परिवर्तन की कामना लेकर पृथ्वी पर आते हैं। अब आपके उपक्रम से न केवल अत्याचारों की राह रुद्ध होगी प्रत्युत् युग को पलटा लगेगा। धर्मप्राण लोगों का वर्ग विशेषतया कृषक समाज आपके वृत्तान्त से प्रेरणा पाकर उभरेगा। इस भूखंड पर आपकी वीरता का दृष्टांत इतिहास का एक मोड़ सिद्ध होगा। आपको धर्म की मर्यादा स्थापित करनी है। समाज के लिए वह व्यवस्था लागू करवानी है जिसमें दीन लोगों, गाय और ब्राह्मण की सर्वोच्च महत्ता हो।"

बावा जित्तो - "हे वीर शिरोमणि! आपका आदेश शिरोधार्य है क्योंकि दीन लोग नियति के कठौते में तपने वाले शुद्ध सोने की भांति हैं। वे ही श्री हरि के परम स्नेही हैं। और गाय मानव समाज का महत्वपूर्ण अंग है। गाय का दूध जहां मां के दूध की तरह पुष्टि देता है, वहीं उसका गूत्र और गोबर खेतों में सर्वश्रेष्ठ खाद सिद्ध होता है। इसी तरह ब्राह्मण तप, त्याग, सदाचार तथा ज्ञान, भक्ति की मर्यादा समाज को प्रदान करता है। ब्राह्मण असहाय नहीं है। वह आशा के बुझे दीपक में आत्म-बलिदान द्वारा ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करता है। मैं श्री त्रिदेव के आदेश का अक्षरशः पालन करके अन्याय की परंपरा को मिटा दूंगा।"

कालीवीर- "आप समय के पटल पर एक अमर-अमिट गाथा लिखने जा रहे हैं। हे ब्रह्मदेव! आप मेरा साधुवाद स्वीकार करें।" तत्-पश्चात् कालीवीर नें हाथ जोड़कर बावा जितमल को नमस्कार किया। इसी भांति बावा जित्तो ने भी श्रद्धा से हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। कालीवीर के अन्तर्धान होते ही बावा जित्तो ने खलिहान की राह ली। वहां पहुंचते ही लकड़ी की वह पाई तोड़ कर उसके चार टुकड़े कर दिये जिससे जागीरदार के कारिंदे अनाज मिन रहे थे। वे चारों टुकड़े तुरन्त शीशम के चार पेड़ों के रूप में परिवर्तित हो गये। यह चमत्कार देखकर भी महता वीर सिंह अपने हठ पर डटा रहा और यह इल्ज़ाम लगाने लगा कि तूने चोरी से अनाज अपने गांव भेज दिया है। बावा जित्तो तड़प उठे और बोले-

ह झूठा आरोप लगा कर तूने धर्म की मर्यादा को तोड़ा है।
लालची! पाप तो तेरे तन-मन में समा गया है, इसीलिए
यह अंट-संट बोले जा रहा है।"

तदुपरान्त महता वीर सिंह के एक लवाना जाति के
रिंदे द्वारा चमाड़ी से बावा जी की कमर में टहोका देने
बावा जित्तो का पारा सातवें आसमान को छूने लगा।
ततः तकरार बढ़ने पर बावा जित्तो ने धर्म के मार्ग पर
लते हुए अपने पेट में कटारा घोंप कर अत्याचारी शासक
अन्याय का प्रतिकार किया। खलिहान में लगा अनाज
ढेर उनके रक्त से भीग गया। बावा जित्तमल ने कहा–
रुक्खी कनक निं खायां मैह्तेआ दिन्नां मास रलाई।"

अर्थात्– हे महता, तेरे लोभ की भूख इस रूखे-सूखे
हूँ से नहीं मिटेगी। मैं इसमें अपना रक्त मिश्रित कर देता
ताकि तेरे अंदर का पिशाच तृप्त हो सके।

बावा जितमल आने वाले समय में डोगरा समाज के
सर्वाधिक समादृत व्यक्तित्व बन गये। उन्हें युग प्रवर्तक
वता के पद पर प्रतिष्ठित किया गया।

राजा और चमत्कारः कालीवीर उवाच :-

एक बार राजा मंडलीक कालीवीर के उद्यान में पधारे।
उद्यान में वृक्षों और क्यारियों की सिंचाई के लिए छोटी-
छोटी कूह्लों द्वारा जल लाया गया था। कहीं-कहीं मिट्टी की
पकाई गई गोल भूमिगत नालियों द्वारा जल ला कर पाषाण
सिंह-मुखों से गिराया गया था।

राजा मंडलीक एक सिंह-मुख के पास बैठकर प्रकृ
के सौंदर्य का आनंद लेने लगे। इस दौरान कालीवीर घूम
घामते अकेले ही उद्यान में अन्यत्र चले गए।

कुछ देर बाद सिंह-मुख से जल का प्रवाह रुक ग
और राजा मंडलीक को आवाज़ सुनाई दी— "राजन्, तु
किन बातों में खो गए। उधर देखो आम्र-कुंज में कोय
कुहक रही है।"

राजा मंडलीक ने चौंक कर इधर-उधर देखा। वहाँ आस
पास कोई न था। उन्हें लगा जैसे यह कालीवीर की आवा
हो। वे पुनः आराम से बैठ गए। किंतु तभी आवाज़ आई
"तुम सोच रहे हो मैं कौन हूँ। मुझे पहचानो तो जानूं।"

राजा को लगा संभवतया यह आवाज़ सिंह-मुख से आ
रही है। उन्होंने अविश्वासपूर्वक सिंह-मुख को देखा औ
सोचने लगे संभवतया यह कालीवीर की जादुई माया है

उन्हें असमंजस में देखकर हवा में एक ठहाका गूंजा
किंतु, आस-पास कहीं कोई न था। उन्होंने ज़ोर से हांक
लगा कर पुकारा- "कालीवीर! कालीवीर!!"

जभी चढ़ाई की ओर कालीवीर दिखाई पड़े। मंडलीक
तेज़ी से सीढ़ियां फलांगते कालीवीर के समीप पहुँचे और
बोले- "मित्र! मैं एक अनहोनी देखकर आ रहा हूँ।"

कालीवीर ने अनजान बनते हुए पूछा—"राजन! आपने
ऐसी कौन-सी अनहोनी देखी है, जिससे आप जैसा दिलेर
योद्धा भी परेशान दिख रहा है।"

मंडलीक बोले- "तुम्हारे इस विचित्र उद्यान में पत्थर का सिंह-मुख मुझ से बातें कर रहा था।"

कालीवीर पुनः हंसे—"राजन, क्या जड़ पदार्थ भी बातचीत कर सकते हैं? यदि किसी पाषाण खंड को मानव आकार में गढ़ दिया जाए तो क्या उसमें बातचीत करने की सामर्थ्य उत्पन्न हो जाएगी?"

असमंजस के स्वर में मंडलीक बोले- "बुत बात तो नहीं कर सकता, किंतु......।"

राजा की बात काटकर कालीवीर बोले- "किंतु-परंतु नहीं राजन्। जिस दिन पत्थर बातें करने लगेंगे, उस दिन पृथ्वी पर मानव का अस्तित्व महत्वहीन हो जाएगा।"

मंडलीक- "तो फिर वह चमत्कार?"

कालीवीर- "जो बात समझ में न आए वही चमत्कार होती है।"

मंडलीक- "मेरे साथ बातें कौन कर रहा था?"

कालीवीर- "मैं ही आप से बातें कर रहा था।"

मंडलीक बोले- "किंतु, आप तो मेरे से बहुत अधिक दूर थे। आपकी आवाज़ मुझ तक कैसे आ सकती है?"

कालीवीर- " सत्य तो यह है कि आवाज आप तक गई है। वस्तुतः सिंह-मुख से आपने मेरी ही आवाज़ सुनी है...... और यह चमत्कार नहीं था। अब आप यह बतलाइए कि यदि यह जादू नहीं था तो आप तक मेरी आवाज गई कैसे?"

राजा मंडलीक बोले- "यही तो मैं भी सोच रहा हूँ। मित्र, अब रहस्य से पर्दा हटा दो।"

कालीवीर बोले- "राजन्! इस उद्यान में जल प्रवाह के निमित्त गोल और लंबी नालियां बिछाई गई हैं। आपने लक्षित किया कि जब सिंह-मुख बोल रहा था, उस समय उससे जल निकलना बंद हो चुका था।"

मंडलीक बोले- "हां-हां! यह बात देख कर ही मैं अधिक चकित हुआ था।"

कालीवीर बोले- "यह कोई चमत्कार नहीं था। इस जगह बैठे-बैठे मैंने नाली में फट्टी लगाकर आपके पास वाले सिंह-मुख की ओर जा रहे जल को दूसरी ओर मोड़ दिया था। तब क्योंकि आप की ओर जा रही नाली खाली थी, उसमें मात्र वायु ही थी– इसलिए, इसके इस सिरे से मैंने आपसे कुछेक बातें कहीं, जो बंद वायु-प्रवाह से आप तक पहुँची। और आपने समझा की पाषाण का सिंह-मुख आप से बतिया रहा है।"

मंडलीक हंसकर बोले- "मैं तो समझा बैठा था कि यह उद्यान में विचरने वाली कोई शै-बला है।"

कालीवीर हंसते हुए बोले- "राजन्, इस प्रसंग द्वारा मैं आप को यह समझाना चाहता था कि जिस बात का भेद समझ नहीं आए उसे तुरंत चमत्कार या जादू मान लेने की उतावली नहीं करनी चाहिए। साधारण लोग जिसे जादू या चमत्कार कहते हैं वस्तुतः वह उनकी बुद्धि का विभ्रम होता है। अच्छे शासक के लिए आवश्यक है कि वह वस्तु जगत के भेद को समझे और चमत्कार दिखने वाली घटनाओं को बुद्धिबल द्वारा परिभाषित करे।"

ालीवीर का योगिनियों पर रोषः-

कालीवीर स्वभाव के घुमक्कड़ हैं। भय तो उनको छू ाक नहीं गया। एक बार वे निपट अकेले ऐसे वन-प्रांतर े गुज़र रहे थे जहाँ योगिनियों (अप्सराओं) का बाहुल्य ा। इससे पूर्व भी वे इस वीर पर अकेले-दुकेले जादू के ोरे डालने का प्रयास कर चुकी थीं, जिसमें उन्हें पराजय ा सामना करना पड़ा था। हर बार वे उनके जादू को छेन्न-भिन्न करके अपनी राह पर आगे निकल जाते थे। ससे अप्सराओं का सम्मान कई बार आहत हो चुका था।

अब की बार अप्सराओं ने मिल-बैठ कर निर्णय किया के हम इस वीर पुरुष की शक्ति की परख करेंगी। इस बार स पर अपनी सामूहिक शक्ति का प्रयोग करके उसे लेला भेड़ का बच्चा) बना देंगी। यह कुचक्र रचकर उन तमाम प्सराओं के समूह ने नग्न होकर और पिच्छल–पाइयों का ूप धारण करके कालीवीर का रास्ता रोक लिया। वे अपने ादू के बाण उन पर चलाने लगीं। इस पर कालीवीर बोले- 'स्त्री वर्ग पर हाथ उठाना मेरा धर्म नहीं है। इसलिए आप पना भला चाहती हो तो मेरा रास्ता छोड़ दो।''

अप्सराओं की नेत्री बोली- ''हर बार तू हमारे प्रभाव से ुरक्षित बच कर निकल जाता रहा है। किंतु, आज से तू लेला नकर रहेगा और हमारे खेतों में बैल की तरह मेहनत करेगा।'' सा कहकर कालीवीर को बांधने के लिए वह अपने जादू की स्सी लेकर आगे बढ़ी। और उनके गले की ओर लपकने लगी।

तुरंत कालीवीर ने उसे चोटी से पकड़ कर घुमाया औ
ज़ोर से क्षितिज में पटक दिया। अप्सराओं ने मिल क
कालीवीर पर हल्ला बोल दिया। कालीवीर अपनी गदा
उनकी पिटाई करने लगे। बहुत-सी अप्सराओं को उन्होंने दू
दूर तक फेंक दिया। इस तरह उनका रास्ता खाली हो गय

क्रोध में उफनते हुए कालीवीर ने घोषणा की- "आज से क
योगिनी मेरा मुंह नहीं देखेगी और न ही मेरा नाम लेगी।"

तब से यह परंपरा चली आई है कि औरतें न
कालीवीर के स्थान पर जाती हैं और न ही उनका नाम
लेती हैं। स्त्री वर्ग उनके लिए प्रायः "बड्डा बावा" शब्द
प्रयोग करता है। किंतु, जो कन्याएं तथा स्त्रियां सद्कामना
की पूर्ति के लिए उनकी पूजा करती है, वे उन पर कुल
देवता के रूप में कृपा करते हैं।

आधुनिक युग में केवल उन्हीं स्त्रियों का कालीवीर
थान पर जाना, वर्जित है जिन की कामनाएं दूषित हो
हैं। कलियुग में जो स्त्रियां एवं बालिकाएं उन्हें देव पुरु
के रूप में ध्याती एवं स्मरण करती हैं उन्हें कोई दोष न
लगता। उनके लिए प्रावधान है कि वे समुचित रूप से सि
ढाँप कर उनकी पूजा-अर्चना करें, उनकी आरती गा
मनोभावना को शुद्ध रक्खें और कुलदेवता का वरदान पा
आरती में कुलदेवता का नाम लेने का कोई दोष नहीं
क्योंकि वे साधारण देवता नहीं है। वे तो भगवान् शेष ना
का अवतार हैं, प्रबल शक्ति के पुंज हैं।

एकता और मीठा बोलने विषयक उपदेश :-

एक बार कालीवीर और राजा मंडलीक दोनों एक घने जंगल से गुज़र रहे थे। दोनों ने देखा वहाँ वृक्षों पर रंग-बिरंगे पक्षी मधुर कलरव कर रहे हैं।

राजा मंडलीक ने पूछा "यहां इतने पंछी क्यों इकट्ठे हुए हैं और यह अपनी बोली में एक-दूसरे को क्या कह रहे हैं?"

कालीवीर ने उत्तर दिया-"यह यहाँ बैठ कर एकता के गीत गा रहे हैं।"

मंडलीक ने पूछा- "एकता का क्या लाभ है?"

कालीवीर बोले- "मिल-जुल कर रहने से हमारी शक्ति बढ़ती है। अकेला रहने पर शत्रु हमें पराजित कर सकता है। किंतु इकट्ठे रहने पर आदमी प्राकृतिक बाढ़ का भी सामना कर सकता है और शत्रुओं की बाढ़ का भी। यह पंछी अपनी मीठी बोली में एकता के गुणों का बखान कर रहे हैं। जहाँ एकता होती है, वहाँ कलह रूपी नागिन नहीं घुस सकती।"

दोनों वीर मित्र आगे बढ़े तो वहाँ तीव्र दुर्गंध के झोंके ने उनके पांव रोक दिए। राजा मंडलीक ने पूछा- "यह दुर्गंध कहाँ से आ रही है?"

कालीवीर ने नज़र दौड़ा कर आगे देखा और बोले- "यहाँ हमारे रास्ते में आगे एक कुत्ता मरा पड़ा है।"

राजा मंडलीक ने पूछा- "इससे इतनी बदबू क्यों उठ रही है?"

कालीवीर ने उत्तर दिया– "इस से दुर्गंध इसलिए
रही है क्योंकि इसका मृत शरीर कई दिनों से इस स
पर पड़ा हुआ है और अब यह सड़ने लगा है।"

राजा मंडलीक ने पूछा–"यह किस कर्म की सज
कि इसे धरती की गोद नहीं मिली। इसके स्वामी ने
ज़मीन में क्यों नहीं गाड़ा।"

कालीवीर बोले– "यह श्वान निकृष्ट स्वभाव का
स्वामी के परिवार के लोगों को इसने काट खाया, हाल
वे इसे खूब चाहत से रखते थे। यह उनका घर छोड़
गांव से बाहर चला आया। फिर यह जीवन-भर पाप कम
रहा और दूसरे जीवों पर जुल्म करता रहा। दिन -रात भ
कर यह दूसरों को गालियां निकालता था। इसने क
किसी के साथ मीठी बात नहीं की। राजन्! मृत्यु के उप
संसार में मीठा बोलने वाले प्राणी की ख्याति सुगंध
भांति फैलती है, लोगों में उसकी प्रसिद्धि बढ़ती है। जब
दुष्ट स्वभाव वाला प्राणी जीते-जी दूसरों के कष्ट का नि
तो बनता ही है, मरने पर भी वह दुर्गंध देता है।"

कालीवीर से यह बात सुनकर राजा मंडलीक ने निर्णय कि
कि आगे से वह सद्कार्य अधिक करेंगे और सब से मीठा बो

कालीवीर ने मंडलीक के निर्णय का स्वागत करते
कहा कि अच्छे कार्य करने पर उन्हें सब का समर्थन मिले
तमाम लोगों का समर्थन पाकर राजा शक्तिशाली होता
सर्व शक्तिमान या चक्रवर्ती सम्राट बनने का यही पथ

स्त्री वर्ग और चंचलता :-

सैर करते-करते दोनों मित्र आगे निकल गए। वहाँ उन्हें एक नदी के पार जाना था। वहां जल में केलियां करती और नहाती हुई अप्सराएं दिखाई दीं।

दो पुरुषों को घोड़ों पर सवार देखकर अप्सराओं में हड़बड़ी मच गई। वे जल से निकल कर अपने कपड़ों की ओर भागीं।

राजा मंडलीक ने कालीवीर से पूछा- "पहले यह नग्न नहा रही थीं, किंतु, अब यह शीघ्रता में कपड़े पहन रही हैं, ऐसा क्यों?"

कालीवीर बोले- "वस्त्र से मानव अपनी इज़्ज़त संभालता है। सभ्य मनुष्य दूसरे के समक्ष नंगा नहीं होता। इसी कारण से इन अप्सराओं ने अपनी शर्म और सम्मान की खातिर अपने वस्त्र पहन लिए हैं।"

राजा मंडलीक ने पूछा- "यदि इन्हें अपनी इज़्ज़त का भान था तो यह नग्न होकर क्यों नहा रही थीं?"

कालीवीर ने उत्तर दिया- "स्त्री स्वभाव से उच्छृंखल होती है। पुरुष के आस-पास नहीं होने का आभास उसमें भय भर देता है। किंतु, यदि वह स्त्रियों के समूह में हो तो उसकी एडी में छिपी अकल उसका वास्तविक रूप दिखलाने लगती है। स्त्री का वास्तविक रूप चंचलता से परिपूर्ण होता है। इसी से वह कई बार नग्न नहाने जैसे मूर्खतापूर्ण काम कर देती है।"

राजा मंडलीक बोले- "आप तो बड़े युक्तिवान हो। ऐसी युक्ति सोचो जिससे आगे के लिए स्त्री जाति नग्न होकर न नहाए।"

कालीवीर हंसे और बोले- "इस खराबी को दूर करने के लिए मुझ से पहले मेरे पूज्य श्री हरि ने श्रीकृष्ण के रूप में गोपियों का चीर हरण करके स्त्री जाति को सीख दी थी। क्योंकि चंचल स्वभाव बिना दंड-त्रास के राह पर नहीं आता, इसलिए इस निमित्त पृथ्वी पर पहले ही पार्वती पुत्र जलवीर का जन्म हो चुका है। किंतु, जलवीर अभी पाताल लोक में मग्न हैं। कलियुग में वह धरती पर पूरा प्रभाव दिखलाएंगे। जो-जो स्त्री किसी प्राकृतिक सोते या नदी-नाले पर नग्न होकर नहाएगी जलवीर उसे प्रताड़ित करेगें। उस स्त्री के शरीर पर नीले दाग बन जाएंगे। रात्रि में उसे भंयकर स्वप्न दिखलाई देगें और अन्य कई प्रकार के कष्टों से वह त्रस्त रहेगी।"

मंडलीक को नाग दर्शन:-

और आगे बढ़ने पर वे एक सुंदर बाग में पहुँचे। अपने घोड़े एक पेड़ से बांधकर वे वहाँ घूमने लगे। एक स्थान पर कालीवीर को एक विशालकाय सर्प दिखाई दिया। किंतु, राजा मंडलीक उसे नहीं देख सके। इसलिए चलते-चलते सर्प के पास जा पहुँचे। सहसः उन्हें अपने पांव के पास सांप होने का आभास हुआ। राजा मंडलीक घबरा कर पीछे गिरे। भय के कारण उनके मुख से चीख निकल गई।

कालीवीर ने पूछा- "आप के मुख से यह चीख क्यों
र निकली?"

मंडलीक ने कहा- "यदि यह सर्प मुझे काट देता तो
काल मेरी मृत्यु हो जाती। इसी भय के कारण मेरा अपने
र वश न रहा।"

कालीवीर बोले- "यह नाग देव भगवान विष्णु का स्वरूप
। हम दोनों क्योंकि श्री हरि की परिचर्चा कर रहे थे,
सलिए यह हमें दर्शन देने के लिए प्रकट हुए थे। आपने
न-चित लगाकर श्री हरि की पूजा नहीं की होगी, आपका
यान भटक गया होगा। इसलिए प्रभु के नाग रूप में दर्शन
ने पर आप उन्हें ठीक से पहचान न पाए और पछाड़
ाकर गिर पड़े। भक्ति का तो यही विधान है, जिस प्रकार
ी पूजा-अर्चना कीजिए, उसी के अनुसार फल पाइए।"

तदुपरांत राजा मंडलीक विधिपूर्वक नाग पूजा करने
गे। आज भी राजा मंडलीक और कालीवीर दोनों के स्थानों
र धातु का बना नाग इसी प्रयोजन से रखा रहता है।

ह्म, अग्नि और जीवन:-

दोनों मित्र सैर-सपाटा करते-करते एक ऐसी वनस्थली
ों पहुँचे जहाँ एक पुराना एवं विशालकाय वट वृक्ष उगा
ुआ था। इसकी मोटी शाखाओं से निकली जड़ें धरती में
ुस कर मोटे-मोटे खंभों में बदल चुकी थीं। एक बड़े गाँव
े बराबर स्थान पर फैले इस पेड़ के नीचे सैकड़ों तपस्वी
तपस्या कर रहे थे।

राजा मंडलीक ने पूछा- "कालीवीर जी! धर्मनिष्ठ लो
वट वृक्ष को इतना महत्व क्यों देते हैं?"

कालीवीर बोले- "यह जीवन के प्रति आशा का सं
करने वाला वृक्ष है। इसके पौधे का मात्र एक मास त
पालन-पोषण करने पर यह अपनी जड़ें जमा लेता है अ
सूखता नहीं है। इस पर सहस्रों पक्षी विश्राम करते
इसके नीचे मनुष्य और पशु सभी शरण पाते हैं। धर्म
निष्ठा रखने वाले लोग इसे इस आशा से जल देते हैं तां
उनके पितरों को जल मिले। वस्तुतः जब हम नहीं थे अं
हमारे पिता या दादा भी नहीं थे शायद उस काल में हम
परदादा ने ऐसा कोई वृक्ष रोपा हो। जब हम पृथ्वी पर न
रहेंगे तब भी वट-वृक्ष रहेगा। यह वृक्ष मनुष्य में दीर्घ आ
संबंधी आशा का संचार करता है। और मानव को अप
भांति व्यापक और परोपकारी बनाने का संदेश देता है।

राजा मंडलीक ने पूछा- "मंत्रीवर! वट वृक्ष की लं
आयु का क्या रहस्य है?"

कालीवीर ने उत्तर दिया- "राजन्! वट वृक्ष ब्रह्मा का है
रूप है। एक ब्रह्मा स्वर्ग अर्थात् ब्रह्म लोक का निवासी है
दूसरा ब्रह्मा इस वृक्ष के रूप से पृथ्वी पर साक्षात् रूप
मौजूद है। इसका जन्म एक कण के समान छोटे से बीज
से होता है। उस बीज में जैसे इस का विशाल प्रतिरू
लघुतम रूप में रहता है उसी तरह पिंड रूपी पृथ्वी को
ब्रह्मांड का ही प्रतिरूप मानना चाहिए।"

राजा मंडलीक ने पूछा- "मंत्रीवर! ब्रह्म और ब्रह्मांड क्या है?"

कालीवीर बोले- "ब्रह्म अग्नि है और यह अग्नि जिस विस्तार को छूने और भरने का जतन करती है वह ब्रह्मांड है। ब्रह्मांड वस्तुतः अग्नि का घर ही है।"

राजा मंडलीक ने प्रश्न किया- "यदि वट वृक्ष भी ब्रह्म है तो यह भी अग्निमय हुआ। यदि यह अग्निमय है तो यह छाया क्योंकर दे रहा है जिसके कारण तपस्वी लोग इसके नीचे योग क्रियाएं कर रहे हैं?"

कालीवीर बोले- "राजन्, आपका कथन अक्षरशः सत्य है। वृक्ष सम्राट वट अग्नि का ही रूप है। किंतु, वृक्ष रूप में अग्नि और जल तत्व एकाकार होकर इसके ताप को शमित रखते हैं। जैसे ही किसी वृक्ष या वनस्पति से जल तत्व सूख जाता है वह सूखी लकड़ी में परिवर्तित हो जाता है, जिसे ज़रा-सी अग्नि दिखाने पर वह धधक उठती है। उस में निहित अग्नि प्रकट होकर ज्वाला बन जाती है।"

मंडलीक ने पूछा- "इसका तात्पर्य यह हुआ कि अग्नि केवल वही नहीं है जो दिखाई पड़ती है। अग्नि विभिन्न वस्तुओं में भिन्न-भिन्न रूपों में भी छिपी रहती है?"

कालीवीर बोले- "आपका अनुमान सत्य है। प्राणियों के शरीर में प्राण बन कर अग्नि ही उनकी क्रियाओं का आधार बनती है। जब प्राणी मर जाता है तो उसका शरीर ठंडा हो जाता है। इसी भांति प्राणी के शरीर में भूख के रूप

में भी यही अग्नि विद्‌यमान है। प्राणी जब पेट भर लेता है तो कुछ देर के लिए यह अग्नि छिप जाती है, परंतु जैसे ही यह भोज्य पदार्थ को हज़म कर देती है वैसे ही पुनः इसकी लपटें उठने लगती हैं। प्राणी के शरीर में अग्नि का एक अन्य रूप है काम शक्ति का। अग्नि के भिन्न-भिन्न भेदों के विभिन्न कार्य हैं।''

राजा मंडलीक ने कहा- "कृपया उन कार्यों पर प्रकाश डालें?"

कालीवीर बोले- ''भूख की अग्नि शरीर को पुष्ट बनाने का कार्य करती है। प्राणी जो भोजन इस अग्नि के अर्पित करता है वह शरीर के अवयवों को पुष्टि प्रदान करता है। इस दृष्टि से यह अग्नि स्वास्थ्य का कारणभूत है। किंतु, जो अग्नि घर की पाकशाला में जलती है वह खाद्‌य पदार्थों को खाने योग्य, स्वादू और पाचन के अनुकूल बनाने में सहायक होती है। यही अग्नि शीत ऋतु में ठंड का प्रतिरोध करने और जीवन को बनाए रखने में सहायी होती है। किंतु, सूर्य की अग्नि भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।''

मंडलीक- ''वह कैसे ?''

कालीवीर- ''यह जान लें राजन् कि फसलों के पकने और वनस्पतियों को फलने–फूलने में एक सूर्य की अग्नि ही कारणभूत है। यदि कोई व्यक्ति आम के पेड़ के नीचे आग जला कर उस के फलों को पकाने का यत्न करेगा तो उसका जतन अकारथ जाएगा। इससे या तो वह पेड़ ही जल जाएगा या सूख जाएगा, किंतु फल नहीं पकेंगे।''

राजा मंडलीक- "यदि अग्नि सभी प्रकार से जीवन के लिए लाभप्रद है तो काम अग्नि के रूप में क्या यह जीवन को विकृति प्रदान नहीं करती?"

कालीवीर- "काम अग्नि का प्रयोजन संसृति को चलाना है। इस रंग-बिरंगी सृष्टि में जीवन की सीमा मृत्यु के समुद्र से लगती है। इसलिए मृत्यु को जीतने के लिए नव-जीवन अत्यावश्यक शर्त है। काम-अग्नि जीवन को बनाए रखने का एक प्राकृतिक अस्त्र है जिससे जीवन मृत्यु का मुकाबिला करता है। किंतु, इस रहस्य को न समझ कर मानव जाति ने काम अग्नि को आनंद का साधन मानकर इसमें विकृति भर दी है। अन्यथा काम अग्नि, यज्ञ अग्नि की भांति पवित्र अग्नि है। वस्तुतः यह जीवन की ज्योति को जिलाए रखने का पावन साधन ही है।"

राजा मंडलीक ने आगे प्रश्न किया- "मंत्रीवर! इस अग्निमय वट वृक्ष के नीचे बैठकर यह तपस्वी जो तप कर रहे हैं-वह क्या है?"

कालीवीर बोले- "राजन! मानव शरीर मे विद्‌यमान अग्नियों का शमन करना ही तप है। जैसे अग्निमय वट वृक्ष अग्निगर्भ होते हुए भी आकाश से आ रहे सूर्य के ताप को रोकता है, वैसे ही तपस्वी लोग संयम, नियम आदि का पालन करके अंतस्थ अग्नि को शक्ति में बदल रहे हैं।"

राजा मंडलीक- "इस शक्ति का कोई लाभ है?"

कालीवीर- "हां लाभ तो है यदि इसे लाभ के काम लगाया जाए। एक लाभ वह है जो समस्त संसार के लिए है, दूसरा निजी स्वार्थ के लिए होता है। किंतु शक्ति तो ऐसे शस्त्र की तरह है जिस से हम अपनी प्रतिरक्षा भी कर सकते हैं और दूसरों का अहित भी कर सकते हैं। जिससे दूसरे का अहित न हो, ऐसी साधना ही सच्ची साधना है।"

राजा मंडलीक- "इतनी कठिन साधना से यह तपस्वी क्या पाना चाहते हैं?"

कालीवीर- "आम सांसारिक लोग पृथ्वी पर फैली विभिन्न वनस्पतियों की भांति हैं, किंतु, तपस्वी लोग इस वट वृक्ष की भांति हैं जो अन्य वनस्पतियों में भिन्न हैं, विशेष हैं। तपस्वी मुख्यता अमर होने की चाह से अर्थात् मोक्ष प्राप्ति की इच्छा से इस कठिन मार्ग को अपनाते हैं। उनका विश्वास है कि राम नाम लेकर और पूर्ण जीवन बिता कर मृत्यु के समुद्र पर पुल बांधा जा सकता है।"

राजा मंडलीक-"क्या यथार्थ में ऐसे पुल का निर्माण संभव है?"

कालीवीर- "जब सरिता पर पुल नहीं था तब इस को पुल द्वारा पार करने की कल्पना हास्यास्पद लगती थी। किंतु, जब दो बल्लियों को उस सरिता के उंचे किनारों पर रख कर पार करने का प्रबंध बन गया तो यह साधारण-सी बात दिखने लगी। इसी तरह मानव-मेधा का मन्थन करने पर मृत्यु के समुद्र पर पुल बांधना असंभव नहीं है।

पस्या का एक रूप आत्म- मन्थन का है और दूसरा मेधा-
न्थन का। यह दोनों मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं।

र्म और उसका फलः गुरु गोरखनाथ से वार्ता :-

वार्तालाप करते हुए राजा मंडलीक और कालीवीर वट
क्ष के नीचे बसे तपस्वियों के शिविर से दूर निकल आए।
ास्ते में उन्होंने देखा लूले-लंगड़े, काने, अंधे और कटे-फटे
ंगों वाले भिखारियों का दल कहीं जा रहा था। इस दल
ें चर्म रोगी और कोढ़ी भी थे।

राजा मंडलीक बोले- "मित्र! यों लगता है जैसे किसी
े इनसे पूर्ण मनुष्य होने का अधिकार छीन लिया है।"

कालीवीर ने नम्रता से कहा- "सृष्टि में हर कोई
कर्म-फल भोग रहा है।"

राजा मंडलीक- "प्रायः यह भी देखने में आया है कि
जिसके टांगें नहीं हैं वह कहीं जाने की उतावली में है। वह
घिसट कर या लौट कर कोसों दूर जाना चाहता है। जिसके
आँखें नहीं है, वह भी पत्थर से ठोकर खाने या खड्डे में
गिरने के भय को भूल कर कहीं चल पड़ने को उतावला है।
अपनी क्षमता को भूल कर यह लोग अकेले या दल बांधकर
निकले रहते हैं। यह कहीं एक जगह बस क्यों नहीं जाते ?"

कालीवीर- "राजन! गति जीवन की प्रतीक है। जब तक
श्वास हैं तब तक प्राण चलना चाहते हैं। घायल होने पर भी
पक्षी उड़ने के लिए पंख फड़फड़ाता है? और देखो यह तमाम
पक्षी दल बांध कर कहाँ चले जा रहे हैं? यह अपने घोंसलों

से क्यों बाहर निकल आते हैं? व्याध का इन्हें भय क्यों
है? जब तक प्राणि में स्पंदन है, वह चलना चाहता है।
मानो कि यह भिखारी लोग एक स्थान पर एक गांव
कर बस जाते हैं। उस दशा में इनके जीवन की आवश्यक
कौन पूरी करेगा? इन्हें भी इस बात का भान है कि क
फल के कारण इनके जीवन में अभाव आया है। यह
यात्रा के मोह में यहाँ-वहाँ भटक रहे हैं ताकि अगले ज
में यह ऐसे अभावपूर्ण जीवन से मुक्त रहें। और मित्र मा
जीवन का तो यह नियम ही है, जो जिसके पास नहीं है
उसे पाने के लिए गतिशील है।''

राजा मंडलीक ने पूछा- ''मित्र! वे कैसे कुकर्म
जिनके कारण मनुष्य ऐसा जीवन जीने के लिए वि
होता है जैसा कि यह भिखारी लोग जी रहे हैं?''

कालीवीर मुस्कुरा कर बोले- ''कर्म फल संबंधी इ
प्रश्न का उत्तर हमें गुरु गोरखनाथ जी से मिलेगा, जिन
आश्रम के समीप हम इस समय खड़े हैं।''

पहाड़ी पर बनी यज्ञशाला में बैठे गुरु गोरखनाथ अप
शिष्यों के संग ज्ञान-गोष्ठी में निमग्न थे। अपने घोड़ों
नीचे बांधकर वे यज्ञशाला में उपस्थित हुए। गुरु गोरखना
और अन्य साधुओं को प्रणाम करके राजा मंडलीक औ
कालीवीर ने अपना-अपना परिचय दिया।

गुरु गोरखनाथ आशीष देकर बोले- ''यह अत्यंत शु
घड़ी है जब दो दुर्धर्ष योद्धाओं की जोड़ी हमारे आश्रम
पधारी है। आपका ज्ञान गोष्ठी में स्वागत है।''

कालीवीर ने गुरु गोरखनाथ को पुनः प्रणाम करके निवेदन किया- "गुरु देव! हम इधर से गुजर रहे थे, इसलिए आपके दर्शन का फल पाने के लिए यहाँ चले आए। महात्मन्, जब हम इधर आ रहे थे तो रास्ते में लाचार भिखारियों के दल देख कर हमारे राजा के मन में कुछ प्रश्न उभरे हैं। उन प्रश्नों का संबध मनुष्य के कर्म-फल से है। आप कृपया उन प्रश्नों का समाधान दीजिए।"

गुरु गोरखनाथ बोले- "राजन्! आपके प्रश्नों का समाधान देकर मुझे खुशी होगी। आप अपनी शंकाएं व्यक्त करें।"

राजा मंडलीक ने पूछा- "प्रभु! पृथ्वी पर कोई मनुष्य गोरा है और कोई काला! क्या यह पूर्व जन्म के कर्मों का फल है?"

गोरखनाथ मुस्कराए और बोले- "न-न राजन्! जीवन में जहाँ धूप का महत्व है वहीं छाया भी कम आवश्यक नहीं है। जीवन के लिए दिवस भी जरूरी है और रात्रि भी। यदि चर्म के वर्ण से पुण्यशील और पापी की पहचान होती तो संसार के गोरांग व्यक्ति ही पुण्यात्माएं कहलाते और पापियों का रंग काला होता, किंतु, वास्तव में ऐसा है नहीं। भगवान विष्णु, भगवान शिव, भगवान राम और भगवान श्रीकृष्ण का रंग काला है। इसलिए, काले रंग का महत्व गोरे रंग के समान ही है।"

राजा मंडलीक ने ठिठोली की- "तो प्रभु, हमारे कालीवीर जी का रंग काला क्यों है?"

गुरु गोरखनाथ बोले- "कालीपुत्र कालीवीर जी कलियुग में पापियों का नाश करने के लिए अवतरित हुए हैं। वे

साक्षात् शिव का अंश हैं–शेषावतार हैं। इनका सांवला शो
श्रद्धालुओं के हृदय को हरने वाला और दुष्टों को भय देव
वाला है।''

राजा मंडलीक ने पूछा- ''प्रभु! भिखारियों के दल
कुछ लोगों को फूलबहरी का रोग था और कुछ कोढ़
ग्रस्त थे। इन लोगों ने ऐसे क्या कर्म किए थे जिनके कार
उन्हें ऐसे दुःसाध्य रोगों से वास्ता पड़ा?''

गोरखनाथ बोले- ''राजन्! जो व्यक्ति एक जन्म
''मोर'' आदि पक्षियों को मारने का पाप करता है व
अगले जन्म में फूलबहरी के रोग से ग्रस्त हो जाता है
और जो व्यक्ति घोंसले में छोटे-छोटे बच्चों को पाल र
पक्षियों का वध करता है और उन्हें निःसहाय बना देता है
अगले जन्म में उसके हाथ-पैर आदि गल जाते है। व
कोढ़ी हो जाता है।''

राजा मंडलीक ने पूछा- ''प्रभु, पापी को तुरंत उसके
किए का फल क्यों नहीं मिलता। उसे अपने पापों का दं
पाने के लिए एक जन्म तक प्रतीक्षा क्यों करनी पड़ती है?''

गुरु गोरखनाथ ने उत्तर दिया- ''जब तक प्राणी के पू
जन्म के पुण्यों का क्षय नहीं हो जाता, तब तक वह इस जन्म
के पापों के दंड से बचा रहता है। किंतु, जिन लोगों के पुण्
इसी जन्म में समाप्त हो जाते हैं, उन्हें अपने पापों का दं
पाने के लिए अगले जन्म तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। उन्हें
तुरंत उनके किए का फल मिल जाता है। इसीलिए बुद्धिमान

ोगों ने कर्म फल की व्याख्या के लिए कहावत गढ़ी है-
करनी-भरनी आपको, नेईं माई को ना बाप को।''

तत्पश्चात् गुरु गोरखनाथ को प्रणाम करके दोनों मित्र
पने यात्रा-पथ पर आगे बढ़ने लगे।

ालीवीर कथनः

र्म और श्रम ही भाग्य ही के निर्धारक :-

अब की बार कालीवीर और राजा मंडलीक एक लंबे
रान और उजाड़ इलाके से गुज़र रहे थे। मंडलीक को
ज़ भूख लगी हुई थी। किंतु, वहाँ न तो भोजन था और
ही फलदार वृक्ष।

राजा मंडलीक ने अपनी परेशानी बतलाई तो कालीवीर
ले- ''एक अच्छे राजा का कर्तव्य है कि वह अपने राज्य
घनी छाया वाले वृक्ष लगवाए और साथ ही फल देने
ले पेड़-पौधे भी लगवाए ताकि पथिकों को सुविधा हो।''

राजा मंडलीक बोले- ''यह आप ने सत्य कहा है,
त्र। किंतु, सब कुछ राजा ही क्यों करवाए, कुछ बातें
गवान के लिए भी छोड़नी चाहिएं।''

कालीवीर हंसे और बोले- ''जो बातें भगवान ने मानव
लिए छोड़ी हैं, उन्हें मानव को ही करना चाहिए।''

राजा मंडलीक ने पूछा- ''आप उदाहरण देकर
मझाएं।''

कालीवीर बोले- ''भगवान ने मनुष्य को जन्म दिया है।
सलिए कर्म भी मनुष्य को करना है। मेरे कहने का

तात्पर्य यह है कि जैसे इस समय आप को भूख लगी
तो इसका शमन करने का उपक्रम भी आपको ही क
होगा।"

राजा मंडलीक बोले- "मित्र! और बातें तो आ
ठीक है, मगर मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ कि आ
के प्रयत्न से उसकी समस्या हल होती है। अब इस वी
में जब भूख की अग्नि आमाशय को जला रही है, तब
स्थान पर न तो कोई मानवीय उपाय कारगर हो स
है और न ही कोई दूसरा उपक्रम। ऐसे में मेरा मानन
कि हर हालत में ईश्वर ही हमें दाना-पानी देता है।"

कालीवीर बोले- "यदि बिना काम-धाम किए भो
मिल जाए तो काम और परिश्रम की आवश्यकता ही न
जाए। न खेतों में फसलें बोई जाएं और न ही रसोई
भोजन पकाया जाए।"

राजा मंडलीक ने पूछा- "तो क्या भगवान् ने म
को जन्म देकर ऐसे ही छोड़ दिया है?"

"सत्य कुछ ऐसा ही कड़वा है।" कालीवीर ने क
"आदमी भाग्य लेकर आता है और पृथ्वी पर कर्म क
है। बिना हाथ-पांव डुलाए, बिना अगले पल की चिंता कि
बिना कल की सोचे कर्म का परिणाम नहीं मिलता।"

राजा मंडलीक एकाएक रुके। वहाँ उन्हें एक वीरान
दिखाई दिया। वह बोले- "देखो भगवान ने हमारे भो
का प्रबंध कर दिया।"

कालीवीर ने देखा घर के आंगन में एक ओर सुंदर
आ है जिसके समीप एक रस्सी और घड़ा पड़ा हुआ
। वह बोले- "मैं पीने के लिए पानी निकालता हूँ। आप
र में जाकर देखिए कि यहाँ कोई है भी या घर उजाड़
।"

कुछ देर में राजा मंडलीक बाहर आए, और बोले-
घर में कोई मानुस नहीं है। घर के भीतर खाने-पीने को
कुछ नहीं है। आटा-चावल कुछ नहीं......।"

कालीवीर हंसकर बोले- "यदि घर में अन्न-दाना होता
वे लोग खुले कपाट छोड़ कर क्यों जाते?"

राजा मंडलीक ने कहा- "आप चूल्हे में अग्नि प्रज्वलित
जिए। मैं इस पर जल से भरा पतीला रखता हूँ।"

कालीवीर ने पूछा- "आप गर्म जल का क्या करेंगे?"

राजा मंडलीक – "जिस प्रभु ने जल का प्रबंध किया है
चावल भी भेजेगा, जिन्हें उस जल में उबाल कर हम
पनी भूख शांत करेंगे। बिना खाए अब एक कदम चल पाना
संभव नहीं है।"

कालीवीर को हंसते देख कर राजा मंडलीक ने पूछा-
मित्र, तुम हंसे क्यों?"

कालीवीर बोले- "चावल कहाँ से आएंगे- यही सोच
र मुझे हंसी आ रही है।"

राजा मंडलीक ने कहा- "हम जल को तो उबालें,
वर स्वयं कोई प्रबंध करेंगे।"

कालीवीर ने जल से भरा पतीला अग्नि पर चढ़ा दि
जल उबलने लगा। राजा मंडलीक की भूख असह्य
लगी। समय व्यतीत होता गया, किंतु, कहीं से कोई भी
भर चावल लेकर प्रकट न हुआ।

हताश होकर मंडलीक बोले- "लगता है सचमुच
नहीं आएगा।"

कालीवीर बोले- "हमने न तो यहाँ खेतों में फसलें लग
है और न ही यहाँ कहीं अन्न का भंडार गाड़ रखा है-
स्थिति में कौन हमारे लिए चावल आदि लेकर आएगा?
अन्न का अभाव न होता तो यह क्षेत्र इतना वीरान क्यों होत

राजा मंडलीक ने देखा पतीले का तमाम पानी स
हो चुका है। उन्होंने कालीवीर से पूछा- "मित्र जो पानी
उबाल रहे थे, उसका क्या हुआ?"

कालीवीर बोले- "अग्नि की उष्णता ने उसे भाप बना डाल

राजा मंडलीक- "भाप कहाँ गई?"

कालीवीर- "भाप हवा में उड़कर बादलों में समा गई

राजा मंडलीक- "जब बादल बरसेंगे तो क्या भाप
नीचे आएगी?"

कालीवीर- "हाँ जल कण बनकर आएगी।"

राजा मंडलीक- "यह ऊपर क्या करने जाती है?"

कालीवीर- "वाष्प, जल और अग्नि का मिश्रण है।
आकाश में जाकर सूर्य को उसकी गर्मी लौटाती है- है
पुनः धरती पर बादल बनकर बरसती है।"

राजा मंडलीक- "अब सहसा मेरी भूख बिना कुछ खाए ही मिट गई है।"

कालीवीर- "जैसे आग भटक कर धीरे-धीरे शमित हो जाती है, जैसे वाष्प कण उच्च आकाश में पहुँच कर अपनी अग्नि खो देते हैं; वैसे ही भूख की अग्नि भी चरम पर पहुँच कर ठंडी हो जाती है।"

तब बात को बदलते हुए कालीवीर बोले- "अब उठिए राजन और आगे की ओर प्रस्थान कीजिए। ताकि दुबारा भूख की आग भटकने से पूर्व हम पास के किसी नगर या गांव में पहुँच जाएं, क्योंकि आपने देख ही लिया है ईश्वर भी बिना कर्म किए भोजन नहीं देते। कोई चाहे सारी उम्र अपने पतीले में जल उबालता रहे; ईश्वर किसी को उसके लिए चावल देकर नहीं भेजेंगे।"

राजा मंडलीक और कालीवीर में तत्व चर्चा:-

दोनों मित्र नदी में स्नान कर रहे थे। कालीवीर एक खाली घड़ा पानी में उल्टा डुबोकर और उसे पेट के नीचे रख कर तैरने लगे और हाथ-पैर हिलाते हुए आगे-पीछे जाने लगे।

राजा मंडलीक ने पूछा- "कालीवीर जी! क्या कारण है कि यदि कोई ठीकरी पानी में डाली जाए तो वह एकदम पानी मे डूब जाती है, जबकि घड़ा न केवल स्वयं ही तैरता रहता है, बल्कि यह दूसरे को भी तैरने में सहायक होता है?"

कालीवीर बोले- "खाली घड़े के पेट में हवा होती है राजन्। उल्टा घड़ा रखे जाने पर घड़े के तंग मुंह से हवा बाहर नहीं निकल पाती, जिसके कारण यह तिरने की अवस्था में रहता है। जब इसमें जल भरा जाए तो जल हवा को बाहर निकाल देता है। तब अपने भार के कारण घड़ा जल में डूब जाता है।"

राजा मंडलीक ने पूछा- "मंत्रीवर! वायु की गति तीव्र है अथवा जल की?"

कालीवीर बोले- "जल का संबंध पृथ्वी तल और भू से अधिक है, जबकि वायु का संबंध आकाश से ज़्यादा है। वायु की तुलना में जल भारा होता है और गति की अवस्था में इसे भूतल की रुकावटों से पार पाकर चलना होता है, जबकि वायु कि गति में अवरोध कम ही होते हैं। इसलिए, वायु की गति जल से अधिक होती है।"

राजा मंडलीक ने पूछा- "पृथ्वी पर जल अधिक है या वायु?"

कालीवीर बोले- "यह दोनों सम मात्रा में है, राजन्। जल प्रायः अधिक दिखाई पड़ता है, क्योंकि वह नेत्रों द्वारा अनुभव में आ जाता है, जबकि वायु वृक्षों के हिलने, आंधी के चलने आदि कार्य-व्यापारों से अनुभव-गोचर होती है। किंतु, इन दोनों तत्वों की मात्रा समान है जिसमें प्रत्येक तत्व का दूसरे से समत्व बना रहता है।"

राजा मंडलीक ने पूछा- "पृथ्वी पर धर्म का प्रसार अधिक है या अधर्म का ?"

कालीवीर ने उत्तर दिया- ''यह अनुपात युगानुरूप बदलता ता है। कभी पुण्य की मात्रा बढ़ जाती है और कभी पाप की।''

राजा मंडलीक- ''क्या प्रभु ने पाप और पुण्य को सम त्रा में नहीं रखा?''

कालीवीर मुस्कुराए और बोले- ''प्रभु ने मानव को र्म की स्वतंत्रता प्रदान करके उसे अपनी इच्छानुसार पाप र पुण्य के बीज बौने की क्षमता प्रदान की है। जो जैसा ता है, वह वैसा काट लेता है। इसलिए पाप और पुण्य वर द्वारा निर्मित नहीं हैं, बल्कि यह मानव की रचना हां इनके एवज़ में उसे दंड और पुरस्कार देने का ान विधि ने अपने हाथ में रखा है।''

ले देखो फिर उचरो :-

राजा मडंलीक और कालीवीर नहा-धोकर घर पहुँचे। सुबह का भोजन पकाने का काम कालीवीर की पत्नी संभाला हुआ था। किंतु, आज प्रातः ही वे अपने मायके ओर चली गई थीं, इसलिए राजा मंडलीक की पत्नी ं भोजन पका रही थीं।

राजा मंडलीक चौके में भोजन खाने गए तो भोजन ाने वाली स्त्री की ओर देखे बिना पूछने लगे–''भाभी रोटी में आज क्या-क्या पका है?''

रानी चुप रहीं।

तब कालीवीर बोल उठे- ''भइया, यह तुम्हारी भाभी , तुम्हारी पत्नी है।''

राजा मंडलीक ने कहा- "सदा भाभी ही रोटी ब
है, मैंने समझा आज भी वही पका रही होंगी।"

कालीवीर बोले- "राजन्! बिना किसी को ठीक से
या पहचाने संबोधन नहीं देना चाहिए। यदि ऐसी मनः ि
में हम शत्रु को मित्र समझ लें तो संकट में पड़ जाएं

राजा मंडलीक बोले- "आपने यह बड़ी उपयुक्त स
दी है। आगे से मैं ठीक से देख-भाल और परख क
अपनी धारणा बनाऊंगा।"

उद्यान आरोपण के शौकीन कालीवीरः-

तब धरती पर पेड़ और पौधे बहुत कम थे। काली
ने एक विस्तृत खाली भू-खंड पर गोबर फैला कर उस
विभिन्न प्रकार के बीज बिखेर दिए। इस क्षेत्र में वनस्पा
के डंठल लहलहाने लगे। पानी देने के लिए नदी से कू
लाई गईं। इस भू-खंड पर वन आरोपित हो गए।

एक बार राजा मंडलीक और कालीवीर इस वन
ओर चले आए। राजा अयोध्या नगरी में इतने सुंदर
पौधे देख कर चकित रह गए और कालीवीर से बो
"इतने पेड़-पौधे तो मेरे सम्पूर्ण राज्य में नहीं हैं जि
आपके इस अकेले बाग में हैं। ऐसा क्यों?"

कालीवीर ने कहा- "मित्र तुम्हारी जिज्ञासा का उत्त
ज़रूर दूंगा। किंतु, पहले आप बतलाओ कि अन्य प्राणि
पेड़-पौधों से अन्न-फल आदि लेकर पल जाते हैं, किंतु,
पौधे क्या खाते हैं?"

राजा मंडलीक बोले- "मित्र इनका मुख कहाँ है जो यह खाएं या पिएंगे?"

कालीवीर हंसे और बोले- "इनका मुख धरती में गड़ी जड़ें है।"

राजा मंडलीक- "फिर यह क्या खा कर पलते हैं?"

कालीवीर- "अपनी इस जिज्ञासा का उत्तर पाने से पूर्व मेरे एक अन्य प्रश्न का उत्तर दें। आप बतलाएं, जीवन का आधार क्या है?"

राजा मंडलीक- "मैं अपनी हार मानता हूँ, अब आप ही इस तथ्य पर प्रकाश डालें।"

कालीवीर- "जीवन का आधार है जल, अग्नि और वायु। जल के बिना प्राणि भी मर जाता है और पेड़ भी। प्राणि की नाड़ियों में बहने वाले रक्त की धीमी आंच उसे जीवित रखती है। इसी भांति सूर्य की अग्नि धूप के रूप में पेड़-पौधों को जीवित रखती है। जैसे दूध में घी मिला रहता है, वैसे ही लकड़ी में आग छिपी रहती है। वायु दो प्रकार की है एक शुद्ध हवा जिससे मनुष्य आदि प्राणि जीवित रहते हैं, दूसरी अशुद्ध हवा जिसमें कीड़े और वनस्पतियां जीवित रहती हैं। इसलिए पेड़-पौधों के बढ़ने-फलने के लिए जल संचित भूमि, धूप और गोबरीली वायु होना जरूरी है।"

राजा मंडलीक – "प्राणी जगत के लिए वृक्ष संपदा स्वर्ण राशि से भी अधिक मूल्यवान है।"

कालीवीर – "आपने सत्य कहा महाराज! वनस्पति जगत प्राणी जगत के अपार सुख और समृद्धि का साक्षी

है। जहां पेड़-पौधों की देख भाल और सुरक्षा की जाएगी वहाँ सुख और ऐश्वर्य सदा वास करेंगे। यह वनस्पतियां ही हैं जो धरती को स्वर्ग के तुल्य बना देती हैं।''

मंडलीक गाथा में चित्रित कालीवीर :-

जम्मू प्रांत में राजा मंडलीक विषयक गाई जाने वाली डोगरी लोक-गाथाओं में कालीवीर की महत्त्वपूर्ण भूमिका चित्रित की गई है। लोकगाथा- कार ने कालीवीर को राजा मंडलीक के मंत्री एवं अनन्य मित्र के रूप में चित्रित किया है। इस गाथा में कालीवीर के पूर्ण जीवन चरित का पता तो नहीं चलता, किंतु, उनकी युवावस्था के कुछेक प्रसंगों की जानकारी प्राप्त होती है। जिनमें वे मंडलीक के परामर्शदाता तथा एक योद्धा के रूप में सामने आते हैं।

जब राजा मंडलीक को राज-पाठ देकर राजा नियुक्त किया गया तो उन्हें पता चला कि इस धरती पर उनके संग एक अद्‌भुत घोड़ा भी पैदा हुआ था। ''नीला'' नामक इस घोड़े को माता बाशल ने मंडलीक से छिपा कर रखा हुआ था। इस अश्व को प्राप्त करने की लालसा में कालीवीर को संग लेकर वे माता के पास उसके महल में गए। और उस से शिकायत भरे लहज़े में कहा- ''माता! हमें अपना राज्याधिकार तो मिला, किंतु, नीला नामक घोड़ा नहीं मिला। उसे आपने हम से कहीं छिपा कर रखा है। उस अद्‌भुत घोड़े के बिना मेरा राजा कहलाना व्यर्थ है। लोग-बाग तो यहां तक कहते हैं कि बेटे की तुलना में आपको नीला अधिक प्यारा

है। नीला न मिल पाने का दुःख मेरे हृदय को कचोट रहा है। इस दुःख के मारे हम गुरु गोरखनाथ की शरण में चले जाएंगे। वहीं कान छिद्वा कर मुंदरें डाल लेंगे और साधुओं की जमात में शामिल हो जाएंगे।"

माता ने मंडलीक की एक न सुनी तो वह रुक कर बारहदरी में आ गए और चलते हुए कहते गए– "यदि आपको नीला इतना प्यारा है तो उसी से आप राज-काज चलाइये। अब मुझ से यह कार्य नहीं होगा।"

माता बाशल ने कालीवीर से कहा- "तू अपने मित्र मंडलीक को मनह कर दे कि वह भावुकतावश कोई ऐसी-वैसी हरकत न करें।"

कालीवीर बोले- "राज माता! नीले घोड़े जैसे वेगवान अश्व की सवारी की पूरी योग्यता आपके बेटे में है। उस घोड़े के बिना वह अपने आपको अधूरा मानता है। वह राज पुत्र है, एक बार रूठा तो अपनी बात मनवाए बिना मानेगा नहीं, इसलिए आप उन्हें उनका नीला घोड़ा भेंट कर ही दें।"

माता बाशल ने कालीवीर का तर्क स्वीकार करके मंडलीक को बुला लाने को भेजा। कालीवीर मंडलीक के पास पहुँचे, हाथ जोड़ कर जयदेवा बुलाई और यह शुभ समाचार सुनाया कि माता ने आपका नीला आपके हवाले करने का निश्चय कर लिया है। इसलिए हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ राजा! आप कृपा करके उनके पास चलिए। अपने वाहन पर सवार होइये और गौड़ बंगाल की ओर भ्रमण के लिए प्रस्थान कीजिए।"

मंडलीक अपनी माता के पास लौट आए। माता बाशला ने घुड़साल में सुरक्षित नीले घोड़े को बाहर मंगवाया। तब इस की दुम और पैरों को मेंहदी से रंगा गया। फिर काले रंग की पखरैत (पक्खर) डाल कर मुंह में लगाम डाली गई। इस पर सवार होकर मंडलीक ने इस की चाल को परखा। कुंभ पर रखी कांसे की थाली पर जैसे समताल बजाया जाए, कुछ वैसी ही हृदयहारी चाल दिखा कर नीले ने सब का मन मोह लिया।

इसके पश्चात् नगाड़े पर तीन चोटें करके शिकार पर जाने की घोषणा की गई। मंडलीक और कालीवीर के अंग-संग उनकी तमाम मित्र-मंडली तथा रोना भी शिकार के लिए चल पड़ी। तब सूने नगर (दुद्धनेरा) पर विदेशी आक्रमण की आशंका के कारण सेना को रास्ते से वापिस भेज दिया गया। तदुपरान्त कालीवीर, नाहर सिंह और राजा मंडलीक तीनों सिन्धु नदी को पार करके बंगाल में आ पहुँचे। वंगाल देश में सुंदर हिरनों को कुलांचें भरते देख कर मंडलीक के हृदय में अपार खुशी समा गई। वहां बहत्तर हाथ ऊंची दीवारों से घिरे एक बाग को देख कर कालीवीर ने अपने काले घोड़े को दौड़ाया और खेल ही खेल में दीवार पार करके बाग में चले गये।

किन्तु, ऊंची दीवार समाने देख कर मंडलीक का हृदय बैठने लगा। वह चिन्ता में डूब गए कि परदेस में प्राण त्यागने पड़ेंगे। इस मुश्किल की घड़ी में नीले ने इस ऊंचे परकोटे को

र करने की विधि स्वयं राजा मंडलीक को बतलाई, जिसके
रा मंडलीक भी बाग में प्रवेश कर गये। वहां पहल से ही
जूद कालीवीर ने आकर अभिवादन किया तो हताशा की
नोस्थिति से गुजर चुके राजा मंडलीक ने कालीवीर से कहा-
हे मित्र, कालीवीर! परदेस में आपको इस तरह मेरा साथ
ड़ कर नहीं जाना चाहिए था। मैं तो समझा था कि आप
रे साथ धोखा करके कहीं दूर जा चुके हैं।''

कालीवीर ने हंसते हुए उत्तर दिया- ''मित्रवर! मैं दूर कहाँ
। आप आंखें मींच कर देखते, मैं आपसे दूर नहीं था। जो मेरे
ग चलता है मैं उसका साथ नहीं छोड़ता। इस कठिन बाधा को
र करने के पीछे मेरा अभिप्राय था कि आप निःशंक होकर
रे पीछे-पीछे चले आइए। आपके मार्ग की तमाम बाधाएं दूर
जाएंगी। दुर्भाग्यवश आप यह अभिप्राय समझे नहीं।''

इसके उपरान्त राजा मंडलीक की भेंट रानी सिरगला से
ई। दोनों चौंपड़बाज़ी खेलने लगे। राजा मंडलीक मायावी
रगला से हारने लगे। अपने राजा को पराजित होते देखकर,
लीवीर ने उनके कंधे पर अपना हाथ रखा। अब पासा पलट
या और राजा मंडलीक निरंतर जीतने लगे। सिरग़ला की
माम दासियों को जीतने के उपरांत राजा ने सिरगला को
ी जीत लिया। प्रेम की मनुहार विवाह तक पहुँच गई।

तब विवाह की यथोचित विधि का पालन करने के
यदे से राजा मंडलीक अपने राज्य गढ़ दुद्धनेरा को लौट
ाए। तत्पश्चात् रानी सिरगला के पिता राजा सीतल ने

नंददेव पुरोहित को अपनी बेटी का रिश्ता करने के
गढ़ दुद्धनेरा भेजा। रास्ते में उसकी भेंट मंडलीक के
भाइयों अर्जुन, सुर्जन से हुई। कुटिल स्वभाव के
उन्होंने पुरोहित को नाममात्र की दक्षिणा दे कर उसके
वापिस भेज दिया। इससे रानी सिरगला ने समझा
उसका माथा किसी रूखे और कंजूस राजा से लगा है
बेहद दुःखी हुई। तब उसके पिता ने पुरोहित को पुनः
निर्देश के साथ वापस भेजा कि वह राजा मंडलीक
तिलक दे कर ही लौटे। सफर की कठिनाइयों से
पुरोहित दुद्धनेरा की राह हो लिया।

रास्ते में आखेट के लिए निकले कालीवीर और
मंडलीक को पुरोहित नंददेव दिखाई पड़ा। कालीवी
तुरन्त उसे पहचान लिया। और राजा मंडलीक से कहा
यह तो वही पुरोहित है, जिसकी पाकशाला में हमने भो
किया था। तब पुरोहित से बातचीत करके उसका
सम्मान किया गया।

दोनों ओर विवाह की तैयारियां होने लगीं। जब बा
चली तो कालीवीर और नाहर सिंह को राजा मंडलीक
शहबाला बनाया गया। किन्तु, केलूवीर को इस आधार
बारात से निकाल दिया गया कि वह आँख का कान
और इसलिए वह बारात में शोभा नहीं पाएगा। इ
केलूवीर के आत्माभिमान को ठेस पहुंची, अतः शादी
विघ्न डालने के उद्देश्य से उसने पाताल के राजा वा

से भेंट करके उन्हें भटकाया और कहा– "मातृलोक में राजा मंडलीक तुम्हारी मंग ब्याहने जा रहा है।'

वासुकि के आदेश पर अष्टकुली नागों ने ऐसी व्यूह रचना रची जिसे देखकर राजा मंडलीक घबरा उठे। उन्होंने कालीवीर को इस मुसीबत का उपाय करने को कहा। कालीवीर ने अपने छोटे भ्राता केलूवीर को चतुराई पूर्वक बारात में सम्मिलित होने के लिए मना लिया। और नागों की समस्या का निदान करने का आदेश दिया। केलू ने ऐसी कल दबाई कि नाग भीष्ण अग्नि की ज्वाला में जलकर भस्म होने लगे। उनका पीछा करती यह आग पाताल तक जा पहुँची।

बारात आगे बढ़ चली। रास्ते में एक स्थान पर शाह सिकन्दर की बेटी नूरवती ने राजा मंडलीक को लुभाने के लिए बारात के आगे हिरणों के झुंड छोड़े। मंडलीक जो कि शिकार के बेहद शौकीन थे हिरणियों के झुंड को देख कर ललचा गए। उन्होंने कालीवीर से कहा- "इन हिरणों को मैं जाने नहीं दूंगा।" ऐसा कहकर अपना घोड़ा उनके पीछे दौड़ा दिया। नूरवती से भेंट होने पर मंडलीक को पता चला कि वह उनसे शादी करना चाहती है। नूरवती द्वारा रचित इन्द्रजाल को तोड़ कर राजा मंडलीक बारात सहित बंगाल पहुंचे। आगे रानी सिरगला ने उद्यान में जादू-मंत्र लिखी चटाइयां बिछा रखी थीं। मिलनी की रसम के उपरान्त जब बारात के लोग इन चटाइयों पर बैठे तो वे भेडू बन गये। जहां

तक कि इस बारात के मुख्य अतिथि भगवान भोले ना
जादू के प्रभाव से न बच सके। वह भांग ही घोंटते रहे। इ
पीने की सुध उन्हें नहीं थी।

छत्रवेदी अनुष्ठान के समय दूलहे को साथ लेक
कालीवीर महलों में गये तो वहां जादूकला में पारंगत रा
सिरगला को सबक सिखाने के लिए कालीवीर ने उ
भीषण सरदर्द लगा दी। वह भयानक पीड़ा से तड़प उ
और चिल्लाने लगी- "अब मैं न बचूंगी।" महलों में खुश
के स्थान पर मातम का सा वातावरण छा गया। त
कालीवीर ने सिरगला के पिता राजा सीतल से कहा कि
आप सिरगला पर एक बक्करा वारिए, वह ठीक हो जाएगी
ऐसा उपक्रम करने से सिरगला का सरदर्द जाता रहा।

पहाड़ी क्षेत्र में प्रचलित एक अन्य लोक-गाथा के अनुसा
जब राजा मंडलीक की बारात गढ़ दुद्धनेरा से बंगाल की
ओर प्रस्थान करने की तैयारी कर रही थी तब बहन गुगड़ी
ने ताना मारा कि-

"तेती करोड़ जान्नी राजे दी,
भैनू ने बोल्ली लाई।
गोरे-गोरे जान्नी सोभदे,
काली सोभदा नाईं।"

बहन ने कहा कि बारात में गोरे-गोरे लोग जाएंगे
काली रूठ कर पीछे रह गए। इस दृष्टि से केलूवीर का
कथानक कालीवीर से भी लगभग उसी प्रकार से घटित

ा है। इस गाथा के अनुसार जब राजा मंडलीक और
के बाराती वापस न लौटे तो बहन गुगड़ी को चिंता हुई।
र गढ़ दुद्धनेरा पर आक्रमण हो चुका है, उधर राजा
लीक और तमाम बाराती भेडू बने बंगाल के आतिथ्य
ी जादू से जकड़े हुए हैं। तब गुगड़ी ने कालीवीर को
ाल भेजा। कालीवीर ने वहां जाकर "आलख" (अलक्ष्य
रंजन) की हांक लगाई जिसके प्रभाव से तमाम भेडू और
ररू पुनः होश में आ गए और मानव बन गए। एक अन्य
नश्रुति के अनुसार कालीवीर ने एक बनजारे का भेस
ाया। कटे-फटे वस्त्र पहने और चूड़ियों का टोकरा उठाकर
हलों के बाहर पहुँच गए। तब चूड़ियां बेचने के बहाने से
हलों में चले गए। रानी सिरगला ने उन्हें बुलाकर चूड़ियां
ाने को कहा। कालीवीर रानी को चूड़िया दिखाने और
ाने लगे। किंतु, वे चूड़ियां चढ़ाते कम थे और तोड़ते
धिक थे। इसमें उनका अभिप्राय था अधिक समय लगाना
कि किसी तरह राजा मंडलीक की झलक मिल सके।
ततः रानी बनजारे को उसकी चूड़ियों के दाम देने के लिए
तर गई तो वहाँ उसने जादू की शय्या पर लेटे राजा को
गाया। कालीवीर उसके पीछे चले आए और उन्होंने राजा
ी झलक पा ली।

जा मंडलीक की हार को जीत में बदलना :-

एक बार राजा मंडलीक और कालीवीर दोनों मित्र
ाकार हेतू जाने लगे। रास्ते में गुरु गोरखनाथ जी कोढ़ी

के रूप में बैठे थे। राजा मंडलीक ने इसे अपशगुन
गोरखनाथ इस बात से क्रुद्ध हो उठे कि उनकी अनदे
गई है। इसलिए उन्होंने अपनी माया से तीव्र आंधी
दी। राजा और मंत्री के घोड़े रास्ते से भटका कर
बंगाल की ओर ले गए। वहां वे रानी सिरगला के
पहुंचे। वहाँ स्थित महलों से रानी सिरगला के
प्रकाश बाहर आ रहा था। गोलियों ने राजा मंडली
देखा तो महलों में जाकर रानी सिरगला से कहा कि
में तुम से भी सुन्दर राजकुमार आया हुआ है। वहाँ
मंडलीक और सिरगला सार-पासा खेलने लगे,
राजा मंडलीक निरंतर हारने लगे। तब कालीवीर ने
मंडलीक के कंधे पर हाथ रखा। कालीवीर द्वारा छुए
पर राजा मंडलीक निरंतर जीतने लगे।

राजा का दायित्व : प्रजा पालन

राज्य सभा में बैठे राजा मंडलीक अपने सभा
सहित राज-व्यवस्था पर परामर्श कर रहे थे। राज्
कोषाध्यक्ष ने सूचना दी कि नये-नये निर्माण कार्य
प्रयुक्त होने के कारण राज्यकोष में धन का निरंतर अ
होता जा रहा है।

राजा मंडलीक ने पूछा–"कोष को बढ़ाने का क्या उपाय

कोषाध्यक्ष–"हमें नगर में आने वाले लोगों, व्यापा
तथा उनके सामान पर कर बढ़ा देना चाहिए। जिस
कार्य में धन का लेन-देन होता है, उसमें से एक नि

राज्यकोष में कर रूप में जमा करवाने का प्रावधान
चाहिए।''

कालीवीर–''सुनने में यह व्यवस्था प्रिय लगती है,
, इससे छोटे-छोटे व्यापारियों की परेशानी बढ़ने की
वना अधिक है। ऐसे पग उठाने से साधारण लोगों का
उमड़ने का अंदेशा भी रहता है। कर बढ़ाने से व्यापारी
दूसरे राज्यों की ओर प्रस्थान कर जाते हैं। अतः
ामी दृष्टि से यह व्यवस्था प्रतिगामी प्रतीत होती है।''

मंडलीक–''किंतु, कोई उपाय न किए जाने पर कोष
रिक्त हो जाने का भय है?''

कालीवीर–''उसके लिए हमें दूसरे उपाय करने चाहिएं।
कि व्यर्थ के खर्चों पर अंकुश लगाना।''

मंडलीक–''मंत्रीवर! ऐसे कौन से खर्चे हैं जो व्यर्थ हैं
जिन्हें रोका जा सकता है?''

कालीवीर–''उदाहरण के लिए नये भवन बनवाना व्यर्थ
खर्चा है। जब पहले ही आपके पास सुंदर महल है तो
राज प्रासाद बनवाने में कोई संगति नहीं दीखती।
ा का मुख्य ध्येय स्व-पालन नहीं, प्रजा पालन है।''

मंडलीक–''मंत्रीवर! राजा को क्या अभाव में जीना
हिए। क्या राजा का वैभव उसके देश की सुख-समृद्धि का
फलक नहीं है?''

कालीवीर–''राजा को सादगी और सदाचार का आदर्श
तुत करना चाहिए। किसी देश के राजा की समृद्धि

उसकी भोग-प्रियता तथा उसके विलासी होने की सूचक
देश की समृद्धि का सही दर्शन वहां के कृषक वर्ग के जी
स्तर से होता है। राजा की समृद्धि एक भ्रामक माप
है।''

मंडलीक–''कृषक का जीवन स्तर कैसा होना चाहिए

कालीवीर–''किसान के पास खेतीबाड़ी के लिए उपयु
भू-क्षेत्र हो, हल और हृष्ट-पुष्ट बैलों की जोड़ी हो। उस
कोठारों में कभी अन्न का अभाव न हो। उसके घर में दू
दही और घी-माखन सदा उपलब्ध हो। इसे कृषक
आदर्श जीवन स्तर मानना चाहिए। जिस राज्य में कृष
इस स्तर तक पहुंचे हों, मानना चाहिए वहां की राज
व्यवस्था सफल है।''

मंडलीक–''यदि ऐसा न हो तो?''

कालीवीर–''तो निश्चय ही मानना चाहिए कि वहां
राज्य व्यवस्था ढीली है। राजा अपने कर्तव्य से चूक रहा है
उसे अपनी मंत्री परिषद में गंभीरता से इस प्रश्न
उठाकर कारगर उपाय करने चाहिएं। यदि किसी राज्य
हृष्ट-पुष्ट किसान किसी कारण से कृषि-कर्म छोड़कर भि
वृत्ति अपनाता है अथवा अपना या अपने परिवार का जीवन
यापन करने हेतु हाथ फैलाता है, दान या भिक्षा मांगता है
तो मानना चाहिए वहां की राज्य व्यवस्था पूर्णतया विफ
हो चुकी है। उस देश या राज्य के राजा को राजा बने रह
का अधिकार नहीं है।''

मंडलीक–"राज्य कृषक वर्ग से कर के रूप में उत्पादित फसल का कितना भाग ले?"

कालीवीर–"कृषक वर्ग से उसकी फसल के, बीसवें भाग[1] का अधिकारी राज्य होता है। 'बिसवी' कर का ही रूप है, किंतु, योग्य राजा द्वारा देश का राज-काज चलाने हेतु अथवा सेना आदि के भार-वहन करने के लिए फसल का बीसवां भाग पर्याप्त है।"

मंडलीक–"देश और देशवासियों की समद्धि हेतु राजा को ऐसा क्या करना चाहिए जिससे देश में उन्नति हो तथा सब लोग खुशहाल रहें?"

कालीवीर–"राजा को चाहिए वह अपनी प्रजा में परिश्रम को ईश स्तुति की तरह प्रचारित करे। वह देश में विभिन्न व्यवसायों तथा शिल्पियों को प्रश्रय दे। देश में उत्पादित वस्तुओं को दूसरे देशों में भेजे। वहां की वस्तुएं अपने देश में मंगवाए। ऐसी व्यवस्था करे जिससे धरती के भीतर छिपी बहुमूल्य धातुएं, पत्थर, नमक आदि खोद कर बाहर निकले जाएं। राजा सेना को वेतन देने हेतु अन्न, धन तथा लवण का विपुल भंडार जमा रखे। राजन्, राजा की भूमिका देश की सम्पत्ति के संरक्षक की है। यदि वह अपनी वस्तु को पराई वस्तु मानकर उसका उपभोग करेगा तो उसके राज्य में धन-धान्य तथा सुख-समृद्धि की कोई कमी नहीं रहेगी।"

---

1. डोगरी भाषा में 'बिसवी'।

मंडलीक–"यदि राजा मात्र संरक्षक है तो उसे इतना बड़ा पद एवं अधिकार क्यों कर दिया गया है?"

कालीवीर–"राजन्, जिसे आप अधिकार समझ रहे हैं, वास्तव में वह उत्तरदायित्व है। उच्चतम पद के साथ उत्तरदायित्व भी बढ़ जाता है। राजा का सबसे बड़ा उत्तरदायित्व है देश में शांति स्थापित रखना। अपनी प्रजा को शांतिपूर्ण वातावरण देना।"

मंडलीक–"देश की शांति को कहां से भय रहता है?"

कालीवीर–"विदेशी आक्रांता, देश के भीतर के षड्यंत्रकारी, शत्रु का हित-साधन करने वाले गुप्तचर आदि देश की शांति के शत्रु होते हैं। इनके निवारण हेतु राज-व्यवस्था तथा सेना का संगठन किया जाता है। दूर देस-विदेश तक जाने वाले व्यापारिक काफिलों को सैनिक सुरक्षा प्रदान करना भी राजा का कर्त्तव्य है। देश के भीतर शांति के निमित योग्य कोतवालों तथा उनके अधीन काम करने वाले सतर्क कर्मचारियों का होना आवश्यक है।"

मंडलीक–"राजा की सफलता और विफलता के क्या मानदंड रहते हैं?"

कालीवीर–"राजा वही सफल है जो उदार हो। किंतु, किस स्थान पर कठोरता को धारण करना है, वह इस तथ्य से अनभिज्ञ न हो। योग्य राजा अपने गुप्तचरों द्वारा अपने देशवासियों तथा आस-पड़ोस के राजाओं पर दृष्टि रखता है। राजा वही सफल होता है जो अपने योग्य कर्मचारियों

काला दैत्य का संहार

को यथावसर पारितोषिक प्रदान करता है, उनकी सराहना करता है और उन्हें पदोन्नति प्रदान करता है। जो राजा अपने बुद्धिवल और अपनी आँखों पर विश्वास न करके सुनी-सुनाई वातों को सत्य मानता है, जो चाटुकारिता को पसंद करता है, तथा बहकावे में आकर अपने हितचिंतकों को कष्ट पहुंचाता है, उसका ह्रास अवश्यंभावी है। वस्तुतः वह विफलता के पथ का अनुगामी है।''

राज्य सभा में चल रहे विचार-विनिमय के दौरान माता कालिका का आगमन हुआ। माता ने पूछा—''पुत्रो! आज किस विषय पर तुम लोग विचार कर रहे हो?''

कालीवीर—''माता श्री, हमारा प्रणाम स्वीकार करें। माता, आज हम ''राजकोष और राजा के दायित्व'' पर विचारों का आदान-प्रदान कर रहे हैं।''

मंडलीक—''माता श्री! मेरे मार्गदर्शक एवं अमात्य कालीवीर जी का कथन है कि राजा राज-सम्पत्ति का संरक्षक मात्र होता है, स्वामी नहीं।''

कालिका—''पुत्र! वीरदेव काली ने सत्य कहा है। राजकोष एक चलायमान सम्पत्ति है, यह कभी स्थिर नहीं रहती। मात्र मूर्ख लोग ही इसे अपनी पैतृक दाय मानते हैं। धन-सम्पत्ति ऐसी माया है जो धूप-छांव की भांति आज यहां है तो कल वहां।''

मंडलीक—''वह कैसे?''

कालीवीर—''माता! इसका उत्तर देने की आज्ञा मुझे दें। राजन, इतिहास में ऐसे उदाहरण अनगिनत भरे पड़े हैं जव

बड़े जतन से एकत्र किया कोष किसी दूसरे राजा ने आक्रम करके या धोखा देकर प्राप्त कर लिया, इसी भांति दूसरे तीसरे ने। धन एवं कोष एक हाथ से दूसरे हाथ आता-जात रहता है।''

कालिका—''बेटा! धन की इस चलायमान स्थिति क ज्ञान रखने वाले ऐसे ज्ञानी राजा भी हुए हैं, जिन्होंने त्याग पथ पर चलकर अपना सर्वस्व दान में दे डाला।''

मंडलीक—''क्या इस देश में ऐसे अद्‌भुत दानी राजा सचमुच हुए हैं?''

कालिका—''पुत्र! ऐसे दानवीरों की गरिमा का बखान यदि लाख मुखों से करें तो भी संभव नहीं। ऐसी महान विभूतियों का स्वानुभूत ज्ञान प्राप्त करने के लिए तुम्हें देश का भ्रमण करना चाहिए। यहां के विभिन्न तीर्थों की यात्रा करनी चाहिए। तुम जानोगे कि जहां ऐसे लोग इस धरा पर हैं, जिन्होंने तिनके से आरंभ करके विपुल धन-सम्पत्ति अर्जित की—मात्र अपनी बुद्धि और श्रम का आश्रय लेकर तो ऐसे दानी एवं त्यागी लोग भी यहां वर्तमान हैं, जिन्होंने अपने अकूत धन कोष तिनका समझ कर विद्वानों एवं चिंतकों को दे डाले।''

मंडलीक—''माता, हमें तीर्थ यात्रा पर कब निकलना चाहिए?''

कालिका—''शुभ कार्य में अब और कब नहीं करना चाहिए। अपने पीछे राज्य की देखभाल का उचित प्रबंध करके तुम कल ही तीर्थ यात्रा पर निकल जाओ।''

कालीवीर—"तीर्थ यात्रा के साथ-साथ यह ज्ञान वर्धन यात्रा भी होगी।"

कालीवीर और राजा मंडलीक की चार धाम यात्रा

दोनों वीर चार धाम यात्रा के लिए तैयार होकर सर्वप्रथम माता कालिका के चरणों में उपस्थित हुए। प्रणाम करके उन्हें अपना प्रयोजन बतलाया और कहा—"प्रस्थान से पूर्व हम आपका आशीर्वाद तथा मार्ग दर्शन चाहते हैं।"

आशीष देते हुए माता कालिका ने कहा—"जब जगदीश्वर ने सृष्टि की रचना की, तब इसके रचियता भोलेनाथ और उनकी अर्धांगनी पार्वती देवी धरती पर एक साथ आए। तब पार्वती ने कहा—"प्रभु, आपने सब कुछ बहुत सुंदर रचा है। फिर भी यहां सब कुछ रसहीन है, कुछ कमी है जो खलती है।"

भोलेनाथ ने पूछा—"देवी, आप स्पष्ट करें, किस वस्तु का अभाव आपको खल रहा है।"

पार्वती—"सृष्टि में अधिकांश वस्तुएं जड़ हैं। मात्र सूर्य-चन्द्र तथा तारक मंडल गतिशील हैं।"

तब भोले शंकर ने वायु को गति प्रदान की और पूछा—"देवी! क्या अब ठीक है?"

पार्वती—"नहीं प्रभु! धरती निर्जीव ही प्रतीत हो रही है।" तब भगवान् ने धरती से गीली मिट्टी लेकर इस से नाना प्रकार के खिलौने बनाने का उपक्रम किया—हाथी, घोड़े, शेर, चीते आदि छोटे-बड़े पशु तथा आकाश में उड़ने वाले पक्षी। भगवान् एवं पार्वती के हाथों का स्पर्श होने से

सब पुतले प्राणवान होते जाते थे और धरती पर आगे-आ
बढ़ते जाते थे। देवी पार्वती पहले तो खुश हुईं, फिर दुबा
उदास हो गईं।

भगवान शंकर ने पूछा—"हे महादेवी! अब क्या हुआ?"

पार्वती—"प्रभु, जीव सृष्टि में अभी बहुत कमी है।"

भोलेनाथ ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उनकी ओर देखा
पार्वती ने कहा—"प्रभु! धरती को आपने बहुत सुंदर बनाय
है। सूर्योदय-सूर्यास्त, दिन-रात तथा षट् ऋतुओं की रचन
करके आपने इसमें नानाविध रंग भरे हैं। अनेक पशु-पक्षी
फल-फूल, नदियां और पहाड़ बनाकर आपने इसमें रौनक
ला दी है। किंतु, अभी भी कुछ ऐसा है जो कम है।"

तब भोलेनाथ ने कहा—"जो कमी रह गई है उसे आप
पूरा कीजिए।"

तब पार्वती ने मानव और मानवी के पुतलों का सृजन
किया।

भोलेनाथ बोले—"आपकी रचना अति सुंदर है देवी!"

पार्वती कुछ सोचते हुए बोलीं—"हे कृपालू ईश्वर! मानव
जाति और पशु जाति में विभेद नहीं है। इसे ऐसा वरदान दीजिए
जिससे मानव जाति पशु प्रजातियों से भिन्न दिखाई दे।"

तब भोलेनाथ ने पार्वती द्वारा गढ़े मानव-मानवी के
पुतलों को वाणी-वार्ता, मेधा और स्फूर्ति का वरदान दिया।
पार्वती इन पुतलों के संग खेलती रहीं। कुछ दिनों के
उपरांत पार्वती पुनः उदास हो गईं। भोलेनाथ ने कारण पूछा

तो पार्वती देवी बोलीं—"मुझे एक बात की चिंता है प्रभु कि मानव पृथ्वी पर पशुओं की भांति जिएगा। पृथ्वी पर उपलब्ध जल तथा वायु का उपभोग करके जीवन की अवधि समाप्त होने पर मृत्यु का वरण करेगा। मानव के कल्याण हेतु आप उसके कर्म क्षेत्र का विस्तार करें।"

भोलेनाथ हंसकर बोले—"पार्वती, मानव तथा मानवी के पुतलों की रचना आपने की है। इसीलिए, आपको अपने इन खिलौनों से अधिक मोह है। किंतु, आपकी इच्छा पूरी न हो—ऐसा हो नहीं सकता, क्योंकि आप स्वयं हमें भी इच्छा धारण करने की शक्ति देती हैं। इसीलिए, आप महाप्रकृति कहलाती हैं। आप बतलाएं कि मानव के कर्मक्षेत्र का विस्तार किस प्रकार किया जाए?"

पार्वती—"मानव जीवन के समक्ष एक आध्यात्मिक लक्ष्य रहना चाहिए ताकि अपने जन्म-जन्मांतर के कर्मों को वह अध्यात्म के स्पर्श से सुधार सके। प्रभु, धरती पर ऐसे तीर्थों की उद्भावना कीजिए, जहां की यात्रा मानव के कर्म पथ की थकान मिटा दे, उसके पापों का क्षय करे तथा उसके पुण्यों में बढ़ोतरी करे। इतना ही नहीं वहां के जल में स्नान करने पर उसका अंतस् शुद्ध हो और उसके कर्म रोग कटें।"

भोलेनाथ—"हे महादेवी! आप सदा जगत का कल्याण चाहती हैं। आपकी यह उद्भावना सृष्टि को आपका सर्वोत्तम उपहार है। ईश्वरीय लीला से जुड़े स्थलों की यात्रा करने वाले पृथ्वी वासी अपने जन्म-जन्मांतर के दुःखों की जंजीर काट

सकेंगे। भारत भूमि पर ऐसे तीर्थ स्थल सर्वाधिक होंगे क्योंकि इसी भूमि पर धर्म की ध्वजा फहराएगी। इस भूमि पर चार मुख्य धामों के अतिरिक्त सहस्रों छोटे-बड़े तीर्थ होंगे जहां श्रद्धा सहित भ्रमण करने वाले यात्री आध्यात्मिक दृष्टि से अन्य लोगों से बढ़कर होंगे। उनके लिए मुक्ति पथ सहज ही उपलब्ध होगा।''

इतना कहकर पुनः कालिका बोलीं-''हे वीर द्वय! मानव जीवन का प्रयोजन मात्र भौतिक भोगों को भोगना नहीं है, न ही कर्म पथ पर घिसटते हुए जीवन बिता देना है, बल्कि मुक्ति का आकांक्षा से सद्कार्य करना उसका परम ध्येय है। जिस मुक्ति को पाने के लिए ऋषि-मुनि जोग, जप, तप आदि की कठिन विधियों का आश्रय लेते हैं, वह मुक्ति तीर्थों की यात्रा करने पर सहज ही मिल जाती है।''

कालीवीर और राजा मंडलीक ने माता कालिका के चरणों का स्पर्श करके कहा-''देवी, हमें वरदान दें कि हमारी तीर्थ यात्रा सफल हो।''

कालिका-''तुम्हारा कल्याण हो। तुम अपने प्रयोजन में सफल होकर आओगे, पुत्रो।''

कालीवीर और राजा मंडलीक ने पुनः प्रणाम किया और माता कालिका का आशीर्वाद पाकर अपने घोड़ों पर सवार हो गए।

सिद्धगोरिया और बावा सुरगल से भेंट

बारह वर्ष की आयु होने पर बावा सुरगल ने अपने पिता राजा बासक से कहा-''पिता जी मैनें वेदशास्त्रों का

अध्ययन पूरा कर लिया है मुझे अब क्या करना है इसका निर्देश दें।'' नागराज बासक ने उत्तर दिया–''पुत्र, सर्वप्रथम तुम तीर्थ यात्रा करो और उसके पश्चात् सिद्ध पुरुषों की संगती में तपश्चर्या करो।''

बाबा सुरगल तीर्थ यात्रा के लिए निकल पड़े चारों धाम घूमकर वे जम्मू क्षेत्र में आए। यहाँ एक सुंदर पतोवन में पहुंचे। इस स्थान पर बाबा सिद्ध गोरिया जी बैठकर तपस्या कर रहे थे। उनके शरीर के ऊपर बांबी बन गई थी। जिस पर कहीं कहीं घास उग आई थी।

बाबा सुरगल के मन में इच्छा हुई कि वे सिद्ध गोरिया के संग बातचीत करें। उन्हें पिता की सीख का स्मरण हो आया तथा सुन्दर तपोवन में तपस्या करने की इच्छा जागृत हुई। बाबा सुरगल सिद्ध गोरिया के बगल में बांबी बना कर उसमें तप करने लगे। बारह वर्ष की अवधि बीत गई तब उधर से राजा मंडलीक और कालीवीर की जोड़ी गुजरी। उस विहंगम तपोवन को देखकर वे वहीं रुक गये। प्राकृतिक दृष्यावली का रसपान करते हुए वे उन दो बांबियों के निकट पहुंचे जहां बाबा सिद्ध गोरिया और बाबा सुरगल तपलीन थे। उन दोनों के शरीर पर बनी दीर्घकाय बांबियां ऊपर तक चली गई थीं। इस विचित्र दृष्य को देखकर राजा मंडलीक ने कहा– ''मित्र कालीवीर जी! कितने अचंभे की बात है कि इन दो तपस्वियों के शरीर प्रायः मिट्टी हो चुके हैं।''

कालीवीर–''समाधि की इस दशा में तपस्वी ईश्वरलीन हो जाते हैं।''

राजा मंडलीक–"क्या ये दोनों अपने मानव शरीर मे वापस आ सकेंगे?"

कालीवीर–"ये दोनों सिद्ध नागरूप में अपनी-अपनी बांबी में स्थित हैं। जैसे ही इनकी इच्छा होगी ये नागरूप त्यागकर मानव शरीर धारण कर लेंगे। इनके जर्जर तथा जरा जीर्ण शरीर पुनः प्राणवान हो उठेंगे। ये दोनों दिव्य आत्माएं कई प्रकार की सिद्धियों के स्वामी हैं। बावा सुरगल बारह वर्षों से समाधि की अवस्था में हैं और सिद्ध गोरिया अठारह वर्षों से तपस्या में लीन हैं।"

मंडलीक ने पूछा–"कालीवीर जी! इतनी लंबी समाधि में इनकी प्राणहानि की संभावना रहती होगी?"

कालीवीर–"इतनी लंबी समाधि की दशा में साधारण तपस्वी अपने प्राण गंवा देता है। किन्तु इन जैसी सिद्धावस्था की चरम सीमा तक पहुंची हुई दिव्यात्माओं की योग-चेतना जागृत हो जाती है। योग-चेतना की इस अवस्था में श्वास-प्रश्वास प्रणाली तथा शरीर की अन्य प्रणालियां प्रायः रुक जाती हैं किन्तु मृत नहीं होतीं। इच्छा-जागृति द्वारा यह पुनः जीवित प्राणी की भांति सक्रिय हो जाती हैं।"

राजा मंडलीक–"कालीवीर जी, इच्छा जागृति क्या है?"

कालीवीर–"महाराज, योग की वह अवस्था जिस में योग द्वारा श्वसन प्रणाली को मद्धम करके उसे अन्तस्थ में स्थित करके निस्पंद कर दिया जाता है वह समाधि की गूढ़ावस्था का आरंभ है। योग निद्रा से जागृति हेतु योग-

चेतना का जो संकल्प किया जाता है, उसे ही 'इच्छा-जागृति' कहते हैं।"

राजा मंडलीक–"हे महावीर! यह सब बड़ा विस्मयकारी लगता है।"

कालीवीर–"महाराज! योगविद्या वह अद्‌भुत कुंजी है जो अज्ञात के अनन्त संसार को सहज ही खोल देती है। जैसे योग का थोड़ा-सा अभ्यास करने वाले लोग इच्छा मृत्यु का वरण कर लेते हैं, वैसे ही इच्छा जागृति द्वारा योग-निद्रा से वापस सचेतन शरीर में लौटा जा सकता है।"

मंडलीक–"इच्छा-मृत्यु से आपका क्या तात्पर्य है?"

कालीवीर–"अध्यात्म पथ का पथिक जो योग का ज्ञान रखता है यदि वह जीवन का मर्म पहचान चुका है तो वह मृत्यु का वरण अपनी इच्छा से कर सकता है। ज्ञानी पुरुष जानते हैं कि कब जीवन के मुख्य ध्येय पूर्ण हुए और कब मृत्यु द्वार को लांघने का उपयुक्त समय है। जवाजीर्ण शरीर लेकर अथवा रोगों द्वारा कष्ट झेलकर जो लोग मृत्यु क्षेत्र में प्रवेश नहीं करना चाहते वही योगमाया द्वारा इच्छा मृत्यु से प्राणों का त्याग करते हैं। वे प्रणवाक्षर ओंकार के उच्चारण मात्र से प्राण त्यागकर कर शरीर के बन्धन से मुक्त हो लेते हैं। राजन्! यही इच्छा मृत्यु है।"

मंडलीक–"ये दोनों तपस्वी इस तपोवन में किस प्रयोजन से यह कष्टदायी तपस्या कर रहे हैं?"

कालीवीर–"यह तप साधना कष्टदायी अवश्य है राजन्
परन्तु सच्चे साधक के लिए यह आनन्दवर्धक है क्योंकि यह
परमानन्द से साक्षात्कार का साधन है। यदि मानव के क्रिया
कलापों को गहराई से परखा जाए तो यह तथ्य सामने आता
है कि योग जुगत, जप, तप, व्रत, तीर्थ आदि तमाम व्यवहार
अमरलोक का नागरिक बनने की बांछा से प्रेरित हैं। कोई
कोई साधक विशेश मनोरथ की प्राप्ति के लिए उपासना आदि
का आश्रय लेते हैं। राजन्! ये दोनों तपस्वी कोई साधारण
योगी नहीं हैं क्योंकि साधारण तपस्वी ऐसी प्रगाढ़ तपस्या
नहीं करते जिससे शरीर ही मिट्टी हो जाए। इनके तप का
ध्येय मात्र मुक्ति न होकर जगत का कल्याण होता है।"

मंडलीक–"कालीवीर जी, इन दोनों महानुभावों का
ध्येय क्या हो सकता है? क्या यह अगले जन्म में राज्य
भोग के इच्छुक हैं?"

कालीवीर–"नहीं राजन्! इन दोनों के समक्ष राज्य
भोग अत्यंत तुच्छ वस्तुएं हैं। इनमें से एक सिद्ध गौरिया
जी राजा होते हुए भी योग मार्ग के अनुगामी हुए थे
जबकि दूसरे तपस्वी नागराज वासुकि जी के पुत्र राजकुमार
सुरगल हैं।"

मंडलीक–"यदि ऐसा है तो इनकी साधना का उद्देश्य
क्या है?"

कालीवीर–"भोक्ता चाहे राजा हो, चाहे भिखारी वह प्राप्ति
की इच्छा से परिपूर्ण होता है, जबकि इनके जैसा तपस्वी त्याग

ी निःस्वार्थ भावना से तथा दूसरों को देने की सद्-इच्छा से
भरपूर होता है। किंतु, इन दोनों देवात्माओं के तप का कारण
इन्हीं के मुख से जानने के लिए मैं इनसे प्रार्थना करता हूं।''

कालीवीर और मंडलीक दोनों अपने घोड़ों से नीचे
तर कर धरती पर खड़े हो गए। तब कालीवीर ने अपने
श्व के एक ओर बंधे पात्र से अंजुली में जल लेकर
ोंकार का उच्चारण करते हुए दोनों बांबियों पर छिटका।
फर हाथों से बांबियों को छूआ। ऐसा करते ही दोनों
ांबियों में स्पंदन हुआ और देखते ही देखते सिद्धगोरिया
ौर बावा सुरगल समाधि की अवस्था से बाहर आ गये।
ोनों ने खड़े होकर कालीवीर को प्रणाम करके विनम्र स्वर
कहा-''प्रभु हम धन्य हुए जो हमारी वर्षों की तपस्या
र रीझ कर आपने दर्शन दियें। प्रभु, संसार जानता है कि
लियुग में आप साक्षात् हरि हैं। आप ही धर्म के प्रति
ास्था और आश्वस्ति प्रदान करते हैं।''

कालीवीर-''महात्मन्, आप किस प्रयोजन से यह कठिन
प कर रहे हैं? यह बतलाने की कृपा करें।''

सिद्धगोरिया-''प्रभु! यह भौतिक संसार अनेक प्रकार
कष्टों से पीड़ित है। कष्टों का मूल संसार से लिप्ति और
ौतिक उपादानों की प्राप्ति की इच्छा है। यह जानते हुए
ी कि यह सब क्षण-भंगुर है लोग कांटों से भरी इसी राह
र चलने का उपक्रम करते हैं। सांसारिक जनों के पग के
ांटे निकालने के लिए ही मैं यह साधन कर रहा हूं।''

कालीवीर–"आप एक महान् प्रयोजन से साधना क
रहे थे, इसलिए मेरा वरदान है कि जो कोई जन आध्यात्मि
अथवा सांसारिक प्रयोजन से आपकी स्तुति करेगा
पूर्णकाम होगा। उसकी समस्त कामनाओं की पूर्ति होगी

तब कालीवीर राजकुमार की ओर उन्मुख हुए–"वासुकि
सुरगल देव जी! आप अपनी समाधि का प्रयोजन बयान करें

सुरगल–"हे देवाधिदेव शेषावतार भगवन्! मैं इस पु
भूमि पर सिद्ध गौरिया जी के दर्शनों के लिए आया थ
किंतु, ये समाधि अवस्था में लीन थे। मैंने संकल्प लि
कि इनसे वार्ता किए बिना मैं कहीं जाऊंगा नहीं। मैं स्व
भी साधना में रहकर प्रतीक्षा करूंगा। इसी भाव से
समाधि में चला गया।"

कालीवीर–"सुरगल देव जी, आपका संकल्प धन्य
एक राजकुमार होते हुए भी आप ने सुखों को तिलांज
देकर सिद्ध गौरिया जी से ज्ञान-वार्ता को आवश्यक मा
इतना ही नहीं आप निष्काम भाव से समाधि में चले गए

सिद्ध गोरिया–"प्रभु, बावा सुरगल जी समाधि
अवस्था में मेरे संग अनेक विषयों पर वार्तालाप करते
हैं। यह ज्ञान का अक्षय भंडार हैं। जन-कल्याण की भाव
इनके हृदय में कूट-कूट कर भरी हुई है। हम दोनों में गू
विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान होता रहा है।"

सुरगल–"प्रभु, मैं तो अपने पिता श्री वासुकि जी
निर्देश को आदेश मानकर उसका पालन कर रहा था। मैं

ज्ञान-पिपासा वश इस तपोवन में डेरा लगाया था। मुझे सिद्ध गौरिया जी से परम लाभदायक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। पिताश्री का निर्देश कितना उचित था—यह बात इससे सिद्ध हो गई है कि मैं जोकि सिद्ध गोरिया जी का अनुचर बनकर आया था— समाधि की तंद्रा टूटने पर स्वनाम धन्य दो महान विभूतियों राजा मंडलीक और श्री कालीवीर जी के समक्ष स्वयं को पाता हूं। ज्ञान नेत्र द्वारा मैं जानता हूं आप दोनों सिद्ध गोरिया जी को दर्शन देने पधारे थे—किंतु, मुझे अपने संकल्प के कारण आपके दर्शन पाने का लाभ स्वतः मिल गया। मैं कितना भाग्यशाली हूँ।''

कालीवीर—''आप दोनों के निष्काम मैत्री भाव की जितनी सराहना की जाए, कम है। कलियुग में ऐसी मित्रता दुर्लभप्राय है। आप दोनों परस्पर मैत्री करके सब का कल्याण कर सकते हैं। अतएव, आप दोनों भगवती म'ल्ल रानी की साक्षी में हरिद्वार तीर्थ पर गंगाजल का पान करके मैत्री के बंधन को धारण करें।''

सुरगल तथा सिद्ध गोरिया बोले—''प्रभु! आपका कथन हमारे लिए शिरोधार्य है।''

मंडलीक—''कालीवीर जी! इन दोनों साधकों की मित्रता जन-हित कारक है।''

कालीवीर—''साधक द्वय! यह परम पराक्रमी राजा मंडलीक हैं। शूरवीरता में कोई इनका सानी नहीं। शक्ति और वैभव के ये स्वामी हैं।''

सिद्ध गोरिया–"हमारा सौभाग्य है कि आप दोनों सुखदायी जोड़ी के दर्शन एक साथ हुए। आप दोनों धर्म ध्वजा वाहक हैं। आपका पराक्रम एवं शौर्य वर्णन की सीमाओं से परे है

सुरगल–"हमने बहुत पुण्य किए होंगे जो आपके दर्शन सहज ही हो गए। ऋषि-मुनि जन्म-जन्मांतर तक जिन दर्शन की आशा में जप-जोग कमाते हैं, उन्होंने स्वयं प्रक होकर हमें कृतार्थ किया है।"

सिद्ध गोरिया–"हे कल्कि अवतार प्रभु कालीवीर जी! हम लिए जो करणीय तथा अनुकरणीय है-वह पथ निर्दिष्ट करें

कालीवीर–"हे सिद्ध पुरुषो! संसार में अहितकार शक्तियां निरंतर बढ़ती जा रही हैं। जगत का कल्याण करने के लिए आवश्यक है कि धर्म की मर्यादा को पहचान कर कष्टग्रस्त लोगों को अधिकाधिक सुख प्रदान करें।"

सिद्ध गोरिया और बावा सुरगल ने हाथ जोड़कर कहा– "ऐसा ही होगा प्रभु।"

कालीवीर–"आप वर्षों की साधना के उपरांत उठे हैं आप देविका तट पर स्नान करके जगत-कल्याण का संकल्प लीजिए और आस्थावान लोगों की मनोकामनाएं पूर्ण करके उन्हें आश्रय प्रदान कीजिए।"

सिद्ध गोरिया और बावा सुरगल बोले–"प्रभु! कलियुग में जो कोई जन आपके द्वारा दर्शित रास्ते पर चलेगा उसका मार्ग निष्कंटक हो जाएगा। हम आपके आभारी हैं जो आपने हमें हमारी भूमिका बतलाई।"

तत्पश्चात् कालीवीर और राजा मंडलीक अपने घोड़ों पर सवार होकर आगे बढ़ लिए।

कालीवीर : विस्मयकारी कृत्य

(क) विद्रोही रौंगा की बहन गोदावरी को जीवित करना

(ख) कुम्हार के मृतक पुत्र को जीवन दान

सांबा से पश्चिम दिशा में पंजाब की सीमा पर क्षत्रीय जाति का एक बलशाली युवक रहता था। उसका नाम रौंगा था। वह मल्ल- विद्या, तलवारबाज़ी और घुड़सवारी में पारंगत था। अपने क्षेत्र में वह धीरे-धीरे प्रसिद्ध होता गया। अपने क्षेत्र के लोगों के जमीन-जायदाद संबंधी झगड़ों का निपटान भी करने लगा। लोग उसके निर्णय को आंखें मूंद कर स्वीकार कर लेते। धीरे-धीरे उत्साही युवाओं का एक दल उसके साथ जुड़ता चला गया। यह दल एक सैनिक दस्ते की भान्ति काम करने लगा। अपने साथियों के सहयोग से रौंगा ने पूरे क्षेत्र में शान्ति और व्यवस्था कायम की। लुटेरों के दल उसके क्षेत्र से बचकर निकला करते थे। कई बार उधर से गुजरने वाले लुटेरों के दल को घेर कर उनकी सामग्री का वेशतर भाग छीन कर रौंगा और उसके साथी परस्पर बांट लेते।

कहावत है कि 'जैसा खाओगे वैसी बुद्धि पाओगे'। लूटपाट का माल खाकर रौंगा और उसके साथियों की बुद्धि मलिन हो गई। लूट का धन, फल, मेवा, अनाज आदि पाकर उनकी लिप्सा भटक उठी। इसलिए, धीरे-धीरे उनका दल जो न्याय और शान्ति की धाक रखता था अब

भौतिक लिप्सा के कारण लूट-पाट करने वाले दल की त
कार्य करने लगा। वे लोग आंधी की तरह घोड़े दौड़ा क
पूर्व निश्चित गांव या कस्बे में पहुंच जाते, वहां मार-पिट
करते और लोगों से उनका धन आदि छीन लाते। विरो
करने वालो को प्राणों से हाथ धोना पड़ता। इससे प्रतिदि
उनका आतंक बढ़ता जा रहा था। एक बार राजा मंडली
के लिए कश्मीर का फल-मेवा ले जा रहा काफिला डघे
नाम के गांव में रुका तो सायंकाल की बेला में रौंगा
दल ने उसे घेर कर लूट लिया। लुटे-पुटे लोगों ने इ
घटना की सूचना दुद्धनेरा जा कर दी। राजा मंडली
इससे क्रुद्ध हो उठे और लुटेरों के दल को दंडित करने
लिए अपने एक वरिष्ठ सेना-नायक को उसके दल सहि
भेजा। किन्तु सैन्य दल की सूचना पाकर रौंगा और उस
साथी किसी जंगली क्षेत्र में जा छिपे। कई दिन उन
विषय में छानबीन करके सेना-नायक खाली हाथों वापि
लौटने लगा। वे उत्तरवाहिनी में खेमें लगा कर भोज
पकाने का उपक्रम कर रहे थे कि रौंगा और उसके साथि
ने सुनहरा अवसर जान कर उन पर भीषण आक्रमण क
दिया। मुठभेड़ में सेनानायक का सिर कट गया औ
सैनिक दल क्षति उठाकर भागने को मजबूर हो गया।

अपने सेना दल की पराजय और हारने का समाच
पाकर राजा मंडलीक उद्विग्न हो उठे। उन्होंने दूसरा सैनि
दल रवाना किया। किन्तु उसकी भी वही दुर्दशा हुई। रौं

ने तमाम सैनिकों को बंदी बना लिया। चिन्तातुर होकर राजा मंडलीक ने कालीवीर जी को परामर्श के लिए बुलावा भेजा। उस समय कालीवीर अयोध्या में थे। वे संदेश पाकर तुरंत अपने राजा के पास पहुंचे। राज महल में भेंट हुई। राजा मंडलीक ने सारी कहानी उनसे कह सुनाई और कहा कि रौंगा को तुरंत मरवाने का उपाय करें।

कालीवीर शान्त चित से बोले–"ऐसे वीर बांकुरे को मरवा डालने का निर्णय उचित नहीं है।"

राजा मंडलीक रुष्ट स्वर में बोले –"तो क्या अपने सैनिकों को गाजर-मूली की तरह काटने के एवज में हम उसे पारितोषिक दें?"

कालीवीर बोले–"नहीं, किन्तु हम उसकी उस शक्ति को पहचानें जिसके द्वारा वह प्रशिक्षित सेना को गाजर-मूली की तरह काट सकता है।"

"मैं आपका तात्पर्य नहीं समझा"–राजा मंडलीक ने कहा।

"मेरा अभिप्राय यह है कि रौंगा वीर है इसे आप भी मानते होंगे। उसकी वीरता जो जन-कल्याण के मार्ग से भटक चुकी है यदि उसे रास्ते पर लाया जाए तो यह उचित उपाय होगा।"

मंडलीक-"आप उसके हित के लिए चिन्तित हैं। उसने हमारी सेना को जो अपार हानि पहुंचाई है, उसके लिए उसे प्रचंड दंड देने के बजाय हम उसकी स्तुति करें– क्या यह उचित है।"

कालीवीर बोले– "राजन! आपका रोष स्वाभाविक है किन्तु, वह वीर ही नहीं, बुद्धिमान और सैन्य कला के दांव पेच का जानकार भी है। ऐसे वीर सेनानी को आपकी सेवा में होना चाहिए। वह आपके मृतक अथवा बंदी बनाए गए सैनिकों से श्रेष्ठ है, इसीलिए वह जीवित है, इस तथ्य को आप भी मानते होंगे। ऐसे विकट शत्रु को यदि युक्ति से आपकी सेवा में लाया जा सके तो कैसा रहे। वैसे भी शास्त्रों में निर्देश है कि जब दंड की नीति से काम न बने तो विरोधी पक्ष से समझौता कर लेना चाहिए।"

राजा मंडलीक ने पूछा- "किन्तु, उसने हमारी सेवा में लाए जा रहे फल और मेवे को लूटकर हमारा जो अपमान किया है उसे क्या हम भुला दें।"

कालीवीर मुस्कुरा कर बोले–"जो हो चुका है उसे कड़वा घूंट मान कर पी लेने में कोई अनौचित्य नहीं है। जब वह अपने दल सहित आपकी सेवा में चला आएगा तब वह आपके हितों का प्रबल रक्षक सिद्ध होगा। अपने किये पर उसे अत्यन्त ग्लानि होगी।"

"आप हमें अपमान का घूंट पीने की सलाह दे रहे हैं, "राजा मंडलीक ने कहा।"

कालीवीर बोले–"राज हित में कड़वा घूंट पीना विशाल हृदयता का परिचायक होता है, राजन।"

मंडलीक बोले-"ठीक है आप जैसा उचित समझें करें। अपने साथ सेना का एक दल भी ले जाइये। यदि वह मार्ग पर न आए तो उसे तुरंत समाप्त कर दें।"

कालीवीर बोले,– "राजन्, रौंगा को रास्ते पर लाने के लिए मेरा अपने संग सेना ले जाना कदापि उचित नहीं है। मैं अकेले ही यात्रा पर निकलूंगा।"

राजा मंडलीक ने सुझाव दिया–"यदि आप चाहें तो वीर नाहर सिंह और वीर कैलू को अपने संग ले जाएं।"

कालीवीर ने उत्तर दिया– "इसकी आवश्यकता नहीं है। मुझे विश्वास है कि शक्ति के बजाए युक्ति अधिक उपयुक्त है।"

तदुपरान्त कालीवीर रौंगा के क्षेत्र की ओर रवाना हो लिए।

कालीवीर जी के आगमन की खुशी में हर कहीं पलाश के पेड़ों पर फूल खिल आए। धरती ने जैसे गेरुए रंग की साड़ी ओढ़ ली। पक्षी चहचहाने लगे। उत्तरवाहिनी के तीर्थ पर उन्हें एक पंडा मिला जो रौंगा से पहचान होने का दावा बांधता था। कालीवीर ने उसे कहा कि राजा मंडलीक का संदेश लेकर रौंगा के पास जा रहे हैं। इसके लिए वह उनके साथ चले। कालीवीर और पंडा सांबा की ओर चल पड़े। महेस्सर के पास से गुजरते हुए उन्हें रौंगा के गांव कां एक आदमी मिला जिसने बताया कि रौंगा शोक में डूबा हुआ था क्योंकि उसकी छोटी बहन गोदावरी जिसकी आज शादी थी, वह अचानक मर गई थी।"

कालीवीर ने पूछा-"मृत्यु का कारण क्या था ?"

गांव वासी बोला– "कोई नहीं जानता, वह क्यों कर मरी। मृत्यु से पूर्व वह भली-चंगी सहेलियों में बैठी हुई थी।

अचानक पेट में शूल उठा, वह चीखने-चिल्लाने लगी। कोई दवा-दारू करने से पूर्व ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गये।"

पंडा जी बोले– "अवश्य ही किसी डायन ने अभिचार किया होगा।"

गांव वासी बोला–"उसकी मृत्यु का समाचार आस-पड़ोस के गांवों में फैल गया है। तमाम लोग इसे अचरज भरी मौत मान रहे हैं। शायद कोई कुंभ-डायन उसका कलेजा खा गई है।"

कालीवीर जी ने घोड़े को एड़ी लगाते हुए कहा- "पंडा जी, हमें तुरन्त रौंजा के घर पहुँचना है।"

दोनों के घोड़े हवा से बातें करने लगे। गांव में दूर-दूर तक सन्नाटा व्याप्त था। रह-रह कर चीखने और सिसकने की आवाजें सन्नाटे को भंग कर देती थीं। अनेक दिशाओं से लोग गांव के श्मशान की ओर आ रहे थे। कालीवीर पंडा जी के साथ वहां पहुँचे। लड़की के शव को चिता पर रख दिया गया था। लाखों लोगों का समूह शोक के समुद्र में डूब रहा था। हर जिह्वा पर एक ही बात थी--" किसी डायन ने बेचारी गोदावरी को विवाह का सुख नहीं देखने दिया। घोड़े से उत्तर कर कालीवीर उस स्थान पर चले आए जहां रौंगा और उसके परिवार के सदस्य खड़े थे। उन्होंने कहा- "यहां हर नर-नारी कह रहा है कि इस लड़की को किसी डायन ने खा डाला। यदि आप मेरे प्रश्नों का उत्तर दोगे तो यह चिता से उठ कर भली-चंगी होकर बातें करने लगेगी।"

इस बात पर तमाम जन-समुदाय का ध्यान कालीवीर जी की ओर उन्मुख हुआ।

"आप कौन हो? यह लड़की क्या जीवित हो सकती है?"

"मेरा नाम कालीवीर है। राजा मंडलीक का मैं मंत्री हूँ। यह मेरा परिचय है। रही इस बच्ची के जीवित होने की बात तो यह तुम पर निर्भर करता है कि तुम मेरे प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर देते हो या नहीं।"

तुरंत रौंगा आगे बढ़ आया और गिड़गिड़ाते हुए बोला– "हे ब्राह्मण देवता! मैं आपके तमाम प्रश्नों के उत्तर दूंगा। आप कृपया मेरी बहन को जीवित कर दें। इस के लिए चाहे आप मेरे प्राण भी मांगें तो मुझे मन्जूर है।"

मंद-मंद मुस्कुराते हुए कालीवीर बोले–"मेरा पहला प्रश्न है कि मारने वाला बड़ा है या बचाने वाला?"

रौंगा ने उत्तर दिया–"निः संदेह बचाने वाला ही बड़ा है।"

कालीवीर ने पूछा–"बचाता कौन है ?"

रौंगा– "ईश्वर ही सब का रक्षक है।

कालीवीर–"जन्म भी ईश्वर देता है और रक्षा भी वही करता है, तो मानव मानव को मारे यह अधिकार उसको किसने दिया?"

रौंगा– "यह मानव की गलती है।"

कालीवीर – "यह गलती ही पाप का बीज होती है। डायन यदि किसी की खुशियों को लील जाए या फिर तुम-

सा वीर-बांकुरा निरपराध लोगों को लूटे उनके प्राणों का हनन करे तो वह ईश्वर की इच्छा में बाधक बनता है।"

रौंगा चीत्कार कर उठा– "मैं शर्मिंदा हूं। अपने किये का मुझे दुःख है। यदि मेरे पापों की सजा मेरी प्यारी बहन को मिली है तो मेरा जीना किस काम का। मुझे भी इसी के संग चिता में जलकर राख हो जाना चाहिए।"

कालीवीर –"इसकी आवश्यकता नहीं है। तुम अपनी पाप वृत्ति को जलाओ, शरीर को नहीं। यह शरीर तो तुम्हें देश रक्षा और परोपकार के लिए मिला है।"

रौंगा एकटक उनकी बातें सुन रहा था।

कालीवीर–"जब शक्तिशाली ही दूसरों के कष्ट का कारण बनेगा तब कलियुग का निवारण कैसे होगा ?"

रौंगा –"मुझे अपने किये का पश्चात्ताप है।"

कालीवीर – "तुम्हारे उत्तर से मैं संतुष्ट हूं क्योंकि पश्चात्ताप गंगाजल की भांति है जो अंतस् के कल्मषों को धो डालता है।" इतना कहकर कालीवीर चिता के समीप गये। पंडा से देविका के पवित्र जल का लोटा लेकर जल की कुछ बूंदें शंव पर डालीं। तभी चिता पर लेटी गोदावरी के शरीर में हरकत हुई। उसने आंखें खोलीं और श्री राम श्री राम कहते हुए उठ कर बैठ गई।

जन-समुदाय भी श्री राम श्री राम का उच्चारण करने लगा। रौंगा ने कालीवीर जी के पांव पकड़ लिए।

कालीवीर बोले– "तुम्हारे पापों की छाया ने इस निष्पाप बच्ची के श्वासों की डोर काट दी थी। ईश कृपा से

अब यह ठीक है। रोना-धोना भूल कर आप इसके विवाह की तैयारी करो।"

रौंगा और गोदावरी के माता-पिता ने कालीवीर जी के चरण पकड़ लिए और विनय सहित बोले–"प्रभु, हम अज्ञानी लोग आंखें होते हुए भी अंधे होते हैं। लालच की थोड़ी-सी प्रेरणा पाकर हम ठीक और गलत की मर्यादा भुला देते हैं। रास्ते से भटका हुआ हमारा पुत्र आज से आप की शरण में है। आप जैसे चाहें इसे रखें, जो काम चाहें इससे लें।"

कालीवीर– "गलत और सही की पहचान ही वास्तव में धर्म की मर्यादा है। आज से रौंगा अपने दल-बल सहित इस मर्यादा की रक्षा करे, इससे अधिक मैं कुछ नहीं चाहता।"

तत्पश्चात्, तमाम लोग गांव की ओर लौट चले। विवाह की तैयारियां होने लगीं। लड़के वालों को संदेशा भेजा गया कि वे बारात बांध कर चले आएं। दूसरे दिन विवाह के उपरान्त कालीवीर रौंगा और उसके घुड़सवार साथियों को लेकर अपने राजा की ओर चल पड़े। वे अभी गांव की सीमा में ही थे कि कुछ लोगों का एक समूह उनके पास हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। उन लोगों में से एक व्यक्ति ने कहा–"हे कालीवीर, आप धर्म और सदाचार की साक्षात् मूर्ति हैं। कलियुग में आप ही सब का उद्धार और सबकी रक्षा करते हैं। हमारे गांव के इस गरीब कुम्हार का इकलौता बेटा आज प्रातः अकाल मृत्यु को प्राप्त हो गया है। वह मिट्टी रौंद रहा था कि उसे सर्प ने

काट लिया। देखते ही देखते उसके प्राण-पखेरू उड़ गये
वह लड़का अपने बूढ़े माता-पिता का एक मात्र आश्रय था
आप कृपा करके उसे जीवित कर दें। आपने मृत गोदावरी
को प्राणदान देकर धर्म की शक्ति के प्रति आश्वस्त किया
है। इसी आशा से हम आपके सामने प्रस्तुत हुए हैं।"

कालीवीर बोले- "मृत्यु के भिन्न-भिन्न कारण होते
हुए भी यह सत्य है कि जीवन का अन्त मृत्यु है। यदि पृथ्वी
पर यह नियम न रहे तो धरती स्वर्ग हो जाएगी। जैसे मृत्यु
का नियम अटल है, वैसे ही यह नियम भी अटल है कि
पृथ्वी को पृथ्वी की भांति ही रहना है-स्वर्ग नहीं बनना है
मानव को यहां दुःख और क्लेश सहते हुए जीवन को स्वर्ग
बनाने का प्रयत्न करना है। यही ईश्वर द्वारा निश्चित है।"

जन समुदाय दुहाई देने लगा- "प्रभु हमारी अर्ज
स्वाकीर करें। पुत्र के जीवित न होने पर यह दोनों बूढ़ा-
बूढ़ी अकारण मर जाएंगे। ईश्वर के प्रति हमारा विश्वास
बना रहे इसके निमित्त आप इनके पुत्र को जीवित करने
की कृपा करें। घर में उसका शव इसी विश्वास से रखा
हुआ है कि गोदावरी की भांति उसे भी आपके द्वारा प्राणदान
मिलेगा।"

लोगों की अनुनय-विनय से कालीवीर पसीज उठे और
बोले- "यद्यपि प्रकृति के मृत्यु जैसे नियम को परिवर्तित
करना उचित नहीं है तो भी आप लोगों की आस्था डगमगाए
नहीं, इसलिए आपकी बात को मानना होगा।"

इसके पश्चात् कालीवीर और उसके साथ पूरा काफिला मृतक कुम्हार युवक की ओर चल पड़ा। वहां पहुँचने पर मृतक के शव को आंगन में लाकर रखा गया। कालीवीर ने शव को ध्यान से देखा और कहा- "पुत्र जीवित हो जा ताकि तेरे घर का शोक मिटे।"

तभी एक विस्मयकारी दृश्य उपस्थित हुआ। घर के सहन और मुंडेर पर चारों ओर अनेक सांप एकत्र हो गये।

कालीवीर जी बोले- "भाइयो! घबराएं नहीं। यह सर्प-कुल हमारे दर्शनों के लिए एकत्र हुआ है। यह आपकी हानि नहीं करेगा।"

तभी एक नाग मुंडेर से उतर कर धरती पर आया और कालीवीर जी के समक्ष खड़ा होकर बोला- "हे, शेषनाग, हमारा सौभाग्य है कि आप यहां पधारे और हमें मानव अवतार के रूप में आपके दर्शन हुए।"

कालीवीर बोले- "अवतार का उद्देश्य धर्म-ध्वजा को फहराए रखना है। कलियुग की काल-कोठरी में मानव और अन्य जीव धारी आस्थाहीन न हो जाएं, इसीलिए ईश उपस्थिति का संदेश उन्हें दिया जाता है।"

इतना कह कर उन्होंने अपना हाथ मृतक के मस्तक पर फेरा। उसके शरीर में स्पन्दन हुआ, आँखें खुलीं और वह उठ कर बैठ गया। उसके होश में आते ही नाग कुलों के समस्त सर्प अदृश्य हो गये।

लड़के को जीवित हुआ देखकर तमाम जन समुदाय बोल उठा- "जय श्री कालीवीर- जय शेषनाग अवतार।"

कालीवीर बोले- "उठो वत्स! अपने प्रिय माता-पिता के चरणों का स्पर्श करो। उनके वात्सल्य से आज तुम्हें जीवन दान मिला है।"

युवक ने अपने माता-पिता के चरणों को छू कर कहा- "मैं यम लोक से लौट कर आया हूँ। मेरे इस जन्म के माता-पिता आप हैं, किन्तु, जिन के आशीर्वाद की बाजू बहुत लंबी है वह कालीवीर ही वस्तुतः मुझे यमदूतों के पास से खींच कर लाए हैं। आज से यही मेरे माता-पिता हैं। मेरा जीवन इन्हीं के निमित्त है।"

कालीवीर बोले- "पुत्र! मृत्यु को जीवन में परिवर्तित करने का यह कार्य जिनके निमित्त हुआ है वे तुम्हारे माता-पिता ही इसका कारण हैं। घर में रहकर आजीवन उनकी सेवा करो, यही हमारा आदेश है।"

जन समुदाय ने फूलों की पत्तियां बरसा कर उच्च स्वर में नाद किया- "जय हो! जय हो! जय हो!"

वहां से प्रस्थान करके कालीवीर वीरों के दल को उनके नायक रौंगा सहित ले जाकर राजा मंडलीक के समक्ष उपस्थित हुए। वहां उन्हें राजा के अंग रक्षक के रूप में नियुक्त करके कालीवीर पुनः भ्रमण के लिए निकल पड़े।

_गो-मुक्ति के लिए गज़नी_ पर आक्रमण के प्रेरक-कालीवीर :-

एक बूढ़ी ब्राह्मणी राजा मंडलीक के दरबार में फरियाद लेकर आई कि उसकी कपिला गाय को मुगल बंदी बनाकर

गये हैं।[1] विदेशी लुटेरों द्वारा लूट ली गई गाय के एवज़
में राजा ने बुढ़िया को सवा लाख गायें देने की पेशकश की,
किन्तु, बुढ़िया ने इन्कार कर दिया। तब राजा ने सोनारों
द्वारा सोने की गाय बनवाई। इस बार बुढ़िया प्रलोभन में
फंस गई। सोने की गाय स्वीकार करके जब वह अपने घर
की ओर लौट रही थी तब कालीवीर ने उसे राज प्रासाद की
ड्योढ़ी पर रोका और पूछा- "क्या यह चल-फिर कर घास
खाएगी? क्या यह तुम्हारी आवाज़ सुनकर रंभाएगी? क्या
यह गाय तुम्हें अमृत–तुल्य दूध देगी? यह चाहे सोने से
बनी है, मगर है बेजान? यदि दूध देने वाली गाय को लूटने
के लिए लुटेरे गढ़ गजनी से आ सकते हैं तो सोने की गाय
लूटने के लिए वे इरान-खुरासान तक से दौड़े आएंगे। तब
तुम्हारे प्राणों को सांसत बन जाएगी। सोने की गाय खुरली
पर बांधने के बजाय कहीं धरती में गाड़कर छिपानी होगी।
ऐसा कर्म धर्म की मर्यादा के विरुद्ध है।"

बुढ़िया को वस्तु स्थिति से परिचित कराने के पीछे
कालीवीर का एक गंभीर प्रयोजन था। विधर्मी लुटेरों के
साथ सीधे टकराव से बच रहे राजा मंडलीक को अपने
कर्तव्य एवं धर्म का पालन करने के लिए बाध्य करने की
उनकी यह कूटनीतिक चेष्ठा थी। अततः कालीवीर अपने
ध्येय में सफल भी हुए।

---

1. मौखिक प्रथा के अनुसार यह गाय राजा मंडलीक ने दान करके बूढ़ी ब्राह्मणी को दी थी।

कालीवीर के निर्देश के अनुसार बुढ़िया राजा मंडलीक के दरबार मे उपस्थित हुई। उसने धातु से बनी गाय फेंकते हु कहा कि उसे तो एक मात्र अपने वाली गाए चाहिए। व अपनी उस कपिला गाए से कम कुछ भी स्वीकार नहीं करे जिसके माथे पर श्वेत दाग है, जिसकी पूंछ चंवर की भाँ है और जिसका रंग गोरा है। सात दिनों की उस बछिया व जब मां मर गई थी तो मैंने उसे टुकड़े दे-दे कर पाला थ उसके ब्याने पर तुम्हें उसके दूध और घी की बधाई भी पहुँचा थी। अब यदि तुम अपने धर्म का पालन नहीं करोगे तो अप पेट में कटारा घोंप कर आत्मघात कर लूंगी।"

राजा के समक्ष अपनी जिम्मेवारी निभाने के अतिरिक्त कोई विकल्प न था। यदि वह शत्रुओं के बंदीगृह में पड़ गायों के उद्धार का दायित्व नहीं निभाता तो उसे न त क्षत्रिय कहलाने का अधिकार है और न ही राजा बने रह का। कालीवीर द्वारा तैयार की गई आधारभूमि के कार राजा मडंलीक को गढ़ गज़नी के शत्रु के विरुद्ध यु अभियान की घोषणा करनी पड़ी। मंडलीक ने प्रण लिय कि वे गज़नी में खून की ऐसी नदी बहाएंगे जिससे नील अश्व के तंग (पीठ वस्त्र) तक खून से रंग जाएंगे।

बावन वीरों से परामर्श के उपरांत चढ़ाई कर दी गई युद्ध अभियान में वीर-प्रमुख कालीवीर सेना में सब

1. "मत्थेआ ब'ल्ली, पुम्भा दा चौरी, सोइयो कपला गोरी।"
—पृ० 100: डोगरी लोकगीत : भाग-2 (प्रथम संस्करण)

आगे थे। गज़नी नगर के बाहर शत्रु सेना की काला बाग नामक छावनी थी। कालीवीर को इस पर धावा बोलने का निर्देश देकर मंडलीक स्वयं अपने दस्ते सहित गज़नी की रक्षा पंक्तियों में घुस गए।

यवन सेना के मुख्य भाग से भिड़कर कालीवीर ने काला बाग के सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया। उधर राजा मंडलीक और उनकी सैनिक टुकड़ी ने गज़नी में कहर बरपा कर दिया। शूरवीर मंडलीक ने वहाँ रक्त की नदियां बहा दीं। तब कपिला गाय को छुड़ाकर राजा मंडलीक तेजी से काला बाग की ओर बढ़े।

कालीवीर द्वारा असुरों का दलन :–

संदेश आया था कि असुरदल पर्वतों पर स्थित देव स्थानों का विध्वंस कर रहे हैं। उन्होंने अनेक वृहत्काय मंदिरों को धूल-धूसरित कर दिया है। तब धर्म की मर्यादा को बचाने हेतु वीरदेव कालीवीर ने अपने द्रुतगामी वीरों सहित उत्तर के पर्वतों की ओर कूच किया। युद्ध नाद बजाते हुए यह वीरदल कई नदियां, नाले, पहाड़ तथा खाइयां पार करके अन्ततः एक विशाल हिमनद क्षेत्र में पहुंचे। वहां सूर्य का प्रकाश एक दीपक की भांति धीमा था। हाथ–पैर ठंड से ठिठुरे जाते थे। वनस्पतियां मृतप्राय हो चुकी थीं। आगे का रास्ता दृष्टिगोचर नहीं होता था।

इस विकट स्थिति पर विचार करने के लिए उन्होंने घोड़ों पर लाद कर लाई लकड़ी को पुआल रख कर

जलाया। फिर आग के बड़े अलाव के गिर्द बैठ कर विचार
विनिमय करने लगे।

केलूवीर बोले-"यों लगता है, हम रास्ता भटक
यहां पहुंच गये हैं। इस हिमनद के क्षेत्र में जहां न मा
है और न ही कोई अन्य प्राणी, यहां किस दिशा में जा
यह प्रश्न महत्वपूर्ण है।"

अगिया वीर बोले-"यहां सूर्य मात्र एक बिंदू प्रतीत होता है
नाहर सिंह– "हम लक्ष्य से भटक कर हिमनद में फं
गये हैं आगे बढ़ने पर और अधिक उलझने का अंदेशा है

महाकाल वीर ने कहा–"शीत की अत्यता उसी भां
मृत्यु की प्रतीक है जिस प्रकार ताप की अधिकता जीव
को समाप्त करने की क्षमता की वाचक है।"

कालीवीर बोले-"आपने सत्य कहा है महानुभाव
इस समय इस बात पर विचार करने की आवश्यकता
कि हिम-क्षेत्र से बाहर किस रास्ते से निकला जाए ता
हम वह काम कर पाएं जिसके हेतू हम पर्वतों के इस दुर्ग
क्षेत्र में आए हैं।"

समस्त वीर एक साथ बोले- "आप इस सैन्य दल
मुखिया हैं। आप हमें जो कहेंगे हम करेंगे। आपमें बड़ी
बड़ी कठिनाई को पार पाने की दिव्य क्षमता है। आप बु
के सूर्य हैं। यहां सूर्य का प्रकाश नहीं पहुंचता वहां तुरन्त आप
तीक्ष्ण बुद्धि पहुंच जाती है। इसलिए, इस समय आप आदे
करें कि हमारे वीर यूथ के लिए क्या करना अभीष्ट है।"

कालीवीर बोले – "नितान्त हिम एवं शीत के ऐसे क्षेत्र में किसी साधारण प्राणी का जीवित रहना अत्यन्त दुष्कर है। यहां पग-पग पर मौत के ऐसे कूएं हैं जो बर्फ की पतली तहों से ढंके रहते हैं, उन पर पांव पड़ते ही प्राणी हिम-पाताल नामक नरक में पहुंच जाता है। इसलिए हे वीरो! हमें हिम पर अपने पैरों के चिन्हों का निरीक्षण करते हुए उसी मार्ग से वापिस लौटना है जहां से होकर हम आए थे।"

महाकाल–"हमारा इसी समय निकलना अत्यावश्यक है।"

अगिया वीर–"प्रातः लौट चलने में क्या बुराई है। हमारे पास दो दिनों के लिए पर्याप्त मात्रा में लकड़ी है।"

कालीवीर–"प्रातः होने तक हमारे पग-चिन्ह नहीं रहेंगे। रात्रि को तेज हवाएं चलेंगी जिससे अग्नि का यह अलाव हमारे लिए घातक बन जाएगा। इस समय हम तुरन्त लकड़ी के प्रकाशके[1] उठाकर वापिस लौट सकते हैं। अभी दिन भी काफी है। यहां रात काटने पर भी हमें नींद नहीं आएगी, जिससे न तो हमारी थकान उतरेगी और न कोई अन्य लाभ होगा।"

वीरभद्र–"अधिक सोच-विचार में समय गंवाने से अच्छा है हम उठें और घोड़ों पर सवार हो जाएं।"

वे तुरन्त चलने के लिए तैयार हो गये तथा उसी रास्ते पर यात्रा करने लगे जिधर से वह आए थे। दो घड़ी भर चलने

---

1 *मिशालें। चीड़ आदि की तैलीय लकड़ी के टुकड़े जिनसे अंधेरे में प्रकाश किया जाता है।*

के उपरान्त कालीवीर का काला अश्व स्वतः रुक गया।
कालीवीर ने अपने दल के वीरों को सम्बोधित करके कहा-
"मेरा यह काला घोड़ा हवा को सूंघ कर अपना दायां कान
हिला रहा है जो इस बात का सूचक है कि यहां कहीं आस-
पास ही मानव अस्तित्व की संभावना है।"

अगिया वीर- "क्या इस संकेत का कोई विशेष
अर्थ है?"

कालीवीर –"हां, इसका अर्थ यह है कि हमें दायीं ओर
के क्षेत्र में तलाश करनी चाहिए। मैं केलूवीर जी से आग्रह
करूंगा कि वे दायीं ओर की पहाड़ियों तक जाएं और वहां
सूक्ष्म निरीक्षण करें।" अभी अंतिम शब्द कालीवीर जी के
मुख में ही थे कि केलूवीर घोड़े को दौड़ाते हुए दूर दायीं ओर
की पहाड़ियों की ओर निकल गये। वहां घोड़े से उतर कर एक
गुफा के भीतर चले गये। कुछ क्षणों के उपरान्त वह बाहर
निकले और हाथ हिला कर अन्य वीरों को अपनी ओर आने
का संकेत करने लगे। वीर दल तुरन्त पहाड़ी गुफाओं वाले
क्षेत्र तक पहुंचा। वहां उन्हें अनेक गुफाएं दिखाई दीं।

केलू वीर–"भैया, इन गुफाओं में अनेक साधु-संन्यासी
समाधि की मुद्रा में बैठे हुए हैं। किन्तु, किसी में भी प्राण दिखाई
नहीं देते। उनके नग्न शरीरों पर ढेरों धूली पड़ी हुई है।"

तमाम योद्धा गुफाओं में घुस गये। यह देख कर वे
दंग रह गये कि तपस्वी लोग मिट्टी के बुत्तों की तरह पड़े
हुए हैं। कुछ शरीर मात्र चमड़ी मढ़े अस्थि पंजर दिखाई दे

रहे थे। कुछ ऐसे थे मानो बर्फ की शीतलता ने उन के प्राण हर लिए हों।

तमाम योद्धा बाहर आकर इस विचित्र स्थान के विषय में विचार करने लगे। कालीवीर बोले—"यह गुहा क्षेत्र प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रहा है। वे समाधि अवस्था में शरीर त्याग कर ब्रह्मतत्त्व में लीन हो गये होंगे। इन्हीं महापुरुषों के कारण भारत भूमि महान् कहलाती है।"

वीर भद्र ने पूछा —"हे महावीर, पृथ्वी पर अत्याचार, अनाचार, हत्या और अनेक प्रकार के दुष्कृत्य प्रायः होते रहते हैं। लोभ-लालच तथा काम, क्रोध आदि के कारण मानव अनेक ऐसे कार्य करता है जो उसके अपने लिए तथा दूसरों के लिए कष्ट का कारण बनते हैं।"

कालीवीर—"हे वीरभद्र! पृथ्वी पर जीवन में उतार-चढ़ाव लाने वाले जो अनेक कारण हैं उनमें लोभ, मोह, अहंकार, काम तथा क्रोध प्रमुख हैं। यदि इन्हें जीवन से निष्कृत कर दिया जाए तो पृथ्वी स्वर्ग समान हो सकती है। जो लोग जीवन में इन पांच घटकों की अधीनता स्वीकार करते हैं वे दूसरों के लिए सदा कष्टों की फसल बोते हैं। कुछ अन्य लोग भक्ति और ज्ञान की ज्योति द्वारा इन पर नियन्त्रण पाने का प्रयत्न करते हैं तथा कुछ योग-साधना द्वारा इन्हें काबू करने की चेष्टा करते हैं। पृथ्वी पर कांटों की तरह बिखरी इन पांच दुष्कृतियों ने मानव के तन तथा मन को बींध रखा है। जो लोग इनसे उभरने का प्रयास

करते हैं, उनमें से कुछ समाधि लीन तपस्वियों की भांति
के पार हो जाते हैं। जबकि कुछ मद में मस्त व्यक्ति की भ
दूसरों के लिए कष्ट का हेतु बनते हैं।''

केलूवीर–''भैया, इस पुण्य भूमि पर जो विधर्मी लो
हमारे पूज्य स्थलों को भ्रष्ट एवं खण्डित करने का प्रया
कर रहे हैं, वे किस कोटि में समाते हैं।''

कालीवीर–''वे लोग पांच दुष्कृतियों में आकंठ डूबे हु
हैं। वे मात्र धरती का बोझ बढ़ा रहे हैं। उन्हें हतोत्साहि
करने के लिए उन्हें उसी भाषा में समझाना आवश्यक
जिसे वे अच्छी तरह समझते है और वह भाषा है खड्ग की
अत्याचारी का विरोध न किया जाए तो वह अपने अत्याचा
भरे आचरण को ईश्वर का आदेश मानने लगता है। ऐ
अत्याचारी का संहार धर्म क्षेत्र में पुण्य का वाचक मान
जाएगा। अत्याचार की परंपरा आगे न बढ़े, इसलिए इ
मिटाना आवश्यक है। परमपूज्य श्री हरि ने मधु-कैटभ, श्री
राम ने रावण-कुम्भकरण तथा श्री कृष्ण ने नानाविध राक्ष
का संहार किया है। पापी का भंजन करने में पाप का विचा
व्यर्थ है, बल्कि उस के संहार से न युग का उदय होता है
दुष्ट संहार ईश्वर के निमित्त अर्पित सर्वोपरि उपहार है।''

वीरभद्र - ''प्रभु, ऐसे ही कार्य के लिए हम धर्
अभियान पर निकले थे, किन्तु, दैव ने हमें रास्ते से भटका
कर इस हिम-नद क्षेत्र में धकेल दिया है। क्या ईश्वर को
धर्म रक्षा का हमारा उद्घोष स्वीकार्य नहीं है?''

कालीवीर – "विधि के प्रत्येक कार्य में एक रहस्य निहित रहता है, हमें यह तथ्य स्मरण रहना चाहिए। मैं समझता हूं हमारे वीरों को यह मद हो चुका है कि हम अपने बल से सब कुछ करने का सामर्थ्य रखते हैं। बल के घमंड में हम उस कारयित्री शक्ति की अनदेखी कर देते हैं जो प्रत्येक वस्तु की सफलता में मूलभूत रूप से पैठ रही है। संभवतः इसी वस्तु का भान कराने के लिए दैव ने हमें यहां धकेल दिया है। हमें भूलना नहीं चाहिए कि नियंता कहीं और है, हम मात्र उसकी इच्छा का पालन करने वाले हैं। जब हमारी निजी महत्वाकांक्षाएं अग्नि की लपटों की भांति उमड़ रही थीं, दैव ने हमारे पग हिम-नद की ओर मोड़ दिये ताकि हमारी अहम्मन्यता की अग्नि शमित हो।"

तमाम वीर बोल उठे – "धन्य हो! धन्य हो!"

तभी केलूवीर बोले– "बड़े भ्राता, इस ओर एक बहुत बड़ी गुफा है। जिसके द्वार पर एक भारी शिलापट रखा गया है। इसे हटा कर देखना चाहिए कि इसके भीतर क्या है। कालीवीर के संकेत करते ही वीरों ने शिलापट को हटा कर एक ओर कर दिया। देखा, एक वृहत गुफा दूर तक चली गई है जिसके दूसरी ओर का गुहामुख खुला हुआ है और वहां से प्रकाश की बाढ़ आ रही है।

समस्त वीर अपने घोड़ों सहित गुफा में दाखिल हो गये और दूसरे द्वार से खुले मैदान में पहुंच गये। यह देख कर उनकी खुशी की सीमा न रही कि वहां सर्वत्र हरियाली

छा रही थी। पेड़ों पर फल और फूल खिल रहे थे। एक विचित्र बात यह थी कि इस विस्तृत भू-भाग पर कहीं भी मानव अथवा अन्य प्राणी के अस्तित्व का चिन्ह तक दिखाई नहीं देता था।

कालीवीर बोले-"यह स्थल किसी ऋषि का आश्रम दिखाई देता है।"

वीरभद्र ने पूछा-"यह आप किस आधार पर कह रहे हैं वीर देव?"

कालीवीर - "यहां छाई शान्ति और बागीचों के कारण ही मैं ऐसा कह रहा हूं। यूं लगता है कि प्रकृति सन्नाटे का पाठ रट रही है।"

केलूवीर बोले-"प्रभु इस सन्नाटे का भेदन एक मद्धम मन्त्र ध्वनि कर रही है। कृपया ध्यान से सुनें।"

सभी ध्यान से सुनने लगे।

"ओऽम् महावीराय नमः! ओऽम् कालीवीराय नमः।" निरन्तर यह मन्त्र ध्वनि गूंज रही थी। केलूवीर बोले- "यह ध्वनि सामने के विशाल पेड़ों के झुरमुट से आ रही है वहां चल कर देखना चाहिए।"

तमाम वीर झुरमुट के निकट पहुंचे। वहां उन्हें एक विस्तृत बांबी दिखाई दी। बांबी के समक्ष एक पेड़ के नीचे हनुमान जी की सिंदूर पुती मूर्ति रखी हुई थी। बांबी से दो आंखें झलकती देखकर वीरभद्र बोले -"यहां किसी नाग की बांबी है।"

कालीवीर – "नहीं भैया, यह दो नेत्र उस तपस्वी ऋषि के हैं जिसके शरीर पर यह बांबी बन गई है। यही ऋषि, महावीर हनुमान जी के नाम के संग हमारे नाम का जाप कर रहे हैं।"

तमाम वीर यूथ आश्चर्य से देखने लगा। केलूवीर बोले – "हमें इन ऋषिवर पर से मिट्टी हटा देनी चाहिए ताकि हम इनसे वार्तालाप कर सकें।"

कालीवीर–"मिट्टी हटाने का प्रयास अभी न करें, हम जो कुछ भी करें इनसे पूछ कर करें।" तब हाथ जोड़ कर विनीत भाव से बोले–"हे ऋषिवर, हम आपके संग वार्ता करने के इच्छुक हैं। आप बतलाएं कि यह किस तरह संभव है।

सहसा बांबी के ऊपर छाया करने वाले पेड़ की टहनियां हिलीं। ऋषि की बांबी स्थित आंखें मूंदी। सहसा एक प्रकाश-सा उभर कर उनके समक्ष खड़ा हो गया। तब यह प्रकाश एक युवा ऋषि की आकृति में परिवर्तित हो गया।

ऋषि ने कहा- "हे वीरवर कालीवीर जी, आप मेरा कोटिशः नमस्कार स्वीकार करें।"

कालीवीर–"हे महात्मन्! मैं आपको प्रणाम करता हूं। आप कौन हैं और मेरा नाम कैसे जानते हैं?"

ऋषि– "हे दीन बन्धु! हे शेषावतार प्रभु! मेरा नाम प्रणव है। जमदग्नि जी के प्रसिद्ध भृगुवंश से मेरा संबंध है। जब द्वापर युग का अंत होने वाला था तब कलियुग के आगमन की अनेक त्रासद कथाएं विश्व में फैल रही थीं। सारा जग

डरा हुआ था। नवयुग अर्थात् कलियुग में ऐसा पापाचार फैलेगा जैसा किसी ने न देखा, न सुना होगा। ऐसे-ऐसे मत-मतान्तर उभरेंगे जो अमानवीय आचरण को धर्म का मर्म ब्यान करेंगे। सदाचार दुर्गुण माना जाएगा और लंपट लोगों की जय-जयकार होगी। कलियुग के आगमन की बातों से घबरा कर अनेक ईश्वर विश्वासी लोग पर्वतों की ओर प्रस्थान कर गये। उस युग में मैं भी तप हेतु इस भू-क्षेत्र में आया था। मेरे गुरु श्री अर्धनारीश्वर ने बतला रखा था कि यदि मैं रामदूत हनुमान जी की साधना और आराधना करूंगा तो सब प्रकार के भवबन्धन और भव भय कट जाएंगे। मैं निरंतर हनुमान जी के स्तवन में लगा रहा। मेरी भौतिक देह पर बांबी बन गई। किन्तु, अपने आराध्य देव की कृपा से मिट्टी के उस शरीर से अलग होकर प्रकट या अदृश्य होने की शक्ति मुझे मिल गई। मैंने श्री हनुमान जी से प्रार्थना की कि वे कलियुग के अन्त तक मेरे संग रहें ताकि कलियुग के कल्मष मुझे छू न सकें। मेरी विनती सुनकर श्री हनुमान जी ने कहा कि प्रत्येक युग में हरि इच्छा की पूर्ति के लिए भिन्न-भिन्न वीरपुरुष धरती पर अवतरित होते हैं। यद्यपि सृष्टि के अन्त तक मुझे रहना है तथापि कलियुग में प्रधान वीरदेव की भूमिका श्री कालीवीर की होगी। कलियुग में जो कोई कालीवीर के नाम के संग मेरा नाम ध्यावेगा वह समस्त कष्ट-संकट, रोगादि से मुक्ति पा कर मनवांछित वर पाएगा। हे कलिकाल के स्वामी! आज आपके साक्षात् दर्शन पाकर मैं धन्य हुआ।"

कालीवीर-"ऋषिवर, यह रामदूत श्री हनुमान जी का अपार स्नेह है कि वह स्वयं कर्ता होते हुए भी बड़े-बड़े कार्यों का श्रेय मुझ जैसे वीरों को देते हैं।"

तब केलू वीर बोले –"ऋषिवर, कृपया बतलाएं यहां आने के लिए जिन गुफाओं से हम गुजरे हैं, इनमें जो अनेक तपस्वी लोगों के शरीर समाधि की अवस्था में पड़े हैं– वे कौन हैं?"

प्रणव ऋषि –"हे वीर देव! ये वे लोग हैं जिन्होंने श्री राम, श्री लक्ष्मण तथा श्री हनुमान जी के प्रति त्रेतायुग में व्रत लिया था कि इनकी तपोशक्ति उन्हें प्राप्त हो तथा वे रावण आदि राक्षसों पर विजय पाकर लौटें। अतः यह सब तपस्वी ऋषि-मुनि हैं। तत्पश्चात् इन्होंने तप की अवस्था में ही मुक्ति पा ली। इनके सूक्ष्म शरीर दल बांध कर आपके साक्षात्कार हेतु तीर्थाटन पर निकले रहते हैं।"

कालीवीर–"यहां इस सुदूर क्षेत्र में ऐसा निविड़ आश्रम देखकर हार्दिक प्रसन्नता होती है। किन्तु, कलियुग के इस चरण में इस जैसे आश्रम यहां आप सरीखे जीवन्मुक्त ऋषि-मुनि अदृश्य अवस्था में तपोलीन हैं-इन पुनीत स्थलों की मर्यादा कलियुग की कालिमा के घेरे में आने वाली है। पृथ्वी पर समय के इस चरण में असुरों की शक्ति पुनः बढ़ती जा रही है। वे नूतन-पुरातन देव- स्थलों की पवित्रता को भंग कर रहे हैं।"

प्रणव ऋषि –"यह कलियुग के चरित्र के अनुरूप है, वीरदेव। पृथ्वी के संताप अभी और बढ़ेंगे। सभ्य मानव के

लिए अकरणीय कर्म को धर्म की मर्यादा मान कर प्रचारि
किया जाएगा। मानव जीवन कीड़े-मकौड़ों की भांति निम्न
स्तरीय हो जाएगा। असुर च्यूंटियों की भान्ति अपनी संख्या
बढ़ाएंगे, भोग और सन्तानोत्पत्ति ही उनका मुख्य ध्येय
होगा। तप, त्याग, मोक्ष, भक्ति, मुक्ति, ज्ञान, धर्म आदि की
अवधारणा क्षीण पड़ जाएंगी। इतना ही नहीं वे धरती को
वृक्ष और वनस्पति से विहीन बना कर पूर्णतया ऊसर एवं
मरू भूमि में बदल देंगे।''

कालीवीर–''यह आपने पूर्णतया सत्य कहा है
ऋषिवर, कलियुग में धर्म का संरक्षण सरल नहीं है। किन्तु
श्री हरि की कृपा से कलियुग की तमाम निराशाओं से पार
पाकर धर्म का सूर्य पुनः उदित होगा यह निश्चित् है।''

इतना कहकर कालीवीर जी ने हनुमान जी की मूर्ति के
समक्ष हाथ जोड़े और कहा–''यदि बल और बुद्धि के धाम
श्री हनुमान जी की कृपा रही तो अधर्म का नाश अवश्यमेव
होगा तथा धर्म की ध्वजा फहराएगी।'' तभी एक अद्भुत
प्रक्रिया हुई। रुद्रावतार हनुमान उनके समक्ष सशरीर प्रकट
होकर खड़े हो गये तथा हाथ जोड़ कहने लगे– ''श्री कालीवीर
की जय हो। अहीस श्री शेषनाग मेरा प्रणाम स्वीकार करें।''

श्री कालीवीर, ऋषिवर प्रणव तथा समस्त वीर देव
हाथ जोड़ कर खड़े हो गये और जय-जयकार बुलाने लगे–
महाबली हनुमान की जय। विगत जन्मों में हमने बहुत
पुण्य किये होंगे जो आपके दर्शन प्राप्त हुए।''

हनुमान –"कालीवीर जी तथा नाहर सिंह ज़ी, आपके संग इन तमाम विभूतियों के दर्शन पाकर मैं धन्य हुआ।"

कालीवीर–"प्रभु धन्यं तो आपने हमें किया है। अपने भक्तों की रक्षा आप उनके जन्म-जन्मांतर तक करते रहते हैं। मैं तो मात्र आपका सेवक हूँ। आपके शिव रूप में आपके गले में शेषनाग के रूप में लिपटा रहता हूँ। शिव रूप में मुझे कंठहार बना कर आपने एक ऊंचा स्थान प्रदान किया है। श्रीलंका के युद्ध में मेरे मूर्छित होने पर आपने संजीवनी लाकर मेरे प्राण उभारे, नागपाश में बंधने पर आपने ही हमें मुक्त किया, अहिरावण द्वारा अपहृत होने पर आपने हमारी रक्षा की थी, द्वापर में भी अदृश्य रूप में आप हम दो भाइयों कृष्ण-वलदेव के अंग-संग रहे थे।"

हनुमान –"हे कालीवीर, यह आपका और श्री हरि का वड़प्पन है जो मुझे इतनी वढ़ाई दे रहे हैं, वरना मेरा तो कार्य ही है प्रभु कार्य में सहाई होना। कलियुग में मुझे आपके अंग-संग रहने की भूमिका दी गई है। अदृश्य रूप में आपको भटका कर मैं ही यहां लाया था। मेरा प्रयोजन आपको इस भूमि तक पहुंचाना था, क्योंकि त्रेतायुग में इन ऋषिगणों ने मुझ से वरदान मांगा था कि मैं इन्हें आपका साक्षात्कार कराने में सहायता करूंगा। जिन तपस्वियों को समाधिस्थ अवस्था में आपने गुफाओं में देखा था वे आपके आने की सूचना पाकर तीर्थाटन से लौट आए हैं। अब वे गुफाओं के वाहर खड़े होकर आपके स्वागत की तैयारी कर रहे हैं।"

कालीवीर –"पवन पुत्र, आपकी कृपा से वह पावन घड़ी आ गई है जब हम उन सिद्ध ऋषियों के दर्शन का पुण्य लाभ कर सकेंगे।"

चलते-चलते केलूवीर ने राम भक्त हनुमान से प्रश्न किया– "प्रभु, लोग आपको भी बल और बुद्धि का अवतार कहते हैं, इसलिए श्री कालीवीर में आपसे भिन्न क्या है?"

हनुमान मुस्कुरा कर बोले–"केलूवीर जी, सब कुछ जान कर भी आप अनजान बनते हैं। फिर भी अन्य वीर देवों के ज्ञान हेतु मैं बतलाता हूं। कलियुग में बल और बुद्धि ही पर्याप्त नहीं होंगे–इस तथ्य के दृष्टिगत दैव ने निश्चय किया कि कालीवीर बल, बुद्धि के अतिरिक्त छल और प्रपंच का आश्रय भी लेंगे। कारण कि सत्य युग, त्रेता और द्वापर में असुर और राक्षस अपने जातीय चरित्र पर कायम थे। वे अपने बल के मद में चूर रहते थे। अतएव, देवताओं द्वारा यथेष्ट बल और बुद्धि के प्रयोग द्वारा मारे जाते थे। परन्तु, कलियुग में आसुरी शक्तियां प्रायः निर्बल होंगी, विरल असुर ही बलवान् योद्धा होंगे। किन्तु, वे सब शत- प्रतिशत रूप से धोखाधड़ी, बुराई और बेइमानी जैसे घातक शस्त्रों का आश्रय लेंगे। अतः उन्हें पराजित करने हेतु कूटनीति और प्रपंच का प्रयोग एक शस्त्र के रूप में करना अवश्यम्भावी होगा। कालीवीर बल, बुद्धि और कूटनीति का मूर्तिमान रूप होंगे।"

इतने में श्री हनुमान, ऋषि प्रणव तथा कालीवीर अपने यूथ सहित वापिस उन गुफाओं के बाहर पहुंचे। वहां

अनेक साधु वेशधारी ऋषि-मुनि खड़े थे। वे इन सब पर फूल-पत्तियों की वर्षा करते हुए जय-जय कार करने लगे।

हनुमान–"हे परमपूज्य ऋषिगणो, आप जिन महावीर जी की प्रतीक्षा में युगों से तपस्या में लीन थे तथा समस्त विश्व में तीर्थाटन करके जिन्हें ढूंढ़ा करते थे, वे आज इस पुण्य भूमि पर पधारे हैं। उच्च स्वर में आप उनकी जय- जयकार करें।"

ऋषिगण बोले–"कलियुग उद्धारक, श्रीहरि के परम प्रिय, शेषावतार भगवान् श्री कालीवीर जी की जय हो। जय हो। जय हो।"

कालीवीर– "हे महात्मन्! आप मेरी जय के स्थान पर श्री हनुमान जी की जय का घोष करें, क्योंकि पवनपुत्र हनुमान जी धर्म के प्रतीक हैं। कलियुग में धर्म की जय ही अधर्मियों का क्षय करेगी।"

केलू वीर – 'धर्म की जय हो। पवन पुत्र हनुमान की जय हो। श्री कालीवीर की जय हो।"

वीर यूथ तथा समस्त ऋषि केलूवीर के संग जयकार बुलाने लगे।

तत्पश्चात् ऋषि प्रणव बोले–"हे महावीरो! आप जिस शुभ कार्य के लिए निकले हैं, उसमें आपकी सफलता अवश्यम्भावी है। धर्म और अंधर्म के युद्ध में अथवा प्रकाश और अन्धकार के संघर्ष में सदा धर्म रूपी प्रकाश ही विजयी रहा है। आप सब के संग हमारी शुभकामनाएं रहेंगी। आपका धर्मयुद्ध सफल होगा।"

महावीर हनुमान बोले—"कलियुग में होने वाले प्रत्येक धर्मयुद्ध में मेरी शक्ति वीर शिरोमणि कालीवीर के संग रहेगी। इनकी ध्वजा पर मैं आकृति के रूप में विराजमान रहूंगा, जिससे जन-मानस को आश्वस्ती रहे कि मैं और कालीवीर भिन्न नहीं हैं। हम दोनों धर्म की एक मुद्रा के दो पक्ष हैं। अब मैं आप समस्त ऋषिजनों तथा वीरदेवों से आज्ञा चाहूंगा।" तत्पश्चात् हनुमान जी हाथ जोड़कर सहर्ष अन्तर्धान हो गये। समस्त ऋषियों ने वीरदेवों को विदा करने के लिए वर दिया। प्रणव ऋषि बोले—"आप यहां से पूर्व दिशा की ओर बढ़ते जाइये। कल दोपहर तक आप का टकराव प्रथम असुर दल से होगा। जिस श्रेष्ठ कार्य का बीड़ा उठाकर आप निकले हैं, उसके लिए सफलता आपकी प्रतीक्षा कर रही है। आपके खड्ग जिन्हें असुर रक्त की पिपासा है भरपूर अपनी तृष्णा मिटाएंगे। हे महावीर कालीवीर आपके नेतृत्व में धर्म की ध्वजा सदा ऊंची रहेगी।"

इतना कहकर प्रणव ऋषि सहित समस्त ऋषि अन्तर्धान हो गये। वीरों के दल ने अपने अभियान पथ पर रास्ते में एक स्थान पर रात्रि विश्राम किया। प्रातः पुनः दर्शित दिशा में आगे बढ़ने लगे। रास्ते में असुरों द्वारा की गई तोड़-फोड़ के चिन्ह दिखाई पड़ने लगे। कहीं पर निर्दोष लोगों को काट कर रास्ते में फेंका गया था, कहीं किसी को पेड़ से लटका कर फांसी दी गई थी, कहीं घर जल रहे थे तो कहीं 'देवालय' खंडित किये गये थे।

यह दृश्य देखकर नाहर सिंह और महाकाल वीर क्रोध से उफनने लगे। अदृश्य शत्रु की तलाश में वीरों का दल आगे ही आगे बढ़ा जा रहा था। तभी एक नदी के तट पर एकाएक तीव्र शोर मचाते हुए असुर घुड़सवार युद्ध के लिए आते दिखाई पड़े। आगे, पीछे और बाजू की दिशा से असुरों के दल उनकी ओर आ रहे थे।

कालीवीर–"वीरो, हम तीन ओर से घिर चुके हैं, किन्तु, हमारे लिए दिशाएं महत्व नहीं रखतीं, न ही शत्रुओं की संख्या ही कोई अर्थ रखती है। हमारे लिए महत्वपूर्ण है मात्र यह बात कि हम कितने समय में इन दुष्टों को रसातल में पहुंचाते हैं।"

वीरदेव तीन दलों में बंटकर तीन दिशाओं से आ रहे असुरों के झुंडों से जा भिड़े। खड्ग टकराने, खपाखप गरदनें कटने तथा असुरों के चीत्कार से रणभूमि पट गई। देखते ही देखते वीरदेवों ने आक्रमणकारियों पर कहर बरपा कर दिया। कुछ ही समय में युद्ध समाप्त हो गया। इसी समय घोड़ों पर सवार दो असुर योद्धाओं को भागते देख कर नाहर सिंह ने उन्हें घोड़ों से गिरा दिया। फिर उन्हें गरदनों से पकड़कर बोले–"क्यों भई बहादुरो, तुम कायरों की भान्ति भागे क्यों जाते हो। युद्ध करने आए हो तो युद्ध करो, हमें मारो या खुद मरो।"

उन दो में से एक बोला –"मुझे छोड़ दो मैं इन सबका सिपहसलार हूं। तुम्हें मुंह मांगा इनाम दूंगा।"

नाहर सिंह–"इनाम देने के लिए तेरे पास है क्या?"
सिपहसलार– "मेरे पास हीरे जवाहरात, सोना, चांदी और कीमती पत्थर हैं।"
नाहर सिंह– "यह सब तूने यहां के मंदिरों अथवा श्रेष्ठियों से लूटे हैं। तुम हमारी ही दौलत से, मेरे साथ अपनी जिंदगी का मोल-तोल कर रहे हो और यह भगौड़ा कौन है तेरे साथ ?"
सिपहसलार– "यह मेरा अंगरक्षक है।"
नाहर सिंह – "अंगरक्षक तो बहुत शक्तिशाली होता है, जभी वह दूसरों की रक्षा कर सकता है। मैं इसकी शक्ति को आजमाता हूं।" इतना कह कर नाहर सिंह ने दहाड़ कर एक मुक्का अंगरक्षक की छाती पर मारा। वह चीख कर वहीं ढेर हो गया। यह देख कर सिपहसलार गिड़गिड़ाने लगा–"मेरी जान बख्श दो।"
नाहर सिंह– "तूने कितने लोगों की जान बख्शी थी। खुद को तुम लोग बड़ा बहादुर मानते हो। तुम्हारी बहादुरी क्या निहत्थे और कमज़ोर लोगों पर जुल्म ढाने में है। अपनी बराबरी का योद्धा मिलने पर तुम प्राणों की भीख मांगते हो।"
वीरभद्र बोले– "जितने अत्याचार इसने किये हैं, उनके लिए यदि इसे पचास बार भी मृत्यु दंड दिया जाए तो कम है।"
सिपहसलार–"आप लोग रहम-दिल कहलाते हो। मुझ पर रहम करो।"

केलूवीर– "रहम दिली क्या केवल हमारे लिए है? तुम सदा जुल्म और धोखे से काम लेते हो।"

कालीवीर– "पर्वतों की शान्ति भंग करने के लिए जितने भी दल आए हुए हैं यह उन सब का सरगना है। अपनी पुण्य भूमि से इसे जीवित जाने देने का अर्थ है असुरों को अत्याचारों के लिए प्रोत्साहित करना। यदि एक असुर भी अपने देश में जीवित लौट कर जाएगा, वह बीसियों दूसरे लुटेरों और विध्वंसकारियों को अपने संग लेकर आएगा।"

सिपहसलार पर यह स्पष्ट हो चुका था कि उसके प्राण अब बचेंगे नहीं। इसलिए वह बोला–"मेरा गला सूख रहा है मैं पानी पीना चाहता हूँ।"

नाहर सिंह चीख उठे – "अरे दुष्ट। तू तो निर्दोष लोगों का रक्त पीने आया था। अब तक तूने सैंकड़ों निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतारा है। उनके रक्त से तेरी प्यास नहीं बुझी तो आ मैं तेरी प्यास बुझाता हूं।"

इतना कहकर वे उसे गरदन से दबोच कर नदी के बीच ले गये वहां डुबकियां लगा कर उसे पानी पिलाने लगे। असुर सेनापति छटपटाता रहा। अन्ततः फेफड़ों में जल भर जाने के कारण प्राण त्याग गया। नाहर सिंह ने उसे नदी में पटका और स्वयं बाहर चले आए।

कालीवीर-"असुर लुटेरे बहुधा डरपोक होते हैं। निहत्थों की हत्या करने में इन्हें अतीव आनन्द आता है। हिंस्र पशु की भान्ति इन्हें ढूंढ-ढूंढकर मारना आवश्यक है। आप

तमाम वीरदेव इन्हें इस ध्वस्त नगर में ढूंढिए जहां कहीं ये छिपे हों इन्हें बाहर निकाल कर इनका निदान कीजिए।"

इतने में उस पर्वतीय नगर के कुछ निवासी वहां चले आए तथा हाथ जोड़ कर बोले – "हे महावीरो, आप हमारे लिए ईश्वर बनकर इस नगर में पधारे हैं। इन दुष्ट असुरों ने हमारी सदियों की विरासत को धूल में मिला दिया है। इन्होंने हमारी संस्कृति का अपमान किया है। हमारे शान्तिप्रिय राजा तथा उसके दरबारियों को मार डाला है।"

केलूवीर – "हे नगर श्रेष्ठ! आपकी व्यथा का समाचार पाकर ही श्री कालीवीर से रहा न गया, इसी वास्ते अपने सेनानियों सहित आपके उद्धार हेतु यहां पधारे हैं।"

वीरभद्र– "आज सारा देश इनके गुण गा रहा है।"

नागरिक – "हे कालीवीर जी, आपने बहुत कृपा की। हमारे दुःखों का निवारण किया। इस उपकार से हम कैसे उऋण हो सकते हैं।"

कालीवीर – "हे श्रेष्ठिजनो! जिन देवस्थानों का अपमान हुआ है आप अपने उद्यम तथा धन से उनका उद्धार करवाइये। इतना ही नहीं नगरों की सुरक्षा के लिए युवा वीरों के दल गठित कीजिए और सब से बढ़ कर इस बात का ध्यान रखिए कि आपकी विशाल हृदयता एवं दयालुता को कोई आपकी कमजोरी न समझे।"

नागरिक–"प्रभु! आपका आदेश शिरोधार्य है। हम पहले से भी अधिक सुन्दर मंदिर बनवाएंगे। उनकी सुरक्षा

प्राचीन कालीवीर मंदिर, सुंजवां (बाहरी दृश्य)

के लिए उचित प्रबंध करेंगे। हम आपका मार्गदर्शन चाहते हैं तथा आपका अभिनन्दन करने की इच्छा भी है। आप कुछ दिन इस नगर में रुकिए।''

कालीवीर – ''देश में निर्दयी असुरों के अनेक दल घुस आए हैं इस समय हमें उन्हें ध्वस्त करने के लिए आगे बढ़ना है। हमारे अभिनंदन की चिन्ता छोड़ कर आप अपने नगर के निर्माण तथा सुरक्षा की चिन्ता कीजिए।''

इतना कहकर श्री कालीवीर अपने यूथ के संग हनुमान जी की ध्वजा उठाए अपने अगले गन्तव्य की ओर निकल पड़े।

कालीवीर द्वारा राजा मंडलीक को सैन्य शिविर विषयक परामर्श :-

राजा मंडलीक जब गजनी की ओर सैन्य अभियान पर निकले, तब सिंध नदी के इस ओर के किनारे पर पहुँचने पर ठंडी बयार बहने लगी। कुछ देर बाद आकाश से वर्षा की धीमी फुहार पड़ने लगी। कई दिनों से चल रही सेना को नदी के तट पर खेमे गाड़ने का आदेश हुआ। आदेश मिलते ही थके-मांदे घुड़सवार और पदाति सैनिक नदी तट पर सुस्ताने लगे।

कालीवीर ने मौसम और स्थान का निरीक्षण करके राजा मंडलीक को परामर्श दिया कि रात व्यतीत करने के लिए यह स्थान कदापि सुरक्षित नहीं है।

राजा मंडलीक ने पूछा- ''इसमें क्या खराबी है, कृपया स्पष्ट करें।''

कालीवीर बोले- ''जब वर्षा का मौसम हो या बारिश की संभावना हो तो खड्ड या दरिया आदि के किनारे कभी आराम नहीं करना चाहिए।''

मंडलीक ने पूछा- ''इस में क्या हानि है?''

कालीवीर बोले- ''नदी का ठंडा किनारा देखने में तो बड़ा सुहावना लगता है, किंतु सेना आदि के विश्राम के लिए ऐसा स्थान उपयुक्त नहीं होता। कारण कि इस स्थान पर जो धीमी वर्षा दिखाई दे रही है वस्तुतः वह दो कोस पीछे तेज़ वर्षा भी हो सकती है। कई बार साफ मौसम में पहाड़ों से सहसः जो बाढ़ आ जाती है, वह भी इसी कारण से होता है। ऐसी दशा में यदि राजा अपनी सेना सहित किसी नदी के तट पर रात्रि के समय विश्राम करता है तो निश्चय ही वह भारी भूल करता है, क्योंकि यदि अचानक तेज बाढ़ आकर राजा और सेना को बहाकर ले जाती है तो विरोधी एवं शत्रु देश को तहस-नहस कर डालेंगे। और राजा तथा उसकी सेना अपने सैन्य उद्देश्य पूर्ण नहीं कर पाएंगे।''

राजा मंडलीक ने पूछा- ''इस समय हमें क्या करना चाहिए?''

कालीवीर बोले- ''यात्रा के दौरान सदा यह नियम रहना चाहिए कि यदि आप नदी-नाले के समीप आ जाएं तो वहाँ विश्राम न करें। नदी आदि को तेज़ी से पार कर लें और आगे बढ़ जाएं। यदि दिन रहते नदी पार कर पाने की संभावना न रहे तो इस ओर के किनारे से काफी इधर किसी ऊंचे और सुरक्षित स्थान पर खेमे लगा लें।''

राजा मडंलीक ने पूछा- "अभी दिन शेष है, क्या हम सेना को उस ओर जाकर खेमे गाड़ने का आदेश दें?"

कालीवीर ने उत्तर दिया- "वर्षा के दौरान नदी को पार करना उचित नहीं है। कभी-कभार यह निर्णय विनाशकारी भी हो सकता है। इसलिए वर्तमान स्थिति में सेना के लिए उचित है कि इस किनारे के इधर दिखाई पड़ रहे टीलों वाली भूमि की ओर चले और वहाँ रात गुजारने का प्रबंध करें।

वासुकि नाग का कालीवीर को चंद्रमणि भेंट करना :-

गोगा गाथा मे नागराज वासुकि की भूमिका एक खलनायक के समान चित्रित की गई है। राजा वासुकि गर्भस्थ मंडलीक एवं उसकी माता बाशला को मारने के लिए अपने पौत्र ककोड़ी को भेजता है। पहले वार में वे दोनों बच जाते हैं तो दूसरी बार शिशु मंडलीक का जन्म होने पर पुनः ककोड़ी को भेजा जाता है। मंडलीक चूंकि देव वरदान से उत्पन्न हुए हैं, इसलिए गुरु गोरखनाथ की कृपा से वह दूसरी बार भी बच जाते हैं।

राजा मंडलीक से राजा वासुकि का तीसरा टकराव वासुकि को बहुत मंहगा पड़ा, क्योंकि इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप पाताल लोक तक पहुँचे अग्नि दाह से बचने के लिए नागराज को अततः कालीवीर जी की शरण में जाना पड़ा। अग्नि दाह से राहत पाने के लिए उन्हें कालीवीर को मनाना और रिझाना पड़ा। अपनी शक्ति और नाग समृद्धि की स्रोत चंद्रमणि वीरदेव कालीवीर को भेंट करके, उन्होंने

इस अग्नि से राहत पाई थी। जब तक चंद्रमणि नागों के पास थी, पाताल लोक में इसका शीतल प्रकाश फैला रहता था, किंतु, जब देव कोप से यही मणि दाहक प्रतीत होने लगी तब यह मणि नागराज वासुकि ने कालीवीर को भेंट में दे दी। पाताल लोक में अंधेरा रहने लगा। पाताल वासी अंधेरे में शीतलता का सुख पाने लगे।

इसकी कथा यों है कि जब राजा मंडलीक राजकुमारी सिरगल को ब्याहने जा रहे थे, उन्होंने केलूवीर को बारात में शामिल होने का न्यौता नहीं दिया। इससे रुष्ट होकर केलूवीर पाताल लोक में पहुँचे और वहाँ वासुकि राजा को भटकाया कि मातलोक में राजा मंडलीक उसकी मंग को ब्याहने जा रहा है। अपने राजा के आदेश पर अष्ट कुली नागों ने बारात का रास्ता रोक लिया। इस विकट स्थिति में राजा मंडलीक ने अपने मंत्री कालीवीर से परामर्श किया और इस संकट के निवारण के लिए कहा। कालीवीर ने केलूवीर की कुटिलता को निरस्त करने के लिए उस से भेंट की। उसे बारात में सम्मिलित होने के लिए मनाया तथा इस समस्या के समाधान के लिए कहा। केलूवीर ने कूट चाल चलकर ऐसी अग्नि प्रज्वलित की जिससे अष्टकुली नाग झुलस कर मरने लगे। यह भयानक आग पाताल लोक तक जा पहुँची। वासुकि राजा के महल-माड़ियां तक जलने लगे। पाताल वासी नाग त्राही-त्राही करने लगे। तब वासुकि ने अपनी रानियों से परामर्श किया।

कपूरी रानी ने कहा कि हमें राजा मंडलीक के पास पहुँचकर क्षमा मांग लेनी चाहिए। संधूरी रानी ने आशंका प्रकट की कि अपनी पुरानी शत्रुता के कारण यह संभव है कि मंडलीक वासुकि को बंदी बना ले। तीसरी रानी जिसका नाम 'गैहरी' (अथवा 'बैहरी') था बोली- "ऐसी दशा में हमें कालिका देवी के पास जाकर उनकी सहायता मांगनी चाहिए।" राजा वासुकि माता कालिका के समक्ष उपस्थित हुए और पाताल लोक के दैवी दाह की समस्या कही। माता कालिका ने कहा- "इस दैवी कोप से बचाने में एकमात्र कालीवीर तुम्हारी सहायता कर सकते हैं क्योंकि केलूवीर आग लगाना तो जानते हैं, किंतु, बुझाना नहीं जानते। ऐसी दशा में कालीवीर की शरण में जाना ही उपयुक्त है।"

वासुकि बोले- "माता वह तो राजा मंडलीक के पक्ष में हैं। वे हमारी सहायता क्योंकर करेंगे?"

कालिका ने कहा- "जो अग्नि केलूवीर ने प्रज्वलित की है, उसे बुझाने का उपाय कालीवीर भली-भांति जानते हैं। जब कोई दुखिया उनकी मंडी (दरबार) में गुहार लगाता है तो वे अवश्य ही उसकी सहायता करते हैं, चाहे वह उनका शत्रु ही क्यों न हो।"

गैहरी ने पूछा- "माता उन्हें हम पहचानेंगे कैसे? और वे हमें कहाँ मिलेंगे?"

कालिका ने उत्तर दिया- "अयोध्या के बीच से होकर जब गोगा की बारात गुजरेगी, तब बारातियों में जिसका

चेहरा मेरे नाम की तरह उद्दीप्त होगा, जिसने सिर पर पांच रंग की पगड़ी पहन रखी होगी और गले में सूर्य के समान उज्ज्वल हीरक पहन रखा होगा– काले घोड़े के सवार ऐसे वीर को कालीवीर जानना।''

वासुकि तुरंत पाताल मार्ग से कैलाश कुंड पहुँचे। वहाँ स्थिति चंद्रमणि और कई प्रकार की अलभ्य वनस्पतियों को लेकर अयोध्या चले आए। वहाँ एक मंदिर के प्रांगण में खड़े होकर उन्होंने बारात की शोभा यात्रा को देखा। काले घोड़े पर सवार अद्भुत शोभा के स्वामी श्री कालीवीर को पहचानने में उन्हें देर नहीं लगी। सायं को जब बारात खेमों में रुकी तो वासुकि नाग सूक्ष्म रूप धारण करके कालीवीर के पास उनके उद्यान में पहुँचे। वहाँ उन्हें अकेले पाकर राजा वासुकि की बांछें खिल उठीं। अपना परिचय देकर नागराज ने कहा– ''आपके तेज और प्रभाव की कथाएं बहुत सुनी थीं आज साक्षात् आपको देख कर जैसे जन्म सफल हो गया।''

कालीवीर ने कहा- ''हे नाग शिरोमणि! आप किस प्रयोजन से पधारे हैं कृपया स्पष्ट करें।''

वासुकि बोले- ''हे वीर वर! दुर्बुद्धि इस संसार के प्राणियों को प्रायः सद्मार्ग से विचलित कर देती है। अधिकार और सत्ता के मद में राजा लोग भी सही मार्ग से भटक जाते हैं। ऐसी ही भूल मुझ से भी हो गई थी, जिसके परिणाम स्वरूप विनाशकारी आग पाताल लोक को भस्म करने लगी है। यह चमत्कारी सौख्यदायक चंद्रमणि जो

चंद्रमा से उसकी शीतलता खींचे लेती है, यह भी पाताल लोक के दाह को कम नहीं कर पा रही है। आप कृपया इसे ग्रहण करें, ताकि आपके तेज से निकल रही अग्नि शीतल प्रकाश में बदल जाए। आपके द्वारा यह मणि धारण करने से धरती पर का अंधेरा दूर होगा।"

कालीवीर प्रसन्न हो उठे। उन्होंने कहा- "नागराज! आपके कुछ काम देव-इच्छा के विरुद्ध थे, जिनके कारण मेरे छोटे भ्राता केलूवीर को अपने मित्र और स्वामी गोगा वीर की बात मानकर उद्दंड नागों को दंड देना पड़ा। कई बार राह भटके हुए व्यक्ति को सही रास्ते पर लाने के लिए दंड का विधान करना ही पड़ता है।"

कालीवीर जी ने जैसे ही चंद्रमणि को अपनी पगड़ी में धारण किया पृथ्वी और पाताल लोक में धधक रही विनाशकारी अग्नि एक प्रकाश बिंदू में सिमट कर चंद्रमणि में समा गई। राजा वासुकि का शरीर शीतल अनुभूतियों से भर गया।

कालीवीर को उन्होंने उनके उद्यानों के लिए दिव्य औषधियां और पौधे देकर कहा- "मैं आप से यह भी विनती करता हूँ कि हम अष्टकुली नागों पर दया की दृष्टि बनाए रखें।"

कालीवीर ने कहा- "ऐसा ही होगा। किंतु, भविष्य में जब तक आप गोगा वीर के विरुद्ध अभियान नहीं चलाओगे, आप पर कोई दैवी आपत्ति नहीं आएगी।"

वासुकि बोले-" आपका कथन हमारे लिए आदेश के समान शिरोधार्य है, प्रभु"।

कालीवीर ने आगे कहा- "ध्यान रहे कि मेरे अनुयायिओं को सर्पदंश न हो।"

वासुकि बोले- "ऐसा ही होगा वीरदेव। यदि भूल से कोई विषधर आपके किसी भक्त को काट भी देगा तो आपका नाम लेने पर उसके प्राणों का संकट टल जाएगा। अन्यथा उसे बावा सुरगल के स्थान पर ले जाए जाने पर उसका संकट कट जाएगा।"

तब वासुकि कालीवीर से विदा लेकर खुशी-खुशी पाताल लोक को चले गए।

लोक-विश्वास प्रचलित है कि इस घटना के उपरांत अष्टकुली नाग कालीवीर के चेले बन गए। यह भी कहा जाता है कि नागराज वासुकि द्वारा कालीवीर की स्तुति के उपरांत भक्त जन नाग त्रास से मुक्ति पाने के लिए अग्नि पुत्र कालीवीर की स्तुति करने लगे। एक अन्य लोक-विश्वास के अनुसार यदि आज भी कोई नाग वंशज कालीवीर को विस्मृत कर दे तो कालीवीर झट उस परिवार के किसी व्यक्ति पर काठी डाल देते हैं। काठी डालने का तात्पर्य यह है कि उससे सेवा करवाने के लिए उसे घोड़े के समान अपना वाहन बना लेते हैं। देवता उसमें प्रकट होकर उससे लोक-कल्याण के कार्य करवाता है। वह उसे अपना चेला वना लेता है।

भूल-चूक होने पर कालीवीर द्वारा नागरूप में दर्शन देने का लोक--विश्वास भी सर्वत्र प्रचलित है।

अर्जुन-सुर्जन को नाग रूप में दिखना:-

अर्जुन और सुर्जन ने देखा कि मंडलीक के विरुद्ध किए गए उनके प्रत्येक षड्यंत्र को कालीवीर विफल कर देते हैं। इसलिए उन्होंने कालीवीर की हत्या की योजना बनाई ताकि न तो मंडलीक उनका परामर्श पा सके और न ही उनकी चाल से वच सके।

एक रात को वे दोनों अपने दुष्प्रयोजन को पूरा करने के लिए कालीवीर के कक्ष में जा घुसे। वहाँ उन्होंने देखा चारपाई पर एक भयंकर सहस्रमुखी नाग लेटा हुआ है और उनकी ओर फुंकार रहा है। वे अति भयभीत होकर भागे और अपने प्राणों की रक्षा की।

कालीवीर विषयक प्रचलित सैकड़ों लोक-विश्वासों में एक लोक-विश्वास यह भी है कि कालीवीर शेषनाग का अवतार हैं। शेषनाग रूप में प्रकट होकर उन्होंने षड्यंत्रकारी अर्जुन-सुर्जन को सचेत किया कि उनकी मूर्खता का परिणाम क्या होगा।

कालीवीर द्वारा अर्जुन-सुर्जन के षड्यंत्र को भांपना:-

राजा मंडलीक के मौसेरे भाइयों ने रानी सिरगला की सगाई करने आए पंडित को भरमा कर स्वयं उस राजकन्या से विवाह करने का षड्यंत्र रचा जिसे कालीवीर ने अपनी बुद्धिमत्ता से निरस्त कर दिया। बाद में जब राजा मंडलीक का विवाह रचाया गया तो बहन गुगड़ी ने कहा कि रूठे हुए

मौसेरे भाइयों अर्जन-सुर्जन को मना लेना चाहिए। उन दोनों भाइयों ने शर्त रखी कि यदि स्वयं मंडलीक हमें मनाने आएगा तब हम बारात में जाएंगे। राजा मंडलीक उन्हें मना लाने के लिए चले तो कालीवीर जी भी उन के साथ हो लिए। राजा मंडलीक जब अर्जुन-सुर्जन की मनौवल के लिए उनके पास गए तो उन्होंने राजा को खाने के लिए भोजन पर आमंत्रित किया। तब कालीवीर तुरंत षड्यंत्र भांप गए। उन्होंने राजा मंडलीक को परामर्श दिया कि यहाँ खाने-पीने की किसी वस्तु का उपभोग न करें।''

राजा मंडलीक ने कहा– ''ऐसा करने से यह दोनों मौसेरे भाई अपना अपमान अनुभव करेंगे।''

कालीवीर ने कहा– ''आप उनके अपमान की बात सोच कर चिंतित हो रहे हैं, जबकि वे आपके प्राण हरने के लिए चिंतित हैं।''

मंडलीक ने पूछा– ''आपका क्या तात्पर्य है ?''

कालीवीर बोले– ''भोजन में विष होने की संभावना है। इन दोनों भाइयों की दिखावटी आवभगत और मुखमंडल की क्लांत आभा उनके हृदय के चोर की कथा कह रही हैं।'' यह कहकर कालीवीर जी ने भोजन के एक टुकड़े को भिगोकर महल में पास खड़े कुत्ते के समक्ष फेंका। इसे निगलते ही कुत्ता प्राण त्याग गया।

राजा मंडलीक तमाम षड्यंत्र को समझ गए। जभी अर्जुन-सुर्जन ने अपने सेनानियों सहित राजा मंडलीक

और कालीवीर पर आक्रमण कर दिया। दोनों वीर अपनी तलवार के जौहर दिखाते हुए शत्रु के महलों से बाहर आ गए और अनेक योद्धाओं को मौत के घाट उतार कर अपने नगर में सुरक्षित पहुँच गए।

काला बाग में काला दैत्य का संहारः-

राजा मंडलीक के गढ़ गज़नी की ओर बढ़ते ही कालीवीर और नाहर सिंह ने काला बाग की ओर कूच कर दिया। केलूवीर अपने सैन्यदल से निकल कर आगे आए और बोले- "भ्राता काली जी! जिस काला बाग की ओर आप जा रहे हैं, उसके विषय में आपको कुछ जानकारी भी है?"

कालीवीर बोले- "हमें काला बाग पर धावा बोलना है- क्या यह जानकारी पर्याप्त नहीं है?"

केलूवीर हंसे- "काला बाग कोई फलों और फूलों का बगीचा नहीं है- जहाँ इतनी-सी जानकारी से आप धावा करने जा रहे हैं।"

कालीवीर कृत्रिम गंभीरता से बोले- "यदि वहाँ फूल नहीं हैं तो काँटे तो ज़रूर होंगे।"

केलूवीर बोले- "काँटे भी ऐसी कि सीधे गले की ओर लपकें। काला बाग अधर्म का क्षेत्र है। वहाँ नियम और कर्म की सीमा समाप्त हो जाती है। वहाँ का असुर सेना-नायक प्रतिदिन मानव रक्त में प्रोक्षित चावलों का भोजन करता है।"

तुरंत नाहर सिंह बोले- "उस सेना नायक के रक्त का पान मैं करुंगा।"

केलूवीर बोले- "आप ही करना, बड़े भइया। किंतु, समस्या यह है कि हम उस दुष्ट दैत्य तक पहुँचेंगे कैसे?"

कालीवीर ने पूछा- "वहाँ पहुँचने में अड़चन क्या है?"

केलूवीर बोले- "उन क्षत्रों का भेद जानने के लिए मैं एक बार यवन साधु के भेस में उधर घूमा था।"

कालीवीर मंद मुसकान के साथ बोले- "उन दिनों आपको बतलाए बिना मैंने अपने गुप्तचर आपके पीछे भेजे थे....।"

चकित होते हुए केलूवीर ने पूछा- "मेरे पीछे गुप्तचर?"

कालीवीर बोले- "आपकी वीरता पर किसी को संदेह नहीं है। किंतु, यह प्रबंध आपकी सुरक्षा के लिए आवश्यक था। अपने गुप्तचरों से मुझे पता चला था असुर लोग काला बाग में अस्त्र-शस्त्र चलाने का अभ्यास करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर गज़नी आदि के राजा यहाँ से सैनिक साथ लेकर दूसरे देशों में लूट-पाट के लिए अभियान चलाते हैं। काला बाग की सुरक्षा का प्रबंध बड़ा मज़बूत है। इसे पानी से भरे परिखात (खाई) द्वारा घेरा गया है। खाई के पार लकड़ी के मोटे-मोटे तख्तों की दीवारें खड़ी की गई हैं। सुनते हैं कि इस खाई में मगरमच्छों और जल साँपों की बहुतायत है।"

केलूवीर ने बतलाया- "मैं उस खाई को पार करने का भूमिगत मार्ग जानता हूँ।"

कालीवीर ने कहा- "मेरा यह काला घोड़ा और नाहर सिंह जी का चंपई घोड़ा उस खाई और दीवार को हवा का

झोंका बनकर पार कर जाएंगे। और आप अपने योद्धाओं सहित उस गुप्त मार्ग का अनुसरण करते हुए शत्रु पर गाज बनकर गिरेंगे।"

केलूवीर बोले-"समस्या तो काला बाग में घुसने के उपरांत आरंभ होती है। वहां एक-एक सैनिक पर दर्जनों असुर अस्त्र-शस्त्र लेकर टूट पड़ते हैं। संख्या में वे टिड्डी दल की भांति ही हैं।"

कालीवीर हंस पड़े– "तुम विश्वास रखो भइया, वे टिड्डी दल की मौत ही मरेंगे।"

केलूवीर ने कहा–"जब वे हर प्रकार से बेबस हो जाते हैं तो वे बेबस लोगों और गउओं को मारने जैसे निंदनीय कार्य करने में जुट जाते हैं। वे गउओं और बेबस लोगों के प्राणों का सौदा अपनी सुरक्षा के लिए करते हैं।"

सुनकर नाहर सिंह क्रोधित हो उठे। उन्होंने कहा- ऐसे पापियों से धरती को निर्मूल करना अति आवश्यक है।"

केलूवीर बोले– "कहना सरल है भाइयो और करना कठिन, क्योंकि असुर युद्ध कला में पारंगत भी हैं और वीर भी।"

नाहर सिंह खुश होकर बोले - "तब तो लड़ने में भी मज़ा आएगा।"

केलूवीर ने सुझाव रखा - "दिन के समय असुरों की शक्ति क्षीण हो जाती है। दिन भर वे सोए रहते हैं। मेरे विचार में उन पर दोपहर के समय आक्रमण करना बहुत लाभदायक रहेगा।"

कालीवीर बोले-"सोए हुए पर आक्रमण करना हमारी नीति के विरुद्ध है। वैसे भी हमारा सैन्य बल संख्या की दृष्टि से कम है। रणनीति के अनुसार उन्हें रात को ललकारना ही उचित है। वे रात को जगे होंगे, सचेत होंगे—यह सत्य है। किंतु वे हमारी संख्या से अनजान हैं। रात को वे हमारी शक्ति का आकलन नहीं कर पाएंगे। हमारे प्रबल आघात से उनपर भय छा जाएगा, जिससे हमारा प्रतिरोध करने की उनकी क्षमता क्षीण पड़ जाएगी।"

नाहर सिंह ने कहा – "जाग्रत व्यक्ति से ही तलवार टकराने में आनंद आता है। हम तो ललकार कर वार करने वाली कौम से हैं। रात को आक्रमण करने पर हमें पता चल जाएगा असुरों ने किस मां का दूध पिया है।"

कालीवीर ने तुरंत निर्णय लेते हुए कहा - "केलूवीर जी, अपने तमाम सैनिक दलों को आदेश दो कि इस बियाबान जंगल में रात होने की प्रतीक्षा की जाए।"

केलुवीर ने कहा -"आपका यह आदेश उचित है, क्योंकि कालाबाग इस स्थान से दूर नहीं है।"

उस निविड़ वन में सैनिकों के शिविर लग गए।

अपने सेना—नायकों को बुलाकर कालीवीर ने युद्ध नीति स्पष्ट की - "आधी रात को वीरों का एक दल केलू भाई के नायकत्व में खाई के नीचे बने गुप्त मार्ग से काला बाग के पार्श्व भाग में प्रवेश करेगा। वहां उनका सर्व प्रथम काम होगा शत्रु पहरेदारों को समाप्त करके असुरों के शस्त्र भंडार

को जलाना। तत्पश्चात् उनकी भीतर की सैन्य व्यवस्था को तहस-नहस करना होगा। ..... भइया नाहर सिंह खाई के इधर से सीधा आक्रमण करेंगे। अगिया वीर उस खाई के चौगिर्द वनी लकड़ी की दीवार को बाहर और अंदर दोनों ओर से आग लगाकर भस्म कर देंगे। आक्रमण इतना प्रचंड होगा कि काला बाग कुछ ही क्षणों में हाहाकार का समुद्र बन जाएगा।''

केलूवीर न पूछा–''आक्रमण का समय क्या होगा ?''

कालीवीर ने कहा–''जैसे ही आपका दल काला बाग में दाखिल हो जाए, और आपके साथ गए अगिया वीर, दीवार को जलाने का प्रबंध पूरा कर लें, आप भीतर से गीदड़ों के हुआंकने का शब्द करेंगे। बाहर से आपको यही शब्द प्रति-उत्तर में सुनाई देगा। गीदड़ हुआंक का मेल होते ही तीव्रतर आक्रमण आरंभ होगा।''

केलूवीर ने कहा - ''इस अपवित्र भूमि को अग्नि की ज्वालाएं पवित्र बनाएंगी। दुष्ट काला दैत्य को ऐसा सबक सिखाया जाएगा, जिसे असुरों की आने वाली नसलें सदा याद रखें......।''

नाहर सिंह बोले–''उसके रक्त का आंनद लेने के लिए मेरी जिव्हा अभी से प्यासी हो रही है।''

कालीवीर ने कहा–''दुष्ट अत्याचारी जिस भाषा को अच्छी तरह समझता हो, उसे उस भाषा में समझाने में कोई अधर्म नहीं है।''

केलूवीर ने कहा–"वह उत्पीड़क दैत्य बेबस लोगों पर अत्याचार ढाकर उन्हें क्रंदन करते देखकर अत्यंत प्रसन्न होता है। इसलिए उसे उसके लोगों के बीच खड़ा करके उसी की दंडनीति के अनुरूप दंडित किया जाना चाहिए।"

सायंकाल को जब सैनिक भोजन खा रहे थे। तभी एक आगंतुक शिविर में चला आया। उसने कालीवीर के पास पहुंचकर अपना घोड़ा रोका और पूछने लगा–"भइया, कौन देश से आए और कौन देश है जाना ?

उसके प्रश्न को अनसुना करके कालीवीर ने पूछा -"तुम किस प्रयोजन से यहां आए हो?"

आगंतुक बोला - "मैं एक भिखारी हूँ और भिक्षा के लिए यहां आया हूँ।"

कालीवीर मुस्कुराते हुए बोले–"बहुत खूब! तो इस असुर देश में भिखारी लोग इतने सुंदर वस्त्र पहनकर घोड़े की पीठ पर बैठे हुए भीख मांगा करते हैं।"

आगंतुक ने तुरंत उत्तर दिया - "मैं काला-बाग के संपन्न लोगों से भीख मांगकर आ रहा हूँ। उन्होंने ही यह खूबसूरत कपड़े और शानदार घोड़ा मुझे दिया है।"

कालीवीर उसकी कुटिलता को भांपते हुए बोले–"बड़ी विचित्र बात है, इतना कुछ पाकर भी तुम्हारी भीख मांगने की आदत समाप्त नहीं हुई।"

आगंतुक बोला - "आपके पास मैं भोजन की अभिलाषा से आया हूँ। जल्दी से उसका इंतजाम करो।"

कालीवीर पुनः हंसे - "भोजन करना चाहते हो, किंतु घोड़े पर बैठकर हुक्म चला रहे हो। लगता है तुम्हारे गुरु ने तुम्हें भीख मांगने का ढंग ठीक से नहीं सिखाया। भिखारी तो याचक होता है वह आदेश नहीं दे सकता। इसलिए, भिखारी के भेस में तुम कोई और हो।"

जभी केलूवीर चले आए। आगंतुक को देखते ही उन्होंने पहचान लिया। वे बुरंत बोले - च्चओह! काला दैत्य के भेदिए तुम यहां कैसे ? क्या तुम्हारे आका ने तुम्हें भेजा है, या स्वयं ही चले आए हो ?"

खुद को पहचाना गया जानकर उस व्यक्ति ने घोड़े को एड़ लगाई और तेजी से शिविर के बाहर चला गया। केलूवीर अपने घोड़े की ओर लपके। किन्तु, कालीवीर ने उन्हें रोक दिया– "आप कष्ट न कीजिए। इसे मेरी काली घोड़ी पकड़ कर ले आएगी।" इसके साथ ही उन्होंने काले अश्व से कहा "नीली! उस भेदिए को तुरंत पकड़ कर ले आओ।"

स्वामी का आदेश पाते ही काली घोड़ी हवा से बातें करने लगी। कुछ ही क्षण बीते थे कि नीली वापस आती दिखलाई पड़ी। उसके संग तेज़ी से दौड़ता दूसरा घोड़ा भी था, जिस पर असुर भेदिया पसीने से तर-ब-तर हुआ बैठा था। शिविर में पहुंचते ही सैनिकों ने उसे बंदी बना लिया।

कालीवीर ने पूछा– "भिखारी का भेस बनाए बिना ही तुम भिक्षा मांग रहे हो। और जब कोई भीख डालना चाहता है तो बिना भीख लिए भाग जाते हो– यह कहां का न्याय है ?"

वह व्यक्ति बोला– "यह सच है कि मैं काला दैत्य का भेदिया हूँ।"

कालीवीर बोले– "हमें मालूम है। तुम अपनी आवभगत करवाए बिना भाग रहे थे–यह तो ठीक बात नहीं है।" तब कालीवीर ने केलूवीर को आदेश दिया–"इससे काला बाग के तमाम रहस्यों का ब्यौरा प्राप्त करो। काला दैत्य तक पहुंचने में क्या-क्या अवरोध हमारे समक्ष आएंगे, वहां असुर सैनिकों की तैनाती कहां-कहां की गई है–यह सब जानकारी निकलवाओ। उसी के अनुरूप हमारी रणनीति भी बनेगी। यदि यह भेदिया सहयोग करे तो युद्ध समाप्त होने तक इसे सुरक्षा से रखो और बाद में जीवित छोड़ दो।"

केलूवीर तुरंत काला दैत्य के भेदिए को अपने शिविर में ले गए।

आधी रात से घड़ी भर पहले सेना ने पुनः काला बाग की ओर कूच किया। वहाँ पहुंचकर पूर्व योजना के अनुसार कालीवीर और नाहर सिंह के सैनिकों ने काला बाग को घेरे में ले लिया। केलूवीर खाई के नीचे बनी गुहा से होते हुआ काला बाग के भीतर प्रविष्ट हुए। अगिया वीरों ने काठ की दीवार के साथ-साथ अनेक स्थानों पर पुआल और लकड़ी के ढेर जमा दिए। तब कहीं खाई के आर-पार गीदड़ों के हुआंकने की आवाज़ हुई। सहसः काला बाग में अनेक स्थानों पर अग्नि की लपटें आक़ाश को छूने लगीं। आक्रमण का आरंभ हो गया। बाहर से अग्नि से धुधुआते बाण काठ

के परकोटों पर खड़े असुर सैनिकों को निशाना बनाने लगे। मगरमच्छों का ध्यान बटाने के लिए कालीवीर ने खाई में कई बकरे फेंक दिए।

काला बाग के चहुं ओर की दीवार धू-धू करके जलने लगी। इस अप्रत्याशित आक्रमण से घबरा उठे दैत्य योद्धा आपस में कटकर मरने लगे। केलूवीर की युद्ध नीति से काला बाग अग्नि के पहाड़ में बदल गया। अगिया वीरों ने प्रत्येक असुर शिविर और सैनिक ठिकाने को धधकती अग्नि चिता में बदल डाला।

खाई के आर-पार लकड़ी के मोटे-मोटे फट्टे डालकर तमाम सैन्य दल काला बाग में घुस गए और वहां असुर योद्धाओं को ललकार कर मारने लगे। अंधकार में कालीवीर का अट्टहास शत्रुओं के हृदय को कंपायमान किए देता था। काला दैत्य के सुरक्षित भवन की ओर बढ़ते हुए नाहर सिंह ने मार्ग की बाधा बने असुरों के प्राण हर लिए।

अपने भवन में सोने के ढेर पर बैठा काला दैत्य मदिरापान करते हुए नर्तकियों के नाच में मग्न था। भवन के द्वार पर च्कालीवीर जी दी जै "च्नाहर सिंह जी दी जै" की ध्वनि गूंजते ही नर्तकियों ने नाचना बंद कर दिया, जिस पर खीझ कर काला दैत्य गरजा - "यह नाच-गाना किसके हुक्म से बंद किया गया है?"

जभी हाथ में सात हाथ लंबा भाला थामे नाहर सिंह प्रकट हुए। भाले का फाल दैत्य के गले पर रखते हुए बोले-

"इन नर्तकियों के नाच तूने बहुत देख लिए। अब अपने पापों का हिसाब कर।"

इतने में काला दैत्य का रक्षक एक सैनिक खड्ग उठाए तेज़ी से नाहरसिंह की ओर बढ़ा। जभी एक अगिया वीर सैनिक ने अग्नि बिखेरते एक बाण द्वारा उस रक्षक को अग्नि का ग्रास बना दिया।

अपने अंतिम क्षण जानकर काला दैत्य एकदम घबरा गया और गिड़गिड़ाते हुए नाहरसिंह के पैरों में गिर पड़ा।

नाहरसिंह ने कहा -"खड़ा हो जा ताकि मैं अपनी तलवार को तेरा रक्त पिला सकूं। मेरी तलवार किसी झुके हुए व्यक्ति पर वार नहीं किया करती।"

काला दैत्य बोला - "ऐ आफत के सरत्ताज! तू मेरा सारा खज़ाना ले ले। यह सोने-चांदी और हीरे-जवाहिरात भी सब तेरे हैं। यह गुलाम रक्कासाएं भी तेरी हैं। इनके बदले में तू मेरी जान बख्श दे।"

नाहर सिंह बोले - "किसी पापी को बख्शने की जितनी सीमाएं होती हैं, वह सब तूने तोड़ दी हैं। तू बेबस लोगों के रक्त से पोई रोटी खाकर प्राणदान की सीमा से परे हो चुका है। अब तेरे गुनाहों का हिसाब होगा .....।" इतना कहकर नाहरसिंह ने काला दैत्य को केशों से पकड़ कर खड़ा कर दिया। पूर्णिमा के चंद्रमा के प्रकाश को लज्जित करता अपना तेज़धार चमकीला खड्ग उन्होंने हवो मे लहराया ही था कि कालीवीर का दूत एक सैनिक चला

आया और निवेदन किया - "नाहर सिंह जी की जय हो। कालीवीर जी ने कहला भेजा है कि काला दैत्य को कल प्रातः उसी दंड विधि से दंडित किया जाएगा जिससे वह दूसरों को दंडित करता रहा है। इसलिए उन्होंने इसे बंदी बना लेने का आदेश दिया है।"

नाहर सिंह क्रोधित स्वर में बोले - "कालीवीर! इस अनीति की दुनिया में सदा नीति की बातें किया करता है। किंतु नाहर सिंह की नीति में दुष्ट को तुरंत मार डालना लिखा है।"

दूत ने कहा - "राज-काज तो सदा नीति से ही चलते हैं, महाराज।"

नाहर सिंह ने पूछा - "कालीवीर है कहां ?"

दूत ने उत्तर दिया - "उन्होंने काला बाग के विशाल बंदीगृह से सहस्रों नर-नारी मुक्त करवाए हैं। वे तमाम धर्म-पारायण एवं निर्दोष लोग हैं। वे कालीवीर को भगवान मानकर उनकी पूजा कर रहे हैं।"

नाहर सिंह का क्रोध शांत हुआ - च्कालीवीर जी को पुजने का बड़ा शौक है। सैनिको! इस काला दैत्य को उस बंदीगृह में ले जाकर डाल दो, जहां इसने दूसरे बंदियों को रखा हुआ था।"

तब नाहर सिंह बचे-खुचे असुर सैनिकों की तलाश करने लगे। नाहर सिंह के कोप से भाग रहे असुरों ने खाई में छलांगे लगा दीं, जहां मुंह बाए मगरमच्छों ने उन्हें लील लिया। अनेक असुर सर्प-दंश का शिकार हुए।

प्रातः तक काला बाग राख का ढेर बन चुका था। अभी भी कहीं-कहीं धुआं उठ रहा था।

केलूवीर बोले - "जैसे राख बर्तन को साफ कर देती है, वैसे ही अग्नि पापों का मार्जन कर देती है। काला बाग से पाप का पेड़ पूर्णतया निर्मूल हो गया, किंतु, पाप का बीज वह काला दैत्य अभी तक जीवित है।"

कालीवीर बोले - "काला बाग में मौजूद समस्त स्त्री-पुरुषों को बुलाकर इकट्ठा किया जाए और उनसे पूछा जाए कि उनके उत्पीड़क उस काला दैत्य को क्या दंड दिया जाए? जो लोग कोई दोष न होने पर भी उससे उत्पीड़ित हुए हैं उन्हें ही इसे दंडित करने का अधिकार है।"

काला बाग के मध्य बने एक लंबे-चौड़े चबूतरे के चौगिर्द लोगों का बहुत बड़ा जमघट जमा हो गया। तब बेड़ियों में जकड़े गए काला दैत्य को वहां पेश किया गया।

कालीवीर बोले - "इस असुर नायक ने जितने पाप किए हैं उनका वर्णन करना कठिन है। जो कोई भी हट्टा-कट्टा व्यक्ति असहाय लोगों पर अत्याचार करता है, वह वीरता के नाम पर कलंक है। स्वयं कुमार्ग पर जाने के अतिरिक्त इस दुष्ट ने अन्य असुरों को साथ लेकर धर्म क्षेत्र के लोगों को निरंतर उत्पीड़ित किया है। अब आंप अर्थात् यहां मौजूद जन समुदाय बतलाए कि इस से क्या व्यवहार किया जाए ?"

लोग चीखे - "इसे पत्थर मार-मार कर मार डाला जाए।"

किसी ने कहा - "इसकी बोटियां काटकर मगरमच्छों और चील-कव्वों को डाल दी जाएं - क्योंकि बहुत से बे-गुनाहों के साथ यह यही सलूक किया करता था।"

कई अन्य बोल उठे - "इसे जिंदा आग में भून दो।

तब नाहर सिंह बोले - "इसे आग में भूनो या इसे काटकर चील-कव्वों को डाल दो, किंतु, यह मत भूलो कि मैंने इसके रक्त से आप्लावित भोजन खाने की प्रतिज्ञा की हुई है।"

कालीवीर बोले - "आपकी इच्छा का पूर्ण सम्मान किया जाएगा वीरवर्य, क्योंकि यह कभी दूसरों के रक्त को मदिरा मान कर पीता था। रक्त प्रोक्षित चावल खाता था।"

नाहर सिंह ने आदेश दिया - "इस असुर नायक की बेड़ियां खोल दी जाएं।"

बेड़ियां खुलते ही काला दैत्य ने एक लंबी छलांग लगाई और भागने लगा। सहस्रों लोगों का जमघट उस के पीछे भागा–"मारो! मारो!!"

जभी नाहर सिंह ने हवा के झोंके की तरह कूद कर काला दैत्य को दबोच लिया और उसके गले पर अपने दांत गड़ा दिए।

काला दैत्य मरणासन्न भैंसे की भांति चीख उठा। उसका रक्त पीकर नाहर सिंह ने उसके विशालकाय शरीर को खाई के ऊपर फेंक दिया। काला बाग के लोग उस पर पांव रखकर खाई के आर-पार जाने लगे।

काला-बाग में काला दैत्य की मृत्यु का जश्न मनाया जाने लगा। लोग गाने-बजाने और नाचने लगे। अच्छे-अच्छे भोज्य पदार्थ, बनाकर सैनिक दल लोगों में बांटने लगे। स्वतंत्रता की सांस ले रहे बंदी नर-नारी अपने-अपने देश को लौटने की तैयारी करने लगे।

दोपहर को उत्तर-पूर्व से ठंडी हवाएं चलने लगीं। आकाश में बसंती आभा फैल गई। तब वीर यूथ में बैठे कालीवीर ने घोषणा की- "हमारे महाराजा वीर शिरोमणि मंडलीक जी विजय श्री के साथ पधार रहे हैं। उनके नीले घोड़े के आने की उसके टापों की सुहावनी ध्वनि सुनकर मेरा यह काला अश्व मौज में हिजहिना रहा है।"

कुछ देर के उपरांत राजा मंडलीक दिखलाई पड़े। काला बाग में राख और धुआं देखकर उन्हें समझते देर नहीं लगी कि यहां का दुष्ट साम्राज्य समाप्त कर दिया गया है।

उन्होंने कालीवीर से परामर्श करके वीर योद्धाओं और उनके सैनिकों को स्वदेश लौटने का आदेश दिया। तत्काल सेनाएं सिंध नदी की ओर चल पड़ीं। स्वतंत्र कराए गए लोगों के अतिरिक्त असुरों के बंधन से छुड़ाई गई गाएं तथा बछड़े भी वीर दल के साथ थे। और साथ थी वह विशेष कपिला गाए जिसे छुड़ाने के लिए यह युद्ध अभिमान शुरु किया गया था। युद्ध अभियान पर गए योद्धा अपनी सफलता की खुशियां मनाते दुद्धनेरा लौट आए। यहां श्वेत महल (बग्गी माड़ी) में कालीवीर और नाहर सिंह राजा मंडलीक को चंवर झुलाने लगे।

यवन सेना के आक्रमण पर कालीवीर द्वारा राजा मंडलीक की सहायताः-

एक बादशाह ने राजा मंडलीक के राज्य पर आक्रमण किया। शक्तिशाली शत्रु ने मंड़लीक के श्वेत महल और राज दरबार को आग लगा दी। जभी कालीवीर राजा मंडलीक की सहायता के लिए आन पहुंचे। उन्होंने एक बाण चलाकर आग बुझा दी। तब राजा मंडलीक ने कहा -"मित्र आग से तो तूने बचा लिया, अब इस यवन सेना का कुछ कर।"

कालीवीर ने देखा यवन सेना टिड्डी दल की भांति किले में घुसी आ रही है। शत्रु सेना का अंतिम सैनिक जब किले के द्वार के भीतर घुस आया तो कालीवीर ने अपने सैनिकों से कहा कि किले से बाहर जाने के तमाम रास्ते बंद कर दो। प्रत्येक द्वार पर प्राण-घातक योद्धाओं का पहरा बिठला दिया गया। शत्रु सेना को किले में घेर कर कालीवीर और उनके भीषण योद्धा भूखे शेरों की भांति उन पर टूट पड़े। वीर-बाँकुरों ने शत्रु सेना को गाजर-मूली की तरह काट गिराया। शत्रु बादशाह जिंदा पकड़ा गया-"उसे कालीवीर ने जीवित छोड़ दिया। परास्त बादशाह को राज्य की सीमा से बाहर धकेल दिया गया।"

राजा मंडलीक ने कालीवीर से पूछा - "हे वीर शिरोमणि! इस राजा की तो पूरी सेना का संहार कर दिया, किंतु इसे प्राणों का दान देकर आपने सुरक्षित छोड़ दिया। इस बात में क्या रहस्य है ?"

कालीवीर बोले - "नीति तो यह कहती है कि आक्रमणकारी शत्रु के तुरंत प्राण हर लिए जाएं। ज़ो हमारे प्राण हरने आया है, उसके प्राण हरने में संकोच कैसा ? किंतु, इस बादशाह को एक कूटनीतिक चाल के अंतर्गत जीवित जाने दिया है।"

मंडलीक ने पूछा - "वह क्या चाल है, कृपया उस पर प्रकाश डालें।"

कालीवीर ने उत्तर दिया - "मित्र! विदेशी लोगों के आक्रमण आए दिन की बात हो गए हैं। आज हम पर आक्रमण हो रहा है तो कल को हमारा पड़ोसी राज्य उनकी लूट-पाट का शिकार हो रहा है। विदेशी लोगों के जत्थे प्रतिदिन चले रहते हैं। अब इस बादशाह की पूरी सेना को तबाह करके इसलिए जीवित छोड़ दिया है ताकि अपने देश में वापस जाकर यह उन लोगों को नसीहत दे कि ऐसा मत करना। इस बादशाह को एक उदाहरण बनाकर आक्रमणकारियों के लिए एक संदेश भेजा गया है।"

राजा मंडलीक ने पूछा - "मंत्रीवर, यह आक्रमणकारी बहुत बार मुंह की खाते हैं, फिर भी बेशर्मों की तरहा मुंह उठाए, हमारे देश को लूटने के लिए चले रहते है। ऐसा क्यों?"

कालीवीर बोले - "राजन्! चोर सदैव समृद्ध घर में सेंध लगाया करते है। हमारा देश भी समृद्धि का भंडार है। प्रकृति का नियम है कि समृद्धि व्यक्ति को विलासी और गाफिल बना देती है। उधर ये आक्रमणकारी लोग भुखमरी

और गरीबी में आकंठ डूबे हुए हैं। इसलिए पड़ोसी को अपनी सुरक्षा के प्रति बे-ध्यान पाकर वे उसकी समृद्धि में सेंध लगाने दौड़े आते हैं।''

राजा मंडलीक ने पूछा-''इस नित्य प्रति की आपदा का कोई उपाय है?''

कालीवीर बोले - ''आपस की फूट भुलाकर और एकता के महत्व को पहचान कर ही संकट के इन बादलों से पार पाया जा सकता है। एक राज्य पर संकट बनने पर दूसरे को उसकी धन एवं सैन्यबल से सहायता करनी चाहिए। यही सुरक्षा का सब से अच्छा उपाय है।

माता कालिका से कालीवीर की वार्ता और कालिका का ज्वाला रूप में प्रकट होनाः-

डोगरा जन-मानस का विश्वास है कि जब तक धरती पर ''सदयुग''[1] था, तब तक देवी-देवता धरती पर दैहिक रूप में विचरते थे। किंतु, धरती पर ज्यों-ज्यों पापाचार बढ़ने लगा त्यों-त्यों देवता लोग अदृश्य रूप धारण करने लगे।

कलियुग के आगमन पर कालीवीर की माता कालिका भी अदृश्य होने लगीं तो उनके पुत्र कालीवीर ने उनसे कहा- ''माता मेरे लिए क्या आदेश है? क्या मुझे भी अदृश्य हो जाना चाहिए?''

---

1. लोक–धारणा के अनुसार सत्य, त्रेता और द्वापर यह तीनों कालखंड सद्युग में समाहित माने जाते हैं।

माता ने कहा - "पुत्र! तुम्हारा जन्म जिस महान प्रयोजन के लिए हुआ है वह युग तो अभी आरंभ मात्र हुआ है। इस युग में मात्र शक्ति नहीं, बुद्धि और कूटनीति का आश्रय लेने वाले ही धर्म विरोधी आसुरी शक्तियों का दमन कर पाएंगे। तुम्हें उन अहितकारी शक्तियों का संहार करने के लिए इसी वीर रूप में रहना है। अब देवी-देवताओं के बजाए धर्म या कर्म पहचानने वाले योद्धा ही निराश्रितों की रक्षा करेंगे।"

कालीवीर ने कहा—"माता! आपके बिना तो मैं शक्तिहीन हो जाऊंगा।"

कालिका ने उत्तर दिया - "तू तो मेरा प्रचंड रूप है। तेरा शक्तिहीन होना तो कल्पना से परे की बात है। तो भी तेरा मार्गदर्शन करने के लिए मैं दिव्य ज्योति के रूप में प्रकाशित होकर रहूंगी। अशरीरी रूप में तो मैं सदा तेर अंग-संग रहूंगी।"

कालीवीर ने पूछा—"माता! मुझे अशरीरी रूप कब धारण करना है ?"

कालिका ने कहा—"जब हिंदू धर्म को मानने वाले स्वयं को पंगू और बेसहारा समझने लगें, शक्ति की आराधना से विमुख होकर असुरों की चाटुकारी करने लगें तब या फिर जब धन और संपत्ति के लोभ में हिन्दू धर्मावलंबी अपना धर्म त्यागने लगें—तब तुम अदृश्य शरीर धारण कर सकते हो।"

कालीवीर ने नमस्कार करके कहा–"आपका जैसा आदेश है वैसा ही होगा।"

तब कालिका (महाकाली) ने अदृश्य होने के लिए जलराशि में छलांग लगाई। इससे सहसः भूचाल आया। भयंकर गर्जना हुई और पानी में से अग्नि की लपटें निकलने लगीं। सर्व प्रथम कालीवीर ने महाकाली के उस ज्वाला रूप की पूजा की और वहां एकत्र जन–समुदाय और अपने सैनिकों से कहा की जो कोई मेरी माता ज्वाला माई की स्तवन करेगा उसे आकाश की बिजली का कोई भय नहीं रहेगा। उसको भौतिक और सांसारिक ताप नहीं सताएंगे। युद्ध और वीरता के कामों में वह सदा विजयी रहेगा।"

तदुपरांत तंत्र–साधना करने वाले तांत्रिक साधक कालीवीर जी का आह्वान 'अग्निपुत्र' के नाम से भी करने लगे।

उत्तर भारत में देव स्थानों पर जलाई जाने वाली घी आदि की जोत वस्तुतः ज्वाला माई का प्रतीक होती है। लोक विश्वास है कि कलजुग में देवों में मात्र सूर्यदेव और देवियों में केवल ज्वालामाई ही प्रत्यक्ष देव रह गए हैं। अन्य देवी-देवता इस कालखंड में अगोचर हो गए अथवा पहाड़ों पर चले गए।

कालीवीर का अदृश्य होना :–

कश्मीर में जब इस्लाम तेजी से फैल रहा था तब कालीवीर अपनी सेना लेकर वहां पहुँचे। हिंदुओं को उनसे मनोबल मिला और तब हिंदुओं की संख्या बढ़ने लगी। मुसलमान सेनाएं

कालीवीर को पकड़ने के लिए प्रयत्न करने लगीं, किंतु, उनको हर बार अपार हानि का सामना करना पड़ता।

तब मुसलमान राजा ने समझौते का मार्ग पकड़ा। उसका मुस्लिम धर्मावलंबी गुरु आया। उस समय कालीवीर हाथ में धुनष-बाण लिए खड़े थे। मुसलमान पीर ने कहा– "हे कालीवीर राजा! हमने आपकी बहुत ख्याति सुनी है। आप मुझे भी आपनी शक्ति दिखलाइए।"

कालीवीर ने पूछा–"आप मेरी शक्ति को किस रूप में देखना चाहते हो?"

पीर ने कहा–"यह सामने वाले स्थान पर पानी का चश्मा बहा दो।"

कालीवीर ने तब धरती में बाण मारा जहां से जल का चश्मा फूट पड़ा।

कालीवीर ने कहा–"अब तुम और किस तरह शक्ति का परीक्षण करना चाहते हो ?"

पीर बोला- "अब आपकी शक्ति को परखने की और आवश्यकता नहीं है। हम युद्ध बंद कर के शांति का मार्ग अपनाते हैं। यदि आप मेरा प्रस्ताव स्वीकार कर लेते हैं तो मेरा आपसे वादा रहा कि मैं ही नहीं कश्मीर के राजा सहित मेरे तमाम अनुयायी सदा आपको अपना वंदनीय मानेंगे।

उस महापुरुष के प्रस्ताव को स्वीकार करके कालीवीर ने युद्ध का परित्याग कर दिया और उस चश्मे के निकट योग–साधना करने लगे। एक दिन वे अपने साधना स्थल

के पास काली मंदिर के एक कमरे में विश्राम कर रहे थे कि कश्मीर के राजा के कुटिल मंत्री ने छल से उनके कक्ष के बाहर ताले लगाकर उन्हें भीतर बंद कर डाला। राजा एवं मंत्री कालीवीर की शक्ति से भयभीत थे। वे उस पवित्र धरती पर विधर्म फैलाने में कालीवीर को सब से बड़ी बाधा मानते थे। इसलिये, उन्होंने उस योद्धा को धोखे से कमरे में बंद करके समाप्त कर देने की योजना बनाई।

जम्मू प्रांत के धर्मावलंबियों की धारणा है कि कालीवीर आज भी कश्मीर में मस्जिद बना दिए गए किसी स्थल में समाधिस्थ हैं। हर छः मास के उपरांत वे अपनी ध्यानावस्था से उठकर पूछते हैं—"राज किसका है ?" तब उस पुरातन काली पीठ को अपने धर्मस्थल में परिवर्तित कर चुके इतर धर्मीय लोग उत्तर देते हैं कि कश्मीर में हिंदुओं का राज है। संतुष्ट होकर कालीवीर पुनः अपने तप में मग्न हो जाते हैं। इतर धर्मीय लोगों द्वारा उन्हें भ्रामक प्रत्युत्तर देने के पीछे यह भावना रहती है कि यथार्थ बतला देने पर कश्मीर की धरती अग्निपुत्र कालीवीर के भीषण क्रोध से दहक उठेगी। यथार्थ सूचना मिलने पर सदियों तक चलने वाला उनका तप भंग हो जाएगा। ऐसी दशा में वे धरती से असुरों का विनाश कर देंगे। धरती रक्त से नहा उठेगी। तब वे अपने को कलियुग का एक मात्र वीर सिद्ध करेंगे।

यह दंत-कथा कालीवीर के दूर-दूर तक फैले देव स्थानों पर सदियों से सुनाई जा रही है। इस कथा से जो कुछेक

ऐतिहासिक संकेत प्राप्त होते हैं, उनसे इस निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है कि मध्ययुग में किसी समय जब कश्मीर में धर्म-स्थल तोड़े जा रहे थे— तब महाकाली के अनुयायी वीर योद्धाओं का दल उनकी सुरक्षा के लिए कश्मीर पहुँचा होगा। काली के नाम पर युद्ध के लिए आए योद्धा प्रमुख को कालीवीर कहा गया होगा। किंतु, कश्मीर के चालाक मंत्री ने उनसे शांति संधि करने के उपरांत अपने षड्यंत्र के अनुरूप रात को निद्रा की अवस्था में उन्हें कमरे में बंदी बना दिया होगा।

जम्मू में कालीवीर के अनुयायियों का यह भी मानना है कि कालीवीर की मान्यता कश्मीर के मुसलमानों का एक वर्ग आज भी करता है। और कालीवीर के उस स्थल पर आज भी नमाज़ पढ़ते समय नमाज़ी लोग अपने पीर द्वारा किए गए वादे को निभाते हुए, उस स्थल की पवित्रता का विशेष ध्यान रखते हैं। इसमें कालीवीर के प्रति भय एवं त्रास की भावना भी मिश्रित रहती है।

लोक-विश्वास प्रचलित है कि इस धर्म स्थल के गर्भ गृह में एक कुआं है। यदि कोई आंखें खोलकर कुएं या गर्भ गृह में झांके तो वह अंधा हो जाता है। मान्यता है कि इस कुएं में काली देवी नग्नावस्था में रहती है। मसजिद बन चुके इस स्थल के मुख्य द्वार से गुज़रते हुए स्थानीय हिंदू बाहर से आंखें मूंदकर आज भी अपनी इष्ट देवी का स्मरण कर लेते हैं।

कश्मीर में भी कालीवीर की मान्यता रही है, इसी धारणा को लेकर जम्मू में इस देवता के अनुयायी कहते हैं :-

"कालीवीर
हिंदुएं दा गुरु
मुसलमानें दा पीर।"

कालीवीर के कश्मीर में बंदी बनाए जाने को लेकर एक अन्य लोक- प्रवाद है कि कालीवीर जैसी दिव्य शक्ति को कैद करके रखना प्रायः असंभव ही था, इसलिए उनकी धारणा है कि कालीवीर छत फाड़कर तुरंत मुक्त हो गए थे।

दंत-कथाओं में एक ओर कालीवीर दसवीं-ग्यारहवीं शती के आक्रमणकारियों से लोहा लेते दिखाए गए हैं तो दूसरी ओर मध्ययुग में भी उनकी उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि वस्तुतः कालीवीर उस वीर-परंपरा का नाम है जो काली या महाकाली को अपनी आराध्या मानकर कालीपुत्र के रूप में भारतीय संस्कृति की सुरक्षा के लिए इस भूमि पर समुद्र की भीषण लहर की तरह उठी थी। जम्मू के धर्मप्राण जन-समुदाय ने काली के उपासक कालीवीरों की कथाओं को एक लड़ी में पिरो कर उस महान योद्धा को अमरकर दिया, जिसने इस धर्मयुद्ध के लिए सर्वप्रथम उद्‌घोष किया था।

करणीकार ईश्वर :-

एक दूसरे की शक्ति का परीक्षण करते हुए राजा मंडलीक ने कालीवीर से कहा-"आप मेरा शक्ति की परीक्षा कैसे करना चाहेंगे?"

कालीवीर ने कहा - "इस मरु-भूमि पर जल का अभाव है। आप यहाँ जल उत्पन्न करें।"

राजा मंडलीक ने अपनी सेना को आदेश दिया कि इस स्थान पर एक कुंआ खोदा जाए।

गहरा कुआं खोदा गया, किंतु जल नहीं निकला। तब राजा मंडलीक ने कालीवीर से कहा-"अब आप अपनी शक्ति दिखलाइए।"

कालीवीर ने अपने पांव के पास धरती में गड़े पत्थर को हटाया। पत्थर हटते ही जल की धारा फूट पड़ी।

राजा मंडलीक ने पूछा - "आप की इस अद्‌भुत शक्ति का रहस्य क्या है?"

कालीवीर बोले -"मैं दुष्टों का संहार करता हूं और ईश की अराधना भी करता हूं। ईश्वर जो मेरे द्वारा करवाना चाहते हैं, मैं वह करता हूँ। किंतु, आप अपनी शक्ति को मानते हैं, ईश्वर के विषय में आपको संशय रहता है। अपनी शक्ति के मद में आप निर्दोषों को भी कष्ट पहुंचाते हैं। आप जो करते है वह ईश्वर की इच्छा नहीं है।"

कालीवीर का उपदेश सुनकर राजा मंडलीक की ईश्वर में आस्था दृढ़ हो गई।

राजा नाहर सिंह और कालीवीर की संधिः-

एक बार नाहर सिंह के दरबार में उनके भूत-प्रेतादि सेनानियों ने अपने राजा से शिकायत की कि आपके अनुज कालीवीर हमें अपना कर्म करने से रोकते हैं। हम जहां भी

किसी मानव को पकड़ते हैं वे उसे बचाने के लिए आगे आ जाते हैं। इतना ही नहीं, वे आप के भूतादि सैनिकों की खूब पिटाई करते हैं। इस से हम बहुत भयभीत हैं और आपसे अपनी रक्षा करने की प्रार्थना करते हैं।

अपनी प्रजा के कष्ट की बात सुनकर राजा नाहरसिंह क्रोध में चले आए। फिर सोच-विचार कर बोले-"किंतु, कालीवीर कोई काम अकारण नहीं करते। उसमें अवश्य कोई भेद की बात होगी।"

भूत-प्रेत बोले - "प्रभु! भेद की कोई बात नहीं है। वे आपकी सेना को कमजोर करके स्वयं राजा बनना चाहते हैं।"

नाहर सिंह ने कालीवीर को अपने दरबार में तलब किया। तुरंत कालीवीर वहां उपस्थित हुए।

राजा नाहर सिंह ने पूछा - "प्रिय अनुज, क्या यह सत्य है कि तुम मेरे भूत-प्रेतों की पिटाई करते हो?"

कालीवीर बोले–"भइया! यह अर्ध सत्य है।"

नाहर सिंह ने पूछा–"अर्ध सत्य से आपका क्या तात्पर्य है?"

कालीवीर ने कहा–"मैं तमाम भूत-प्रेतादि योनि के प्राणियों को नहीं पीटता। केवल उन्हें कष्ट देता हूं जो मानव जाति को कष्ट देते हैं और उनका आहार और संहार करते हैं। जो प्रेतादि किसी को कुछ नहीं कहते, उन्हें मैं कुछ नहीं कहता।"

नाहर सिंह ने कहा–"भूत-प्रेत यदि अपना कर्म नहीं करेंगे- तो उनका जन्म अकारथ नहीं जाएगा?"

कालीवीर ने उत्तर दिया–"भूत-प्रेत के जीवन का उद्देश्य मानव जीवन को नारकीय यातना देना नहीं है। किसी को कष्ट देने का अधिकार इन्हें किसने दिया है। अपने विगत मानव जन्म में इन्होंने जो बुरे कर्म किए थे, उनका फल भोगने के लिए इन्हें क्षुद्र योनि प्राप्त हुई है। यहां रहते हुए, यदि यह पुनः अपना जन्म बिगाड़ते हैं तो कष्ट तो पाएंगे ही। और जिसे आप इनका कर्म बता रहे हैं, वह कर्म नहीं, दुष्कर्म कहलाता है।"

नाहर सिंह बोले - "किंतु, भूतों का कहना है यह भूत जाति (योनि) और मानव जाति का युद्ध है। युद्ध में शत्रु के प्राण हरने में कोई अनौचित्य नहीं होता। किंतु, हर बार तुम आगे आकर भूतों को पीट-पीट कर बुरा हाल बना देते हो।"

कालीवीर बोले - "भइया, यदि इन्हें मानव जाति को आहार बनाने की छूट दे दी जाए तो यह सारी मानव जाति का संहार कर देंगे। पृथ्वी पर मानव का नाम तक नहीं रहेगा। जगदीश्वर द्वारा निर्मित सृष्टि तबाह न हो, इसीलिए त्रि-देव ईश्वर ने मुझे यह दायित्व देकर पृथ्वी पर भेजा है। इसीलिए, जब यह किसी मानव या मानवी का भक्षण करना चाहते हैं और उसे तड़पाते हैं-तब मैं प्रकट होकर इन्हें दंडित करता हूँ।"

कालीवीर का तर्क सुनकर नाहर सिंह बोले - "यह सत्य है कि कालीवीर जी को परमपिता परमेश्वर का वरदान प्राप्त है। पृथ्वी पर अधर्म की तुला भारी न हो जाए

- इसी बात के लिए इनका जन्म हुआ है। और यह भी सत्य है कि पृथ्वी का सौंदर्य मनुष्य जाति से ही है। यदि यह जाति ही न रहेगी तो ब्रह्मा का सृष्टि रचना का उद्देश्य विफल हो जाएगा।''

कालीवीर ने कहा - ''भइया, ब्रह्मा की सृष्टि नियमों में बंधी हुई चल रही है। आपके यह भूत-प्रेतादि सैनिक उन नियमों की अनदखी न करें, ऐसा कोई प्रबंध आप करे।''

नाहर सिंह ने कहा–''आप मेरे मंत्री और भाई ही नहीं, गुरु भी हैं। इसलिए, आप जैसी आज्ञा देंगे वैसा ही होगा।''

कालीवीर ने कहा–''तो आप यह वायदा करें कि आज से यदि भूत-प्रेत आदि किसी मानव को पीड़ित करेंगे तो उस मानव की मृत्यु नहीं होगी।''

नाहर सिंह ने कहा–''हमारा आपसे वचन रहा कि आज से भूत-प्रेतों का सताया हुआ व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा। किंतु, आपको भी यह वादा करना होगा कि पीड़ित लोगों द्वारा आह्वान किए बिना, आप उनकी सहायता करने के लिए नहीं जाएंगे।''

कालीवीर हंसकर बोले–''भइया, मैं ते परमेश्वर के आदेश से बंधा हूँ। मुझे तो आर्त की पुकार सुनकर उसके पास जाना ही है, क्योंकि मुझे तो कहा गया है कि दुष्ट शक्तियों के दमन के लिए मुझे बिन-बुलाए दीन-दुखियों की सहायता कें लिए जाना है।''

नाहर सिंह बोले–"तो भी आपको हमारे साथ यह संधि करनी होगी कि आप भूत-प्रेतादि द्वारा पीड़ित व्यक्ति की सहायता के लिए, बिना आह्वान के नहीं जाएंगे।"

कालीवीर बोले–"आप ऐसा चाहते हैं तो ऐसा ही होगा। हां, असुरों के विरुद्ध मैं बिन-बुलाए ही जाया करूंगा।"

नाहर सिंह बोले-"असुरों के विरुद्ध युद्ध में मैं सदा आप के संग रहूंगा।"

दोनों वीर भाइयों में संधि के उपरांत भूत-प्रेतादि प्राणि नाहर सिंह के वायदे के पाबंद हो गए। पहले वे जिसे पीड़ित करते थे, वह बचता नहीं था।[1] किंतु, बाद में मनुष्य प्रेत-बाधा का इलाज होने पर बच जाने लगे। मानव जाति की सहायता में कमी न रहे और बड़े भइया नाहर सिंह से की हुई संधि भी भंग न हो– इस बात को ध्यान में रख कर श्री कालीवीर ने निश्चय किया वे अपने भक्तों के इतना निकट रहेंगे कि उनके एक गुहार लगाते ही वे उनके सहायी हो सकें। मानवता की सहायता के इस प्रयोजन से कालीवीर प्रत्येक जनपद में प्रकट होने लगे। हर गांव में उनका स्थान (मंडी) बन जाने से भूत-प्रेत आदि पीड़ितों को देवाश्रय प्राप्त हो गया। लोग इन स्थानों पर कालीवीर की गुहार लगाकर भले-चंगे होने लगे।

लोहे की गदा

प्रातःकाल की बात है।

कालीवीर राजा मंडलीक के निकट बैठकर किन्हीं

---

1. तत्पश्चात् "भूतें भन्ने दा बचदा नेईं ऐ – यह कहावत बदल गई।

आवश्यक विषयों पर मंत्रणा कर रहे थे। गुप्तचरों द्वारा लाई इस सूचना पर विचार हो रहा था कि विधर्मी असुर योद्धा साधु वेश में देश के भीतर घूम रहे हैं। अनके दल प्रायः पाँच-पाँच के दलों में बंटे रहते हैं। युद्ध-कौशल में निपुण यह हट्टे-कट्टे युवक होते हैं। प्रत्येक दल का मुखिया कोई अधेड़ व्यक्ति होता है। प्रकटतया वे अपने इष्ट का नाम ध्याते और धार्मिक कृत्य करते हैं। किंतु, उनका मूल प्रयोजन कुछ और ही होता है।

ब्यौरा सुनकर राजा मंडलीक एकाएक चौंक उठे। उन्होंने पूछा-"वह मूल प्रयोजन क्या है?"

कालीवीर बोले - "उनका प्रयोजन उन राज्यों की सैनिक क्षमताओं का आकलन करना होता है जिधर से वे गुज़रते हैं।"

मंडलीक - "इससे उन्हें क्या लाभ होगा?"

कालीवीर - "वास्तव में वे अपने आसुरी धर्म के प्रति पूर्णतया समर्पित असुर सैनिक हैं। उनका ध्येय इस देश में जड़ जमाने का है। यदि इस काम में सफल होना है तो देश को सैनिक दृष्टि से कमज़ोर बनाना आवश्यक है। विगत का अनुभव बतलाता है कि जिस-जिस क्षेत्र से यह बहुरूपी साधुओं के दल गुज़रे हैं, वहाँ पर एक ही वर्ष के अनंतर विदेशी आक्रमण अवश्य हुए हैं।"

मंडलीक - "अर्थात् उनका सम्बंध विदेशी आक्रमणकारियों से हो सकता है?"

कालीवीर - "जिस राज्य में इन्हें वहाँ की राज्य व्यवस्था कमज़ोर दिखाई पड़ती हैं या जहाँ आंतरिक कलह व्याप्त है अथवा जहाँ धन-धान्य तो प्रचुर मात्रा में है, किंतु, वहां की सैनिक व्यवस्था सुदृढ़ नहीं है–यह फ़कीर लोग इसकी सूचना अपने असुर देश में वहाँ के लुटेरों को भेजते हैं। तदुपरांत वहाँ से सैनिक लुटेरे पूरी तैयारी के साथ यहाँ आकर लूट-पाट मचाकर ध्वंस करते हैं।"

मंडलीक - "इसका यह अर्थ हुआ कि धर्म का लबादा ओढ़कर इन लोगों ने एक सुदृढ़ गुप्तचर व्यवस्था का जाल फैला दिया है।"

कालीवीर - "आपने सत्य कहा है। हमारे देश के धर्मपरायण लोग किसी साधु वेशधारी पर संदेह नहीं करते। हमारे लोगों की सहिष्णु प्रवृत्ति है। इसके कारण वे अन्य धर्म और विश्वास में दखल नहीं देते। इस प्रवृत्ति का यह भरपूर लाभ उठा रहे हैं। इसके कारण यह विदेशी लोग यहाँ सफल होते जा रहे हैं।"

मंडलीक - "सुनने में आया है कि यह लोग हमारे देशवासियों में अति लोकप्रिय होते जा रहे हैं।"

कालीवीर - "यह बात सच है महाराज। स्थानीय लोगों का आश्रय प्राप्त करने के लिए यह देश की जनता की कमज़ोरी और विशाल-हृदयता दोनों का भरपूर लाभ उठाते हैं। हमारे लोगों में जादू-टोने के प्रति अंधविश्वासों को आड़ बनाकर ये उनके जादू का खोट दूर करने का

नाटक करते हैं। इससे भोले-भोले लोग इनके चंगुल में फ़स जाते हैं। इन फ़्कीरों के दल स्थानीय दंगलों में उतरकर कुश्ती लड़ते हैं। मल्ल-विद्या का इन्हें विशेष ज्ञान है। इसलिए, नौसिखिया युवकों को प्रायः इनसे परास्त होना पड़ता है। इन्होंने स्थानीय लोगों में यह भ्रम फैला रखा है कि कुश्ती के आरंभ में ये आसुरी मंत्रों का पाठ करके विपक्षी पर प्रहार करते हैं, जिससे इनकी जीत होती हैं।''

मंडलीक - ''इसका यह अर्थ हुआ कि आमने-सामने के युद्ध में जीतने की संभावना न पाकर आसुरी शक्तियां देशवासियों में घुल-मिलकर असुरवाद फैलाना चाहती हैं।''

कालीवीर - ''जी महाराज ! हमारे देश के भोले लोग, इन्हें भोजन-पानी देते हैं। बटोही मानकर इन्हें रास्ता बतलाते हैं। इससे आने वाले समय में भारत पर असुरों का इतना प्रभाव होगा कि वे यहाँ के शासक तक बन जाएंगे।''

मंडलीक (हंसकर)– ''इनका शासक बन पाना तो दूर की कौड़ी मालूम पड़ता है, क्योंकि विदेशी लोगों का मुख्य ध्येय धन-धान्य को लूटना है।''

कालीवीर - ''किंतु, जब इनका प्रतिरोध करने वाला ही कोई न होगा, तब ये ही यहाँ का शासन चलाएंगे। हमारे देशवासी बदलती परिस्थितियों के प्रति विमुख हैं, जबकि असुर लोगों का धर्म राजनीतिक दृष्टि से प्रेरित है।''

मंडलीक - ''मैं चाहता हूँ किसी असुर मल्ल से अखाड़े में दो-दो हाथ किए जाएं।''

कालीवीर (हंसकर) - ''आपकी इच्छा स्वाभाविक है महाराज। परंतु, आपके राज्य में अनेकों मल्ल योद्धा हैं जो इन्हें पछाड़ने की क्षमता रखते हैं। इसलिए, उनके रहते आपको दो-दो हाथ करने की क्या आवश्यकता?''

मंडलीक - ''हम अपने मल्लों और इन विदेशी मल्लों में प्रतियोगिता देखना चाहेंगे।''

कालीवीर - ''आपकी इच्छा के अनुसार यथाशीघ्र इस प्रतियोगिता का आयोजन होगा महाराज।''

इस वार्ता के कुछ दिनों पश्चात् राज-दरबार में सूचना पहुँची कि पाँच फकीरों का एक दल राजधानी में आया हुआ है। वहाँ वैसाखी के मेले में उन्होंने तमाम पहलवानों को पछाड़ दिया है। जबकि राजकीय पहलवान चाड़क ने जब उनके मुख्य पहलवान को हरा दिया तो पाँचों फकीर मल्ल एक साथ उस पर टूट पड़े और उसकी गर्दन मरोड़ कर उसे मार डाला।

इससे नगर में हा-हाकार मचा हुआ था। लोग आतंक में डूब रहे थे।

ऐसी स्थिति में राजा मंडलीक ने कालीवीर से पूछा ''क्या उन पाँचों को पकड़कर दरबार में बुलाया जाए?''

कालीवीर - ''चाड़क की हत्या करने के पीछे उनका यही उद्देश्य है कि उन्हें राजा द्वारा तलब किया जाए ताकि

वे आपकी क्षमता, निर्णय-शक्ति, सैन्य-शक्ति और धन एवं वैभव का आकलन कर सकें।''

मंडलीक - ''किंतु, ऐसा तो वे और भी कई विधियों से कर सकते थे।''

कालीवीर - ''आपके राज्य के प्रमुख मल्ल को मार कर उन्होंने अपनी क्रूर शक्ति का संदेश आपको ही नहीं, आपके पूरे राज्य के निवासियों को दिया है।''

मंडलीक - ''अपनी क्रूर शक्ति का संदेश देकर वे क्या सिद्ध करना चाहते हैं?''

कालीवीर - ''आसुरी संस्कृति का ऐसा चलन है। अत्याचार, हत्या, खून-खराबा करके अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना। वास्तव में उनका आपके राजकीय मल्ल को मारना आपके लिए सीधी चुनौती है। आपके राज्य में जो लोग शांति अनुभव करते हैं, उन्हें आपकी शक्ति के प्रति आशंकित करना।''

मंडलीक - ''ओह ! मैं समझा। तो आप तुरंत उन्हें यहाँ बुला भेजिए। यदि आने में आना-कानी करें तो बलपूर्वक यहाँ ले आइए।'

कालीवीर - ''जैसी आपकी आज्ञा।''

सरकारी हरकारे को संदेश देकर भेजा गया। पाँच योद्धा फक्कीरों को राज-दरबार में उपस्थित होने की राजाज्ञा दी गई।

दोपहर बाद वे फक्कीर दरबार में उपस्थित हुए। उनका प्रमुख बोला - ''क्यों बादशाह सलामत, हम फक्कीरों से क्या काम बन गया जो हमें याद किया?''

मंडलीक - "हमनें फकीरों को नहीं उन पहलवानों को तलब किया है जिन्होंने हमारे प्रिय मल्ल चाइक की हत्या की है।"

फकीर का भेस धारण किए प्रमुख मल्ल बोला - "उसकी मौत इसी बहाने लिखी थी शायद।"

कालीवीर - "उसकी मौत का लिखा फरमान हम देखना चाहेंगे। उसे किसके हाथों ने लिखा है यह भी जानना चाहेंगे।"

प्रमुख फकीर - "जिसे वो फरमान देखने की चाहत हो उसे अखाड़े में उतरना होगा।"

मंडलीक - "क्या तुम पांचों अपना अपराध स्वीकार करते हो?"

प्रमुख फकीर - "हम तुम्हारे मुल्क के नहीं हैं। इसलिए, हमें तुम्हारा कोई कानून कबूल नहीं है। हमने अपने विरोधी को मार कर कोई अपराध नहीं किया।"

कालीवीर - "मत भूलो कि तुम जंग नहीं लड़ रहे थे, बल्कि आप कुश्ती का ख़ेल खेल रहे थे।"

प्रमुख फकीर - "हमने तो वो किया है जो हमारे धर्म और संस्कृति में जायज़ है।"

कालीवीर - "क्या तुम्हारा धर्म निरपराध की हत्या को जायज़ करार देता है?"

प्रमुख फकीर - अगर वो दूसरे धर्म से ताल्लुक रखता हो तो यह बड़े ही सवाब का काम है।

कालीवीर - "मत भूलो कि तुम हमारे देश में हो। अपराध तुमने हमारी धरती पर किया है, इसलिए, तुम्हारी धार्मिक मान्यता का क्षेत्र समाप्त हो चुका है।"

नाहर सिंह जो अब तक चुप थे, बोले - "ऐसे दुष्टों से वाद-विवाद की क्या आवश्यकता? इन्हें मेरे गणों के हवाले करो। वे इन्हें कच्चा चबा जाएंगे।"

प्रमुख फकीर ने आँखें तिरेरते हुए कहा - "तेरे में हिम्मत है तो अखाड़े में उतर कर देख ले। तेरा वही हश्र होगा जो राजा के पाले हुए पहलवान का हुआ है।"

नाहर सिंह दांत किटकिटाते हुए उठ खड़े हुए। फिर बोले - "वहाँ अखाड़े तक कौन जाए। तुम पाँचों का निवाला मैं इसी राज दरबार में बनाऊंगा। महाराज मुझे आज्ञा है।"

कालीवीर - "ठहरिए, वीरवर नाहर सिंह जी! यह पांच मिलकर भी आपकी बराबरी नहीं कर सकते। इसलिए, आप शांत रहिए और राज-दरबार की कारवाई देखिए।"

नाहर सिंह - "उफ, आपकी लंबी-चौड़ी कारवाइयां। इसमें क्या कोई संदेह है कि चाड़क को इन पाँचों ने निर्ममता से मारा है। आप कह रहे हैं, और यह मान रहे हैं और हजारों लोगों ने इस कांड को देखा है। इन्होंने अपनी कारवाई करदी, अब आप मुझे अपनी करने दें।"

मंडलीक - "आप धैर्य रखें नाहर सिंह जी।"

नाहर सिंह - "धीरज रखने से चाड़क के घरवालों को धीरज नहीं बंधेगा। उसकी आत्मा को तभी शांति मिलेगी

जब यह पाँचों यमलोक में उसके अपनी करनी के लिए क्षमा मांगेगे।"

कालीवीर - "नाहर सिंह जी ! यह निश्चित है कि चाड़क की हत्या का न्याय होकर रहेगा। आप तनिक शांत रहिए।"

असुर फकीर बोला - "आपके पास ऐसा कौन है जो हमारा सामना कर सके?"

राजा मंडलीक एकाएक तमक उठे - "इन्हें अपनी वीरता पर इतना गुमान है। मैं खाली हाथों इन्हें यम के सुपुर्द कर दूंगा।"

कालीवीर - "महाराज, आप राज-सिंहासन पर विराज रहे हैं। यह न्याय का आसन है। इस पर बैठ कर अपना धैर्य गंवाना पद की गरिमा के अनुरूप नहीं है। आपको तो देखना है यदि शत्रु पक्ष आपके समक्ष स्वयं को सही सिद्ध करता है तो उसे न्याय मिले।"

मंडलीक - "आप ठीक कहते हैं। इस पद पर निजी भावनाओं को महत्व देना उचित नहीं है।"

कालीवीर - "महाराज ! यह असुर योद्धा जिन्होंने फकीर का भेस धारण कर रखा है, बार-बार हमारी वीरता को ललकार रहे हैं। इसलिए, यह उचित होगा कि इनकी मांग को ध्यान में रखकर कल एक वृहद् दंगल रखा जाए। सारे नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया जाए कि चाड़क मल्ल की हत्या के जिम्मेदार पाँच पहलवानों से अकेले कालीवीर भिड़ेंगे।"

मंडलीक - "आप अकेले इन पाँचों का सामना करेंगे?"

कालीवीर - (हंसकर) - मेरे विचार में आप और भइया नाहर सिंह इन पाँचों पर भारी पड़ते हैं। मुझे वैसे ही दंगल में उतरे हुए अरसा हो गया है। इसलिए, खुद को भी आज़मा लिया जाएगा, कहीं अंगों में ज़ंग तो नहीं लग गई।"

राजा मंडलीक मुस्कुराते हुए बोले - "आप की लीला आप जाने, कालीवीर जी।"

प्रमुख फ्कीर बोला - "यह अकेला हमारे साथ कुश्ती क्या लड़ेगा? इसके साथ पाँच और लगा दो।"

मंडलीक - "हमारी ओर से एक कालीवीर ही आप से दांव लड़ाएंगे। मल्ल-विद्या के करतब दिखाने वालों के लिए उचित इनाम भी रहेगा। वहाँ पाँच सोने की और एक लोहे की गदा रहेगी। यदि आप जीत जाते हैं तो सोने की पांचों गदाएं आपको मिलेंगी। यदि कालीवीर जी जीते तो लोहे की एक गदा इन्हें ही जाएगी।"

फ्कीर पहलवानों की जान में जान आई। खुशी से उनकी बांछें खिल उठी।

केलूवीर ने प्रश्न किया - "महाराज ! आपके दरबार में यह भेद क्यों? शत्रु के जीतने पर उसे पाँच स्वर्ण गदाएं और कालीवीर जी के जीतने पर इन्हें मात्र लोहे की एक गदा। बात समझ में नहीं आई।"

मंडलीक-"कालीवीर जी की प्रिय धातु लोहा है, इतना तो मैं भी जानता हूँ। यदि आप इससे अधिक जानना

चाहते हैं तो इनसे अलग से पूछ लें। यदि ये विदेशी जीतकर सोने की गदाएं अपने देश में ले जाते हैं तो वहाँ हमारे देश का सिर उंचा होगा कि हम विदेशी मल्लों का भी उचित सम्मान करना जानते हैं।''

केलूवीर - ''यह तो ठीक है। किंतु, कालीवीर जी रहस्यों से ओत-प्रोत हैं। इनकी क्षमताओं का बखान यह स्वयं करते नहीं और अपनी उपलब्धियों पर भी ओठों को सिले रखते हैं।''

मंडलीक - ''आप जतन करते रहिए केलू कोतवाल जी इनके रहस्यों से पर्दा उठाने का। मगर आज से कल दंगल होने तक हमें भी आपकी क्षमता परखनी है। यह पाँचों हत्यारे आपकी सुपुर्दगी में रहेंगे ताकि रात में कहीं भाग न जाएं। कल इन्होंने कुश्ती लड़नी है, इसलिए इन्हें अच्छा खिलाएं-पिलाएं...।''

केलूवीर - ''जो आज्ञा सरकार।''

अगले दिन प्रातः समस्त नगर में डोंडी फेरी गई कि आज मध्याह्न से पूर्व नगर के मेदान में एक विचित्र दंगल होगा। इसमें राज्य के प्रमुख मल्ल चाड़क के हत्यारे पांच पहलवानों से अकेले कालीवीर कुश्ती लड़ेंगे। इसी दंगल में चाड़क की हत्या के मामले का निर्णय भी होगा। यदि वे जीत गए तो उन्हें मुक्ति और स्वर्ण गदाएं मिलेंगी। यदि कालीवीर जीत गए तो महाराजा मंडलीक इन पाँचों को उचित दंड देंगे।

केलूवीर ने पूछा - "कालीवीर भइया! यह जानते हुए भी कि इन पाँचों ने नियमों का उल्लंघन करते हुए चाइक का वध करने का घोर अपराध किया है इन्हें तत्काल सज़ा दिलाने के बजाय इस प्रकार के टेढ़े निर्णय की क्या आवश्यकता?"

कालीवीर - "आपकी बात में, तथ्य है। यदि इन्हें चुपके से मरवा दिया जाए तो न्याय का क्षेत्र संकुचित हो जाता है। इनको इन्हीं की कपट-लीला द्वारा परास्त करके, वृहद जन समूह के समक्ष दंडित करने से न्याय की ध्वजा ऊंची रहेगी। वर्तमान प्रशासन लोगों के प्राणों और संपत्ति की रक्षा करने में पूर्णतया सक्षम है, यह संदेश दूर-दूर तक जाएगा।"

केलूवीर - "आप धन्य हैं, प्रभु।"

नियत समय पर सहस्रों लोग मैदान में एकत्र हो गए। अखाड़े के किनारों पर ढोल-वादक ढोल बजा रहे थे। दूसरी ओर जहाँ बाँस गाड़ कर झंडा लहराया गया था - एक ओर विधिवत् पाँच स्वर्ण गदाएं और एक लौह गदा रखी गई थी। इसी स्थान के निकट राजा मंडलीक का दरबार सजाया गया था जहाँ केलूवीर, नाहर सिंह, अग्निवेताल सहित बावन वीर तथा सभासद बैठे हुए थे। राजा का राजसी वैभव देखते ही बनता था। अखाड़े के एक ओर बैठे पाँचों पहलवान परस्पर मंत्रणा कर रहे थे।

इसी समय कालीवीर उठे और दरबार से अखाड़े की ओर चल पड़े। अपनी पगड़ी, वस्त्र तथा जूते उतार कर मुग्हाल्र वीर को पकड़ाए। तब लोहे की भारी गदा उठाकर

इसे वायु में घुमाकर व्यायाम करने लगे। तब नगर के अखाड़ों के नियंत्रक ने उनके निकट आकर पूछा - "हे महावीर, इस अद्भुत दंगल के निमित आप किस निर्णायक के नाम का प्रस्ताव करते हैं?"

कालीवीर - "मेरी अपनी कोई विशेष पसंद नहीं है। जो इन पाँचों को स्वीकार्य हो वह मुझे भी मान्य होगा।"

तब अखाड़ा प्रमुख ने फकीर वेषधारी उन पाँच पहलवानों से पूछा - "आपको निर्णयक के तौर पर किसी के नाम का प्रस्ताव देना है तो बतलाएं.... ।"

उनके मुखिया ने राजा के दरबार के इस ओर बैठे एक हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति की ओर संकेत करते हुए कहा - "हम उस जवान का नाम निर्णायक के तौर पर पेश करते हैं।"

अखाड़ा प्रमुख - "उनका नाम अग्निवेताल है। वे मल्ल-युद्ध के ज्ञाता भी है।... आप पाँचों तैयार रहिए। अभी दंगल शुरु होगा।"

कालीवीर ने गदा को छड़ी की भांति हवा में घुमाया। फिर उसे काँधे पर रखकर प्रतिद्वंदी पहलवानों की ओर देखा। कालीवीर का शरीर रक्त चंदन की भांति दमक रहा था। वे साक्षात् हनुमान का प्रतिरूप दिखाई पड़ रहे थे।

असुर पहलवानों को अपने पाँच होने का अभिमान था। इसी के वशीभूत वे चिंघाड़ते हुए कालीवीर की ओर बढ़ने लगे। कालीवीर ने गदा को एक ओर रखा और जोर से हंस पड़े। अट्टहास की ध्वनि ऐसी थी जैसे आकाश में मेघ गर्जना कर रहे हों।

पलक झपकते कालीवीर अखाड़े में आकर यों डट गए मानो चट्टान खड़ी हो। उनका प्रखर आक्रमण पाँचों असुरों को चौंकाने वाला था। कभी वे सामने दिखाई पड़ते तो अगले पल में उन्हें पीछे से पटकनियां देने लगते। उन्हें पकड़ने और नीचे गिराने की होड़ में वे पाँचों एक दूसरे को धराशायी कर रहे थे। कुछ ही देर में उन्हें दिन में तारे नजर आने लगे। खीझ कर उन्होंने जैसे ही उन पर तीव्र आक्रमण किया, कालीवीर ने दो पहलवानों को अपनी भुजाओं में कसकर ज़ोर से उन दोनों के सिर परस्पर टकराए। अगले ही पल उन दोनों को अन्य दो पहलवानों पर पटक दिया। वे चारों ढेर होकर अखाड़े में गिर गए। असुर प्रमुख आतंकित होकर भागने लगा तो कालीवीर ने तेज़ी से आगे आकर उसको गले से दबोच कर, टंगड़ी लगाकर धराशायी कर डाला। तब उसके वक्ष पर पाँव रख कर खड़े हो गए।

कालीवीर की कुश्ती कला पर मोहित होकर जन समूह जोश में आकर हर्ष ध्वनि करने लगा। ढोल के ताल पर युवक नाच उठे। दो दाँवों में ही प्रतिद्वंद्वी को ढेर करने की कला पर मल्ल-विद्या के बड़े-बड़े विशारद झूम उठे। तब कालीवीर ने कांधे पर गदा धारण करके अखाड़े का एक चक्कर लगाया। जन समूह जय-जयकार के नारे बुलाने लगा - "श्री कालीवीर की जय हो।"

राजा मंडलीक का संकेत पाकर उन पाँचों असुर पहलवानों को उनके समक्ष प्रस्तुत किया गया।

मंडलीक-"तुम लोग अपनी मुक्ति नहीं जीत सके। आप लोगों ने मिलकर हमारे राज-मल्ल चाइक का वध किया है। कुश्ती की आड़ में एक घृणित कार्य किया है। अपने किए का दंड आपको भुगतना ही होगा। क्या इस विषय में तुम्हें कुछ कहना है?"

असुर प्रमुख - "हमारी जान बख्श दी जाए। हम मुआफी के तलबगार हैं।"

मंडलीक - "हत्या के बदले क्षमा विश्व के किसी सभ्य समाज में प्रचलित नहीं है। आप जैसे क्रूर दानवों से कैसा सलूक किया जाए — इसका निर्णय यहाँ एकत्र जन समुदाय करेगा।"

कालीवीर - "महाराज, आपका निर्णय सराहने योग्य है क्योंकि आप राजा होकर भी किसी बे-कसूर के हत्यारों को क्षमा नहीं कर सकते। उसका अधिकार जन–समुदाय के पास है।"

तब राजा मंडलीक का संकेत पाकर केलूवीर उठकर खड़े हुए। उन्होंने जन-समुदाय से पूछा-"नगर जनो। इन ढोंगी फकीरों ने धोखे से हमारे राज-मल्ल को मारा था। आप इनके लिए क्या दंड प्रस्तावित करते हैं?"

एक नागरिक-"इनकी धृष्टता और दुष्टता के लिए इन्हें सख्त से सख्त सजा दी जाए। इन्हें पेड़ से लटका कर मृत्युदंड दिया जाए।"

दूसरा नागरिक-"चाइक के पुत्र को यह अधिकार दिया जाए कि अपने खड्ग से इनके सिर धड़ से अलग कर दे।"

तभी कालीवीर बोले - "मेरा सुझाव है कि इन पाँचों को महावीर नाहर सिंह के सुपुर्द किया जाए।"

इस बात पर तमाम समुदाय सहमत होकर चिल्ला उठा—"हां - हां, इन्हें नाहरसिंह के सुपुर्द किया जाए .....।"

मंडलीक - "हम आपके इस निर्णय की पुष्टि करते हैं।"

महावीर नाहर सिंह जो कि देर से दाँत पीस रहे थे, उठकर खड़े हुए। वे उन पाँचों असुरों को एक ही धक्के से दुबारा अखाड़े में ले आए। असुर पहलवान अभी सोच ही रहे थे कि उनके संग क्या होने जा रहा है, तभी नाहर सिंह ने अपने बलशाली हाथों से दो असुरों के सिर उनके धड़ों से उखाड़ कर अलग कर डाले। उनके धड़ों से बहने वाले रक्त की धाराओं को मुख लगाकर पीने लगे। उनके अंग वस्त्र रक्त से भीग उठे। यह दृश्य देख कर जीवित बचे तीनों असुर पहलवान अखाड़े से बाहर भागने लगे।

नाहर सिंह ने हवा के झोंके की भाँति दुबारा दो और असुरों को दबोच लिया और उनके धड़ों से सिर अलग करके उनका रक्तपान करने लगे। पाँचवां असुर काँपते हुए हाथ बाँध कर खड़ा हो गया। उसकी घिग्घी बंध गई। उसके कंठ से शब्द नहीं निकल पा रहे थे। वह कंधे झुकाकर हाथ जोड़कर खड़ा काँप रहा था।

नाहर सिंह - "तू उन चारों का सरदार है। तू तो बुराई की जड़ है। मैं अपराधी शत्रुओं को क्षमादान देने जैसा पाप

नहीं किया करता। तुझे हर हालत में मरना ही है— इतना तू जान ले। किंतु, तुझे मारने से पहले मैं तुझे एक अवसर देता हूँ। ले तू मुझ पर आक्रमण कर। मेरा जो कुछ बिगाड़ना है बिगाड़ ले।''

इतना सुनकर असुर प्रमुख ने भयंकर निनाद किया। फिर पास पड़ी कटारी उठाकर पूरी शक्ति से नाहर सिंह पर आघात कर दिया। इस बात पर खुश होकर नाहर सिंह बोले - ''शाबाश, तूने हाथ जोड़कर जो आर्य मर्यादा की बाधा मेरे समक्ष खड़ी कर दी थी यदि उसे भंग करके मैं तेरा सिर काट देता तो पाप का भागी होता। अब तूने वीरोचित ढंग से मुझ पर आक्रमण किया है तो तुझे वीरगति प्रदान करने में मेरे हाथ बंधे नहीं रहेंगे।''

इतना कहकर नाहर सिंह ने अपने बलशाली हाथों से असुर की कटारी वाली भुजा को पकड़ा और उसे ज़ोरदार झटके से उखाड़ दिया। असुर पहलवान की पीड़ाजनित चीख से गगन गूंज उठा। तब उसी की कटारी से उसका सिर काटकर नाहरसिंह ने उसके रक्त को हथेलियों पर लेकर अपना मुंह धोया। फिर सिंह की भांति दहाड़ने लगे।

तब केलूवीर ज़ोर से बोल उठे - ''महावीर नाहर सिंह की?''

जन–समुदाय - ''जय।''
केलूवीर ''कालीवीर की?''
जन–समुदाय - ''जय।''

—देवता श्री कालीवीर

केलूवीर - "राजा मंडलीक की?"

जन–समुदाय - "जय।"

तत्पश्चात् राजा मंडलीक ने सर्व प्रथम कालीवीर को लोहे की गदा भेंट की। फिर क्रमशः नाहर सिंह, केलूवीर, अग्निवेताल, अखाड़ा प्रमुख और मृत राज मल्ल के पुत्र को सोने की एक-एक गदा प्रदान की गई।

बूढ़ी माता का राजा मंडलीक और बावन वीरों को आशीर्वाद

राज दरबार सजा हुआ था। बावन वीर योद्धा तथा तमाम सभासद और नगर के प्रतिष्ठित लोग श्वेत महल के दरबार में उपस्थित थे।

कार्रवाई का आरंभ करते हुए केलूवीर बोले - "मंडल के अधीश्वर महाराजा गोगा वीर की जय हो! हे महाराज, गज़नी विजय और कालाबाग ध्वंस के उपरांत बुलाए गए इस विशेष दरबार के लिए तमाम रण-बाँकुरे और सम्मान्य नागरिक आ चुके हैं। आप तमाम लोगों को अपने विचारों से अवगत कराएं।"

राजा मंडलीक ने कालीवीर की ओर देखा तो वे बोले "महाराज, युद्ध अभियान से लौटने के बाद दुद्द-नेरा में कई दिन उत्सव मनाए जाते रहे हैं! आपने वीरों को सम्मान और गरीबों और भिक्षुओं को दान देकर मर्यादा का पालन किया है। अब आवश्यक है कि आप प्रजाजनों को संबोधित करके उन्हें कर्तव्य का बोध कराएं।"

राजा मंडलीक बोले - "कालीवीर जी, आप जैसे सुयोग्य मंत्री और मित्र को पाकर मैं धन्य हुआ। मंत्री यदि अपने कार्य से चूक करे तो राजा हठी और उद्दंड हो जाता है। मर्यादा का उल्लंघन करके वह प्रजा-पीड़क बन जाता है। यदि मंत्री आपके समान और आपके छोटे भाई केलूवीर के समान निर्भीक और प्रतिभावान हो तो राजा राजहठ, प्रतिहिंसा, प्रतिकार, आत्म-विलास जैसे विकारों से बना रहता है।"

कालीवीर - "राजन्! जो हमने किया है वह धर्म का पालन है।"

मंडलीक - "अपने धर्म के पालन द्वारा आपने हमें राज-धर्म के अनुपालन के लिए सदैव प्रेरित किया है। हमें स्मरण है जब हम विदेशी आक्रमणकारियों की लूट-पाट पर प्रतिघात करने से कतरा रहे थे, आपने किस चतुराई से हमें गज़नी पर प्रत्याक्रमण करने के लिए प्रेरित किया। बूढ़ी ब्राह्मणी को आगे रखकर आपने स्थिति को ऐसा मोड़ दे डाला जिससे हमारा बच कर निकल पाना कतई संभव न था।"

कालीवीर - "राजन्, राजा का का धर्म है कि वह सीधे समस्या का समाधान करे, उससे बचे नहीं। यदि एक बूढ़ी ब्राह्मणी को सोने की गाय देकर यह आशंका न रहती कि बर्बर विदेशी पुनः हम पर आक्रमण नहीं करेंगे तो युद्ध की राह पर जाने का परामर्श मैं न देता। किंतु, उन ज़ालिमों के लिए यह प्रतिदिन का शुगल हो गया है। लुटेरों के दल प्रायः

हमारे देश पर लूट-खसूट के लिए आक्रमण करते रहते हैं। हमारे लोग अपने काम-धाम में इतने व्यस्त रहते हैं कि अपनी सुरक्षा के प्रति गाफ़िल बन जाते हैं। उधर उन लुटेरों के अत्याचारों का अंत होता दिखाई नहीं देता। इसलिए उन्हें शांति का पाठ खड्ग की भाषा में पढ़ाना ही उचित है। जिस राजा के राज में निरीह जनता को भयंकर असुरों, दस्युओं या हिंस्र पशुओं के कारण प्राण गंवाने पड़ें उस राजा को सिंहासन पर रहने का अधिकार नहीं रहता।''

मंडलीक - ''हमारे राज-धर्म की ध्वजा को फहराए रखने के लिए आपने जो अनन्य सहयोग दिया है उसके लिए मैं सदा आपका ऋणी रहूंगा। आपने हमारे प्रत्येक पग पर गुरु की भाँति मार्गदर्शन किया है। इसलिए हमारा आदेश है कि भविष्य में जब कभी लोग मुझे स्मरण करेंगे वे मेरे संग आपका और नाहर सिंह जी का नाम भी स्मरण रखेंगे। आपका नाम लिए बिना जो हमारी स्तुति करेगा उसकी आराधना पूरी नहीं होगी। जहाँ कहीं हमारा स्थान बनेगा वहाँ आपकी निशानियां या मूर्ति आदि अवश्यमेव स्थापित होगी। हमारे लिए जब भी ढोल बजेगा— हमारे अनुयाई आपका नाम भी पूर्ण निष्ठा से लेंगे।''

कालीवीर - ''हे महाराज, हम और आप अलग कहाँ हैं। कलियुग की कालिमा को धोने के लिए ही हम आपके संग कार्य कर रहे हैं। हमारा ध्येय पृथ्वी पर से असुरों की शक्ति का क्षय करना है।''

मंडलीक - "आपने सत्य कहा कालीवीर जी ! किंतु ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कलियुग में असुर मर-मर भी संख्या में बढ़ते रहेंगे। मात्र शक्ति से उन्हें मिटाया नहीं जा सकता।"

कालीवीर - "यह बात पूर्णतया सत्य है, राजन्। कलियुग वास्तव में असुर युग है। इस युग में धरती को असुरों से पूर्णतया निर्मूल करना संभव नहीं है। किंतु, एक उपाय है जिस से असुरों का दलन संभव है। असुरों की सब से बड़ी शक्ति अज्ञान रूपी अंधकार है जिसमें वे गर्व से जी रहे हैं। यदि किसी भाँति वे ज्ञान या विज्ञान के प्रकाश का दर्शन कर सकें तो संभव है उनके भीतर आत्मशोधन के संस्कारों की ज्योति प्रज्वलित हो। किंतु, असुर जाति के समक्ष काम, विषय-वासना, भोग आदि की जो अनेक लालसाएं बिखेर दी गई हैं वे उन्हें समय के सूर्य के समक्ष आने से रोक देती है। हानि होने पर भी असुर समझते नहीं हैं, क्योंकि उनमें स्वयं सोचने की प्रवृत्ति नहीं है। उनकी अन्तश्चेतना मृतप्राय हो चुकी है। गुरु शुक्राचार्य ने उनमें अधर्म को ही धर्म के रूप में प्रचारित कर रखा है।

मंडलीक-"यह बड़ी विचित्र बात है कि ऋषि परंपरा में बुद्धि के मार्तंड गुरु शुक्राचार्य असुरों द्वारा बुरे से बुरा काम करने पर उन्हें दुत्कारने-फटकारने के बजाये उनका प्रोत्साहन करते हैं—उनका दिल बढ़ाते हैं।"

कालीवीर - "राजन्, जो काम धर्म की मर्यादा का पालन करते हुए किया जाए वह कर्म कहलाता है। किंतु, जिस काम

में अधर्म की प्रेरणा निहित रहती है, उसे "कांड" कहा जाता है। धर्मालु लोग "कर्म" के पथ पर चल रहे हैं और असुर लोग "कांड" के पथ-पर। वे प्रतिदिन एक न एक कांड अवश्य करते हैं। गुरु शुक्राचार्य असुर-संस्कृति के पोषक हैं। देव-संस्कृति के प्रति उनमें विद्वेष है। अपने अनुयायियों के प्रति वे कृपालु हैं। उनके प्रत्येक कांड पर उनकी भर्त्सना करने के बजाए उनकी पीठ ठोंकते हैं। असुर अनुयायियों के प्रति उनका पुत्रवत् अनुराग ही उनके आचरण के लिए उत्तरदायी है।"

मंडलीक - "मंत्रीवर, इस बात में क्या रहस्य है कि असुर सदा विपरीत आचरण का अनुगमन करते हैं?"

कालीवीर - 'दैव की लीला अपरम्पार है। यदि सभी लोग धर्म का पान करते हुए मोक्ष पाकर स्वर्ग-लोक में पहुँचने लगेंगे तब यह पृथ्वी तो निविड़ उजाड़ हो जाएगी। संभवतया इसी बात को ध्यान में रखकर ही विधाता ने असुरों के लिए विपरीत आचरण निर्धारित किया है - ताकि "सुर" और "असुर" संस्कृतियां परस्पर टकराती रहें। विनाश और निर्माण दोनों एक साथ चलें– यही दैव की इच्छा है।"

मंडलीक - "इसका तात्पर्य यह हुआ कि असुरों को निरंतर कांड करते रहना है और सुरों (देवताओं) के कर्म के द्वारा उनका प्रतिकार करते रहना है। असुर जाति गुरु शुक्राचार्य के प्रभाववश पृथ्वी को ही नर्क बनाने के लिए प्रयासरत है, जबकि गुरु बृहस्पति के नेतृत्व में देव-जाति इसे स्वर्ग-तुल्य बनाने की जिद पकड़े हुए है।"

कालीवीर - ''आपने सत्य कहा, राजन्। हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत, अपने रीति-रिवाजों, अपने पूजा-स्थलों की रक्षा भी करनी है और धर्म-ध्वजा को भी फहराए रखना है। हमारे देश पर जो आक्रमण आए दिन हो रहे हैं– वे हमारी आस्था का खंडन करने के लिए किए जा रहे हैं। वह विदेशी लुटेरे अपने आचरण, व्यवहार, संस्कृति आदि की दृष्टि से असुर ही हैं। हमें इनसे अपनी गौरवमयी संस्कृति की रक्षा करनी है।''

मंडलीक-'' हमारे इस निश्चय पर किसी को शक नहीं रहना चाहिए कि हम अपने देश और दाय की रक्षा अपने रक्त का मूल्य चुका कर करेंगे।''

केलूवीर ने कहा - ''हमारा रक्त आपके संग बहेगा महाराज।''

नाहर सिंह - ''आपके वचनों पर आँच न आए, इसके लिए हम व्रत लेते हैं कि असुरों के प्रत्येक आघात पर प्रत्याघात करेंगे। आप तमाम वीर मेरे संग बोलें - मंडल के धनी महावीर राजा मंडलीक गोगा वीर की जय ......।''

दरबार में उपस्थित तमाम प्रजा जन बोल उठे - ''जय ! जय !! जय!!!''

मंडलीक - ''समस्त वीरों की।''

तमाम लोग - ''जय! जय !! जय !!!''

इसी समय बुढ़िया ब्राह्मणी दरबार में उपस्थित हुयी। उसे देखते ही कालीवीर अपनी आसंधि से उठ खड़े

हुए। कालीवीर के उठते ही अन्य तमाम वीर और प्रजा–जन बुढ़िया के सम्मान में खड़े हो गए।

कालीवीर - "हे महामाई! आपका स्वागत है?"

बुढ़िया - "हे वीर शिरोमणि, राजा के दरबार में बहुत जयनाद गूंज रही है– इसी के देखने वास्ते मैं अपनी लाठी टेकते हुए अपनी कुटिया से चलकर यहाँ आई हूँ।"

मंडलीक - "माता आपने बहुत अच्छा किया कि आप चली आईं।"

कालीवीर - "राजा मंडलीक, मुगलों द्वारा बंदी बनाई गई सहस्रों गाएं मुक्त करा कर ले आए हैं।"

बुढ़िया - "हां-हां बेटा ! आती बेर मैं अपने कपिला को पहचान कर आई हूँ। मुझे देखते ही वह जोर-ज़ोर से रंभाने लगी बेचारी। आप आज्ञा देंगे तो मैं राजसी गो-शाला से उसे अपने घर ले जाऊंगी।"

कालीवीर - "आपकी कपिला के लिए इतना बड़ा युद्ध लड़ा गया। क्या आप अपनी गाए ले जाने से पहले राजा मंडलीक को आशीर्वाद न देंगी जिनके शौर्य से यह काम संभव हुआ।"

बुढ़िया - "ईश्वर राजा मंडलीक को लंबी आयु दे। इसकी जननी क्षत्राणी माता बाशला को बधाई जिस ने ऐसा प्रतापी पुत्र ज़ना। भगवान् हमारे राजा की भुजाओं में बल दे, हृदय में शक्ति दे जिससे दुष्ट लुटेरों का भय न रहे।"

राजा मंडलीक ने हाथ जोड़कर और शीश झुका कर आशीष स्वीकार की।

तब कालीवीर पुनः बोले - "हे माता! क्या आप इन राजा नाहर सिंह को आशीष न देंगी?"

बुढ़िया - "बेटा आशीष देने वाले को किसका आशीष चाहिए। यह तो कलियुग में भगवान् नृसिंह का अवतार बनकर आया है। सहस्त्रों नर-नारी जो काला-बाग से इसके प्रताप से छूट कर आए हैं—इसकी महिमा के गीत गाए जा रहे हैं।"

तब बुढ़िया बोली - "हे कालीवीर जी और दूसरे तमाम वीरो। आप सब आपस में एक मुठ होकर रहिए और हमारे राजा मंडलीक की शक्ति को बढ़ाइए— इसी में देश का भला है। देश की स्वतंत्रता के लिए तुम सब के खड्ग दुष्ट असुरों का रक्त पीते रहें।

केलूवीर ने जयकारा बुलाया - "माता वरदायिनी की ......?"

तमाम वीर, प्रजा जन राजा मंडलीक सहित बोल उठे- "जय! जय!! जय !!!"

ओम गोस्वामी द्वारा रचित
अन्य लोक—धार्मिक साहित्य

(i)	कुलदेवता श्री कालीवीर	हिंदी
(ii)	श्री कालीवीर कथा	उर्दू (हिस्सा अव्वल)
(iii)	श्री कालीवीर	उर्द (हिस्सा दोयम)
(iv)	श्री कालीवीर कथा तथा उपदेश	हिंदी
(v)	श्री कालीवीर उपासना	हिंदी
(vi)	श्री कालीवीर आराधना	हिंदी
(vii)	सिर झुकता है कालीवीर के दर में	हिंदी (अप्रकाशित)
(viii)	राजा कालीवीर—कथा और साहित्य	हिंदी
(ix)	जाहरवीर गोगा राजा मंडलीक	हिंदी
(x)	जय राजा भैड़देव, जय बावा सुरगल	हिंदी
(xi)	जाग गोरिया गोरख आया सिद्ध गोरिया की अमर कथा	हिंदी
(xii)	बिरपानाथ – कथा और इतिहास	हिंदी
(xiii)	नागराज वासुकि	हिंदी
(xiv)	देवी महाकाली बाहवे वाली	हिंदी
(xv)	त्रिकुटा पर्वत की महारानी वैष्णो देवी	हिंदी
(xvi)	जय सुकराला	

ऊपर लिखित पुस्तकों के लिए हमें सेवा का मौका दें—

हमारे यहाँ पूजा—पाठ, कर्मकांड, ज्योतिष, वेद, पुराण, गीता, रामायण, उपनिषद् टीकाएं तथा सब प्रकार की धार्मिक (हिंदी—उर्दू) पुस्तकें वाजिब दामों पर उपलब्ध हैं।

श्री कालीवीर जी महाराज